# श्री गुरु महिमा सार

संकलन कर्ता व रचयिता–
ब्रिगेडियर लक्षमनसिंह कुलहरी (सेवानिवृत)

जय श्री नाथजीमहाराज

ऊँ

# शिव–गोरक्ष

।।ऊँ श्री सद्गुरवे नमः।।

श्री नाथं परमानन्दं गुणातीतं जगतगुरुम्।
शुद्धं शान्तं स्वप्रकाशं वन्दे विश्वेश्वरं विभूम्।।

ऊँ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरु भावः परं तीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम्
सर्वतीर्थाश्रयं पादांगुष्ठं नमः तं सद्गुरुम्।।

ऊँ शान्ति! प्रेम !! आनन्द!!!

अनुक्रमणिका


1. प्राक्कथन
2. प्रस्तावना
3. श्री गुरुमहिम्न स्तोत्रम्
4. गुरु तत्व
5. श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम
6. मुक्ति का रहस्य
7. सेवक भक्तों के कुछ संस्मरण
8. पालनीय नियम
   (क) अध्यात्म प्रेमी सेवक–भक्तों के लिए
   (ख) साधुओं के लिए
9. आश्रम का परिचय व नियम
10. सुबह शाम धूप, दीप, आरती व प्रार्थनाः–
    (क) आरती के बाद बोले जाने वाले मंत्र,श्लोक व जय–जय कार
    (ख) सुबह की प्रार्थना कार्यक्रम–
    - (i) श्री गोरक्ष चालीसा
    - (ii) श्री अमृत–प्रार्थनाष्टक
    - (iii) श्री श्रद्धा चालीसा
    - (iv) श्री गुरु वंदना
    - (v) अमर–धुन
    - (vi) शिव–गोरक्ष धुन
    - (vii) श्री श्रद्धा स्तोत्रम.
    - (viii) ऊँ अलख निरंजन स्तुति
    - (ix) ऊँ नमः शिवाय जप
    - (x) सर्व मंगल प्रार्थना
    - (xi) शान्ति पाठ

(ग) शाम की प्रार्थना कार्यक्रम–

(i) श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी की प्रार्थना

(ii) श्री सत्गुरु देव की प्रार्थना

(iii) ध्यान एवं जप

(iv) गुरु महिमा

(v) श्री गुरु शरणम

(vi) सत्गुरु धुन

(vii) ऊँ शिव धुन

(viii) श्री अमृत चालीसा

(ix) ऊँ अलख निरंजन स्तुति

(x) ऊँ नमः शिवाय जप

(xi) सर्वमंगल प्रार्थना व शान्ति पाठ

11. भजन

## प्राक्कथन

परम श्रद्धेय बाबा जी श्री श्रद्धानाथ जी महाराज शेखावाटी आंचल में एक महान सिद्ध पुरूष हुए हैं। उनका जन्म आषाढ़ शुक्ला द्वितिया बुधवार सन् 1918 ई. में कदाचित अपने सेवक भक्तों के उद्धार हेतु व नाथ सम्प्रदाय को गौरवान्वित करने के लिए ही हुआ था। उन्होंने श्रावण शुक्ला षष्ठी बुधवार सन् 1985 ई. को लक्ष्मणगढ़–स्थित श्री नाथ जी महाराज के आश्रम में 21 अगस्त को बह्म–मुहूर्त में सुबह साढ़े तीन बजे अपना भौतिक शरीर त्याग दिया और ब्रह्मलीन होगये। श्री बाबाजी महाराज जन्म–जात ही सन्त थे। उनके असाधारण व्यक्तित्व एवं जन–कल्याण हेतु वचन सिद्धि के अनेक चमत्कारी घटना–प्रसंग उनके सेवकों, भक्तों एवं श्रद्धालुओं के जीवन में आस्था के केन्द्र बने हुए हैं। श्री बाबाजी महाराज ने असंख्य सेवक–भक्तों को सच्चा, सादा व खरा कर्मठता का जीवन–जीना सिखाया और सन्मार्ग की शिक्षा देकर आध्यात्म मार्ग पर अग्रसर किया। मुझे श्री बाबाजी महाराज की कृपा से सन् 1974 से 1985 ई. तक श्री नाथ जी महाराज का आश्रम लक्ष्मणगढ़ में परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के सानिध्य में रहने व सेवा कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप ही मुझे उनकी अहैतुकि कृपा से यह साधु भेष मिला हुआ है और सुख, शान्ति एवं आनन्दपूर्वक उनके चरण–कमलों की याद में जीवन व्यतीत हो रहा है।

बाबा श्री रामनाथजी ने यह पुस्तक "श्री गुरु महिमा सार" परम श्रद्धेय श्री बाबा जी महाराज द्वारा प्रदत सुबह–शाम की प्रार्थना कार्यक्रम सहित छपवाकर सेवक भक्तों के लिए नित्य नियम से श्री नाथजी महाराज को इष्ट मानकर प्रार्थना करने में सहूलियत प्रदान की है जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। इसके साथ ही 'श्री गुरुमहिम्न सतोत्रम्' अध्यात्म प्रेमी सेवक भक्तों के लिए व साधुओं के लिए पालनीय नियमों का समावेश यहाँ पर सन्त भक्तों के लिए अनुकरणीय है।

योगी सरलनाथ

## प्रस्तावना

श्री गुरुदेव श्रद्धेय श्री श्रद्धानाथजी महाराज एक भगवत् स्वरूप 'नर रूप में नारायण' व मनुष्य रूप में चलते–फिरते भगवान इस शेखावाटी भू–धरा पर अवतरित हुए। असंख्य श्रद्धालु भक्तों को वे मा–बाप, भाई, सखा, गुरु व भगवान के रूप में प्राप्त हुए।

श्लोक–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बनधुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या, द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

हजारों–हजारों सेवक–भक्तों के दिलों में आपके प्रति चरितार्थ है। न जाने कितने ही परिवारों की चार–चार पीढ़िया आपको अपना सर्वस्व मानकर नमन करती हैं और उपरोक्त श्लोक के अनुसार श्रद्धा से अपने–अपने हृदय–पटलों में संजोये रखती है। गुरु शब्द का असली स्वरूप "

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आप श्रद्धेय श्री श्रद्धानाथजी महाराज में देखने को मिलता था, मिलता है और मिलता रहेगा।

मुझे सन् 1974 से 1985 तक परम श्रेव्य श्री बाबाजी महाराज की शरण में रहने का व 1985 से 1988 तक श्री नाथजीमहाराज का आश्रम लक्ष्मणगढ़ में सेवा–कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसी के फलस्वरूप परम पूज्य गुरुदेव श्री बाबाजी महाराज ने मुझे अपने कर कमलों द्वारा भगवां वस्त्र देकर अपना शिष्य बनाया व नाथ सम्प्रदाय में शामिल कर अपनी–चरण–शरण में रख लिया। मैं इस उपकार को आजीवन नहीं भूलूँगा। आज भी उनकी असीम कृपा से सब आनन्द मंगल है। जो कुछ हो रहा है, वह सब उनकी कृपा का फल है और आगे जो भी होगा वह भी उनकी कृपा से ही सुलभ होगा।

श्री नाथ जी महाराज के सेवक–भक्तों के आग्रह पर यह 'श्री गुरु महिमा–सार' पुस्तक श्री नाथजी महाराज की कृपा से ही छपवाई गई है। मैने इस पुस्तक के लेखन व संकलन का कार्यभार ब्रिगेडियर लक्ष्मणसिंह जी को दिया सो उन्होनें सहर्ष स्वीकार कर बहुत ही श्रद्धा व लग्न से इस काम को पूर्ण किया है। उन्होनें 'श्री गुरु महिमा स्तोत्रम्' का संकलन व अनुवाद कर तथा उनके पूर्व विरचित ' श्री श्रद्धा स्तोत्रम् ,श्री श्रद्धाा चालीसा एवं श्री अमृत–चालीसा आदि का समावेश इस पुस्तक में करके परम पूज्य गुरुदेव श्री श्रद्धानाथजी महाराज के प्रति अपने श्रद्धा सुमन श्री गुरुदेव

के आध्यात्मिक स्वरूप का सुन्दर एवं मर्म स्पर्शी चित्रण करते हुए उनके श्री चरणों में समर्पित किये हैं जो सेवक–भक्तों के लिए अति प्रेरणास्पद व श्रद्धाप्रद सिद्ध होंगे, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

बाबा श्री रामनाथ

## श्री गुरु महिम्न स्तोत्रम्

### ऊँ शिव–गोरक्ष

।।श्री नाथाय नमः।।

।।श्री सद्गुरुदेवाय नमः।।

ऊँकार स्वरूप शिव–गोरक्ष के अवतार सद्गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को नमस्कार है, नमस्कार है।

श्री नाथं परमानन्दं गुणातीतं जगदगुरुम्।
शुद्धं शान्तं स्वप्रकाशं वन्दे विश्वेश्वरं विभुम्।।१।।
नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम्।
नित्यं बोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्।।२।।

परम आनन्द स्वरूप, गुणातीत जगत–गुरु श्री नाथजी महाराज जो शुद्ध, शान्त, स्वप्रकाशित हैं, उन विश्वेश्वर विभु की वन्दना करता हूँ। नित्य, शुद्ध, आभासरहित, निराकार, निरंजन, नित्यबोध स्वरूप, परम गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार करता हूँ।।१,२।।

ऊँ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम।
द्वन्द्वातीतं गगन् सदृयं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।।३।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व धी साक्षिभूतम्।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि।।४।।

ब्रह्मानन्द रूप, परम सुखदाता, केवल ज्ञानस्वरूप, सुख–दुःखादि द्वन्द्वों से रहित, आकाश के समान, त्वमसि आदि वाक्यों के लक्ष्य, एक, नित्य, विमल, निश्चल, सर्व प्रणियों की बुद्धि के साक्षी, भावातीत, तीनों गुणों से रहित ऐसे सद्गुरु (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार करता हूँ ।।३,४।।

अखण्डमण्डलाकारं ब्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।५।।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्।
नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवै नमः।।६।।

जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण वलयकार चर और अचर जगत ब्याप्त है उस पद को

(ब्रह्म या आत्म तत्व को) जिन्होंने दर्शाया, उन श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार है। जो चैतन्यरूप ,शाश्वत, शान्त, आकाश से परे (सूक्ष्म और श्रेष्ठ) निरंजन, नादातीत, द्वन्द्वातीत, कलातीत हैं, उन श्री गुरुदेव (श्री नाथजीमहाराज) को नमस्कार है।।५,६।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु–गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।७।।
गुरुरेव जगत्सर्वं ब्रह्म विष्णु शिवात्मकम्।
गुरोः पर तरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुम्।।८।।

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही शिव हैं, गुरु ही परब्रह्म हैं, ऐसे श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्वरूप श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) समस्त जगत हैं, गुरु से परे (सूक्ष्म और श्रेष्ठ) कुछ नहीं है। इसलिए श्री गुरुदेव (श्री नाथजीमहाराज) का ध्यान–पूजन करना चाहिए।।७,८।।

गुरुरेव परं ब्रह्म गुरुरेव परागतिः।
गुरुरेव पराविद्या गुरुरेव परायणम्।।९।।
ज्ञान शक्ति समारूढ़स्तत्व माला विभूषितः।
भुक्ति मुक्ति प्रदाता यस्तस्मै श्री गुरुवे नमः।।१०।।

श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) ही पर ब्रह्म हैं, श्री गुरुदेव( श्री नाथजी महाराज) ही परम गति हैं, श्री गुरुदेव( श्री नाथजी महाराज) ही परा विद्या हैं, श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) ही परायण के योग्य हैं अर्थात् आत्मा से वरण करने योग्य हैं अर्थात अपनी आत्मा परम गुरुदेव की महान् आत्मा में विलय करने योग्य है। ज्ञान शक्ति पर आरूढ़ छतीस तत्वों की माला से आलांकृत, भुक्ति और मुक्ति देने वाले श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार है।।९,१०।।

अनेक जन्मसंप्राप्त सर्व कर्म विदाहिने।
स्वात्मज्ञान प्रभावेण तस्मै श्री गुरुवे नमः।।११।।
यस्य स्मरण मात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम्।
य एव सर्व संप्राप्तिस्तस्मै श्री गुरुवे नमः।।१२।।

अपने ज्ञान के प्रभाव से अनेक जन्मों के संचित सब कर्मों को भस्म करने वाले श्री गुरुदेव

(श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को नमस्कार है। जिनके स्मरण मात्र से अपने आप ज्ञान उत्पन्न होता है, जो स्वयं सर्वप्राप्ति हैं, उन श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को नमस्कार है।।११,१२।।

स्थावरं जंगमं चैव तथा चव चराचरम्।
व्याप्तं येन जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।१३।।
गुरुध्यानं तथा कृत्वा स्वयं ब्रह्ममयो भवेत।
पिण्डे पदे तथा रूपे मुक्तोऽसौ नात्र संशय।।१४।।

स्थावर, जंगम, चराचर समस्त जगत जिनसे व्याप्त है, उन श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) को नमस्कार है। अन्तःकरण में श्री गुरुदेव(श्री नाथजी महाराज) का वैसा ध्यान करते हुए शिष्य स्वयं ब्रह्म मय (गुरु रूप) बन जाता है। पिण्ड में,पद में,रूप में वह मुक्त हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है।।१३,१४।।

गुरोः कृपा प्रसादेन् आत्मारामं निरीक्षयते।
अनेन गुरुमार्गेण स्वात्मज्ञानं प्रवर्तते।।१५।।
ध्यान मूलं गुरुर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरुपदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।१६।।

श्री गुरुदेव( श्री नाथजी महाराज) का कृपा–प्रसाद प्राप्त करके शिष्य को आत्मा का ध्यान करना चाहिए। इस गुरुमार्ग से अपने स्वरूप का ज्ञान होता है। ध्यान का मूल आधार है श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) का साकर भाव, पूजा का मूल है श्री गुरुदेव के चरणकमल, मंत्र का मूल है श्री गुरुदेव के मुखरविन्द से उच्चारण हुआ वाक्य, और मोक्ष का मूल साधन है श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) की कृपा।।१५,१६।।

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम्।
यस्य सानिध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः।।१७।।
गुरुरादिरनादिश्च गुरु परम दैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।।१८।।

श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) परम आनन्द में रम रहे हैं, उनके निजानन्द विग्रह की

वन्दना करता हूँ, जिनके सानिध्य मात्र से यह शरीर चिदानन्द (आत्मानन्द) का स्थान बन जाता है। श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) आदि हैं, अनादि हैं, परम देवता हैं। श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) से परे (सूक्ष्म और श्रेष्ठ) कुछ भी नहीं है। ऐसे श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को नमस्कार है।।१७,१८।।

हरौ रूष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रूष्टे कश्चन।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन श्री गुरु शरणं व्रजेत।।१६।।
अज्ञान मूल हरणं जन्मकर्म निवारकम्।
ज्ञान वैराग्य सिद्धर्थ्यं गुरु पादोदकं पिवेत्।।२०।।

हरि के रूष्ट होने पर श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) बचाते हैं, परन्तु श्री गुरुदेव के रूष्ट होने पर कोई नहीं बचा सकता। इसलिए समस्त प्रयत्नों द्वारा श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) की शरण में जाना चाहिए। अज्ञान की जड़ को उखाड़ने वाला, जन्म और कर्म का निवारण करने वाला श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) का चरणमृत ज्ञान और वैराग्य की सिद्धि के लिए पीना चाहिए।।१६,२०।।

काशी क्षेत्रं तन्निवासो जाह्नवी चरणोदकम्।
गुरुर्विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चितम्।।२१।।
गुरोः पदोदकं पीत्वा गुरोरूच्छिश्ट भोजनम्।
गुरुमूर्तेः सदाध्यानं गुरु मंत्रं सदा जपेत्।।२२।।

श्री गुरुदेव का निवास स्थान ही काशी है, उनका चरणमृत श्री गंगा जी है। श्री गुरुदेव

(श्री नाथजी महाराज) साक्षात विश्वेश्वर हैं, वे निश्चय ही तारक ब्रह्म हैं। श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) के चरणमृत का पान करके गुरु को समर्पित करने के बाद बचा हुआ (उच्छिष्ट) भोजन करना चाहिए तथा श्री गुरु–मूर्ति (साकार–भाव) का निरन्तर ध्यान करना चाहिए और श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) द्वारा दिये गये मंत्र का सदा जप करना चाहिए।।२१,२२।।

ज्ञान विज्ञान सहितं लभ्यते गुरुभक्तितः।
गुरोः परतरं नास्ति घ्येयोऽसौ गुरु मार्गिभिः।।२३।।
यस्मात्परतरं नास्ति नेति नेतीति वैश्रुतिः।
मनसा वचसा चैव नित्यमाराधयेद् गुरुम्।।२४।।

श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) की भक्ति से ज्ञान और विज्ञान (आत्मा का अपरोक्ष ज्ञान और जगत का परोक्ष ज्ञान) प्राप्त होता है। श्री गुरुदेव से श्रेष्ठ कुछ नहीं है, इसलिए सिद्ध महापुरूषों के बताये हुए मार्ग पर चलने वालों को श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) का ध्यान करना चाहिए।'नेति नेति' कह कर श्रुति (वेदों) ने बताया है कि श्री गुरुदेव से श्रेष्ठ कोई वस्तु नहीं है, इसलिए मन और वचन से हमेंशा श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) की अराधना करनी चाहिए।।२३,२४।।

गुरुमूर्ति स्मरेन्नित्यं गुरु नाम सदा जपेत्।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यत्र भावयेत्।।२५।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानान्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।२६।।

श्री गुरु–मूर्ति (अर्थात गुरुदेव का साकार भाव) का नित्य स्मरण करें। गुरुनाम (गुरुदेव के दिये हुए मंत्र) का सदा जप करें। श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) की आज्ञा व उपदेशों का पालन करें। उन श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) से भिन्न किसी भी वस्तु की भावना न करें। अज्ञान रूपी अन्धकार से अंधे बने हुए जीवों के नेत्रों को जिन्होने ज्ञान रूपी अंजन (काजल) शलाका से खोल दिया है, ऐसे श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) को नमस्कार है।।२५,२६।।

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्नप्रकाशेन भाति तत्।
यदा नन्देन नन्दन्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।।२७।।
गुरु भावः परं तीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम्।
सर्व तीर्थाश्रयं पादांगुष्ठं नमः तं सद्गुरुम।।२८।।

जिनके अस्तित्व से जगत का अस्तित्व है, जिनके प्रकाश से यह जगत प्रकाशित है। जिनके आनन्द से सब आनन्दित होते हैं, उन (सच्चिदानन्दरूप) श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) की सत्ता को नमस्कार है। 'गुरुभाव' यह श्रेष्ठ तीर्थ है, अन्य तीर्थ निरर्थक हैं। श्री गुरुदेव के चरण कमलो के अंगुठे के आश्रय में सब तीर्थ रहते हैं। ऐसे श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) को नमस्कार है।।२७,२८।।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्वं ज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्री गुरुवे नमः।।२९।।
मन्नाथः श्री जगन्नाथो मद् गुरुस्त्रिजगद्गुरुः।
ममात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।३०।।

श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज) से बढ़कर कोई तत्व (ब्रह्म) नहीं है। श्री गुरुदेव की सेवा से बढ़कर कोई तप नहीं है। गुरु–ज्ञान से बढ़कर कोई तत्व ज्ञान नहीं है। ऐसे श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) को नमस्कार है। (शिवजी कह रहे हैं) मेरे श्री गुरुदेव (श्री नाथजी महाराज सत्ता रूप में ) सारे जगत के नाथ हैं, मेरे गुरुदेव तीनों लोकों के गुरु हैं। मेरा आत्मा सर्वव्यापी (सब में रहने वाला) आत्मा है, इस बात का अनुभव कराने वाले श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) को नमस्कार है।।२९,,३०।।

वन्देऽहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं सदा गुरुम्।
नित्यं पूर्णं निराकारं निगुर्णं स्वात्मसंस्थितम्।।३१।।
आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञान स्वरूपं निज बोध युक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भव रोग वैद्यं श्रीमत्गुरुं नित्यमहं नमामि।। ३२।।
सच्चिदानन्द स्वरूप, भेदरहित, नित्य, पूर्ण, निराकार, निर्गुण स्वात्मा में अवस्थित श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) को नमस्कार करता हूँ। आनन्द स्वरूप, आनन्द प्रदाता, प्रसन्नमुख, ज्ञानस्वरूप, आत्मबोध युक्त, योगीश्वर, स्तुती करने योग्य, भव (संसार) के आवागमन रूपी रोग के वैद्य श्री गरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ।।३१,३२।।
न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिक्।
शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः।।३३।।
ऊँ श्रीमत् परब्रह्म गुरुं वदामि ऊँ श्री मत्परब्रह्म गुरुं भजामि।
ऊँ श्रीमत् परब्रह्म गुरुं स्मारामि ऊँ श्री मत्परब्रह्म गुरुं नमामि।।३४।।
श्री गुरुदेव से अधिक कुछ भी नहीं है, श्री गुरुदेव से अधिक कुछ भी नहीं है,
श्री गुरुदेव से अधिक कुछ भी नहीं है, श्री गुरुदेव से अधिक कुछ भी नहीं है।
यह शिव आज्ञा है, यह शिव आज्ञा है, यह शिव आज्ञा है, यह शिव आज्ञा है । श्री मत् पर ब्रह्म श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथ जी महाराज) का मै स्तवन करता हूँ, श्रीमत् पर ब्रह्म श्री गुरुदेव की मैं काया, वाचा, मन एवं कर्म से सेवा–आराधना करता हूँ ,श्रीमत् पर ब्रह्म श्री गुरुदेव का मैं स्मरण करता हूँ, श्रीमत् पर ब्रह्म श्री गुरुदेव (श्री श्रद्धानाथजी महाराज) को मैं नमन करता हूँ।।३३,३४।।
गुरु गीता स्तोत्रं देवी शुद्ध तत्वं मयोदितम्।
भव ब्याधि विनाशार्थं स्वमेव जपेत्सदा।।३५।।
सर्व बाधा प्रशमनं धर्मार्थ काम मोक्षदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।३६।।
भगवान शिव पार्वती से कहते हैं कि हे देवी, उपरोक्त श्री गुरुमहिम्न स्तोत्रम् रूपी शुद्ध तत्व मैंने तुम से जो कहा है, भव ब्याधि का नाश करने के लिए सदा स्वयं इसका जप करना चाहिए। इसके पाठ से सभी विघ्न शान्त होते हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्रद्धालु साधक जिन जिन विषयों का चिन्तन करता है, वे सब उसे निश्चित ही प्राप्त होते हैं।।३५,३६।।

नोटः– किम्वदन्ती के अनुसार उपरोक्त अति गुप्त व पावन 'श्री गुरु महिम्न स्तोत्रम' भगवान शिव ने किसी एकान्त निरंजन टापू पर आसीन होकर मां पार्वती को सुनाया था। जहाँ जहाँ भगवान शिव ने गुरु शब्द का प्रयोग स्वगुरु के लिए किया है, यहाँ उसी शब्द को उपरोक्त स्तोत्र के अनुवाद में परम पूज्य गुरुदेव बाबाजी श्री श्रद्धानाथजी महाराज के लिए इंगति किया है, क्योंकि वे ही हमारे परम गुरुदेव हैं; उन्हे कोटि–कोटि बार प्रणाम है।

ऊँ शन्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## गुरु तत्व

सतगुरु आप समर्थ हैं, सन्–मार्ग के बीच।
बचा कर मिथ्या से मुझे, हरे भाव सब नीच।।१।।
पथ मे प्रकटे सत्गुरु, हस्त पकड़ कर आप।
पाप तप्त को शान्त कर, दिया नाम का जाप।।२।।
भ्रम भूल में भटकते, उदय हुए जब भाग।
मिले अचानक गुरु मुझे, लगी लगन की लाग।।३।।
कुमति कूप में पतन था, पकड़ निकाला हाथ।
धाम बताया ईश का, देकर पूरा साथ।।४।।
सत्गुरु की महिमा बड़ी, बिरला जाने भेद।
भारे भव–भय को हरे, और पाप के खेद।।५।।
सत्गरु की शरण में, मनन ज्ञान का कोष।
जप तप ध्यान उपासना, मिले शील सन्तोष।।६।।
सच्चे सन्त की शरण में, बैठ मिले विश्राम।
मन मांगा तब मिले, जपे राम का नाम।।७।।
गुरु को करिये वंदना, भाव से बारंबार।
नाम सुनौका से किया, जिसने भव से पार।।८।।
गुरु तो ऐसा चाहिए, स्वार्थ से हो पार।
परमार्थ में रत रहे, कर पर हित उपकार।।९।।
वास करे जिस स्थान में कर हरि, नाम विख्यात।
ईश प्रेम बांटे सदा, पूछे जात न पांत।।१०।।
राम–रंगा रहे, जो आय करे लाल।
ऊँकार निराकार को जाने नाथ अकाल।।११।।
नम रूप  जिसका नहीं, हैं उसके सब नाम।
भेद गुरु से पाइये, है ऊँ शिव ही राम।।१२।।
स्त्गुरु चंदन सम कहा, भगवत प्रेम सुवास।
निश दिन दान करे उसे जो जन आवे पास।।१३।।
सच्चे संतके संग से, चढ़े भक्ति का रंग।

नित्य सवाया वह बढ़े कभी न होवे भंग।।१४।।

गुरु संगति में बेठिये, सीखिये भक्ति–भेद।

सुनिये ज्ञान विचार को, पुस्तक दर्शन वेद।।१५।।

सुगुरु से यहां समझिये, ज्ञानी अनुभव वान।

बोधक धर्म सुकर्म का, दाता ज्ञान सुध्यान।।१६।।

सतगुरु की पहचान यह, उपरति प्रेम विचार।

वीत–रागता, सुजनता, रहित हठ पक्ष विकार।।१७।।

शान्ति भक्ति सन्तोष का, कोश, रोष से पार।

प्रभु नाम में लीन जो, प्रतिमा प्रेम प्यार।।१८।।

ऐसा गुरुवर जानिये, जंगम तीर्थ राज।

ध्यान ज्ञान हरि नाम से, सफल करे सब काज।।१९।।

पथ प्रदर्शक वह कहा, परमार्थ की खान।

करदे पूर्ण कामना, देकर भक्ति सुदान।।२०।।

जिसने सत्गुरु को किया, अर्पण अपना शीश।

मिलती उसे अवश्य है, मुक्ति विस्वाबीस।।२१।।

गुरु आज्ञा दे सो करे, देख करे कुछ नाहिं।

ऐसे गुरु मुखि पायेंगे, सतपथ जग के माहिं।।२२।।

गुप्त भेद को प्रकट कर, देय अविद्या टार।

भ्रम का तम संहार दे, सत्गुरु परम उदार।।२३।।

ब्रह्म रचा संसार को, त्रिगुण, फांस फैलाय।

फंसा दिया है जीव को, सत्गुरु करे सहाय।।२४।।

याचक है सारा जगत, दाता हैं गुरुदेव।

आत्म–तत्व दर्शाय दे, करो चरण की सेव।।२५।।

सत्गुरु पूरे पारखी, जाने तन मन भेद।

निज चरणन में लेयकर, दूर करे सब खेद।।२६।।

चन्द्र एक गुरुदेव हैं, हैं चकोर सब जीव।

मिलन हेतु व्याकुल रहें, कबहुँक पावे पीव।।२७।।

स्वाति बिन्दु गुरु वचन हैं, चातक निर्मल जीव।

टेक धरे दुःख सहे, प्यास हरे तब पीव।।२८।।

दीपक श्री गुरुदेन हैं, निर्मल जीव पंतग।
निर्भय हो आनन्द लें, भेंट करे, निज अंग।।२६।।
सत्गुरु साँचे वैद्य हैं, रोगी हैं सब जीव।
औषधि दे निरोग करे, दर्शादे निज पीव।।३०।।
सत्गुरु साँचे ज्योतिषी, दे ग्रह दशा बताय।
भिन्न करे सुख–दुःख से, भव से लेय बचाय।।३१।।
जीव भूल निज रूप को, सुख–दुःख पा कलपाय।
सत्गुरु चेतन करत हैं, दे निज रूप लखाय।।३२।।
ब्रह्म भाव की प्राप्ति, अरु मोह तिमिर का नाश।
बिन गुरु दया न हो सके, धारो दृढ विश्वास।।३३।।
बिनगुरु भक्ति न मिट सके, जन्म मरण का क्लेश।
महिमा अति गुरु चरण की, कहे शारदा शेष।।३४।।
काया मन अरु वचन से, कर सत्गुरु की सेव।
भव सागर से तार दे, संग आपकी लेव।।३५।।
गुरु चरणनन पर वारिये, तन मन धी धाम।
करे जीव से ब्रह्म है, अमर करा दे नाम।।३६।।
गुरु सेवा बिन ना बने, योग, यज्ञ, तप, ध्यान।
तीरथ, व्रत, नवधा, नियम, दया धर्म अरु ध्यान।।३७।।
गुरु समान दाता नहीं, भ्रम मिटावन हार।
बांह पकड़ के तार दे, भव सागर से पार।।३८।।

करो चाहे त्रेदेव अराधा, बिन गुरु दया मिटे नहीं बाधा।
चारों धाम करो चाहे कोई, बिन गुरु दया न संशय खोई।
चतुर बनो चाहे मौन धराओ, तन के बल सब जगत हराओ।
नहीं चले कुछ भी चतुराई, बिन गुरु दया न सत्पद पाई।
चाहे जा बन में बस जाओ, भूखे रह–रह देह सुखाओ।
जप, तप, यज्ञ करो चाहे कोई, बिन गुरु दया न भव दुःख खोई।
दान करो चाहे ध्यान लगाओ, चाहे हठ कर योग कमाओ।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर आवे, सकल संपदा कर में आवे।

तर्पण श्राद्ध करो चाहे कोई, बिन गुरु भक्ति व्यर्थ सब होई।
सदा करो सतगुरु की सेवा, उन सम अन्य नहीं कोई देवा।
ऊँ शान्ति! प्रेम !! आनन्द!!!

# श्रद्धा

श्रत् नाम सत्य का है। सत्य को धारण करने की भावना को, प्रीति को और रूचि को संत जन श्रद्धा कहते हैं। सत्य के निश्चय को भी श्रद्धा कहा है। मनुष्य में आत्मा के लिए, परमात्मा के लिए, परलोक के लिए, दान–पुण्य के फल के लिए, सत–कर्मों के लिए और श्रेष्ठ जनो के लिए जो उत्तम धारणा, पवित्र प्रीति, अटूट अनुराग और संशय रहित सुनिश्चय हुआ करता है उस वृति का नाम श्रद्धा है। धर्म मार्ग में, आत्म–पथ में, अभ्यास के साधनों में, सेवा–सत्कर्मों में श्रद्धा ही काम किया करती है। 'श्रद्धावाँल्लभतें ज्ञानं' अर्थात् श्रद्धावान को ही ज्ञान प्राप्त होता है। इसके बिना तो कर्म धर्म फीके हो जाते हैं, अध्यात्मवाद निरा असार समझा जाता है और ज्ञान, ध्यान रस रहित पकवान समान ही दिखने लगता है।

श्रद्धा कर्म से श्रेष्ठ है। श्रद्धाहीन जन कर्म को भली भांति नहीं निभा सकता। श्रद्धाहीन में कर्म करने की रूचि नहीं होती। प्रेम और रूचि के अभाव में किया हुआ कर्म कोई उत्तम परिणाम नहीं दे सकता। परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज कहा करते कि श्रद्धा शब्द पुरुषार्थ, प्रेम, विश्वास और भक्ति आदि गुणों का द्योतक है। जो जन कर्मशील होते हैं, अपने नित्य नियम में परायण रहते हैं, भजन, पाठ, धारणा, ध्यान तथा जप तप में रत् रहते हैं और परहित सेवा करते हैं, वे ही श्रद्धालु देखे जाते हैं। इस कारण श्रद्धा का आसन कर्म से ऊँचा है। श्रद्धा वह भूमि है जिसमें सुकर्मों के खेत बहुत फूलते फलते हैं। श्रद्धा वह शिला है जिस पर धर्म कर्म का महान मन्दिर निर्माण किया जाता है। श्रद्धा वह श्वेत रंग है जिस पर प्रेम, भक्ति, सेवा, उपकार, दान, बलिदान के सारे रंग बस जाते हैं। इसके बिना वास्तव में सारा कर्म कलाप कड़वा और कषैला लगने लग जाता है। जीवन का रस, भक्ति का स्वाद, धर्म का सार और ज्ञान का तत्व श्रद्धा मानी गई है। आप्त जनों के बचनों पर और धर्म ग्रन्थों के वाक्यों पर विश्वास करना श्रद्धा है। विमल मन का मनुष्य ही आत्मा के विचारों को, परमात्मा को, और सत्य के अस्तित्व को पूर्ण श्रद्धा से अनुभव जन्य विद्या मानता है, तत्व ज्ञान समझता है और आत्मा से प्रत्येक पदार्थ निश्चय करता है। जो मनुष्य पूरा श्रद्धालु होता है वह हरि–इच्छा में सर्व प्रकार से प्रसन्न बना रहता है। वह प्रत्येक परिवर्तन तथा प्रत्येक घटना में प्रभु इच्छा व अपने इष्ट का हाथ देखता है। श्रद्धावान ही कहता है कि दैव इच्छा सबसे बलवती है। भगवान का भाना अनिवार्य है इसलिए श्रद्धा करो कि–

नाथेच्छा में हो रहे, सभी नियम से काम।

बाल न बांका  हो कभी, जो राखे शिव–राम ।।

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत। श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः।।

सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके अन्तःकरण के अनुरूप होती है। यह आत्म पुरूष श्रद्धामय है। इसलिए जो पुरूष (आत्मा) जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है। इसलिए हमारे परम पूज्य गुरुदेव श्री बाबाजी महाराज का पतित–पावन, अति सुन्दर, सुख–शान्ति, प्रेम और आनन्दस्वरूप व भव–जाल से तारने वाला नाम 'श्री श्रद्धानाथजी महाराज' कितना सही, सार्थक तथा उनकी कीर्ति, विभूति व स्वरूपानुकूल है। हम सबका अहोभाग्य है कि हमें ऐसे जंगम तीर्थ श्री गुरुदेव मिले। हम सब उनके चरण कमलों पर बार–बार न्यौछावर हैं।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## भक्ति

भक्ति रंग अति सुरंग है, सुखदायक सतरूप।
जिस घट में चढ़ जात है, होता रूप अनूप।।
भक्ति गुरु चरण की, जिस जन के चित होय।
सुखी रहे संसार में, पावे सद्गति सोय।।
भक्ति मिटा दे सकल भय, भक्ति करा दे ज्ञान।
बिना भक्ति सब व्यर्थ है, जप, तप, पूजा ध्यान।।
भक्ति सुधा रस जानके, जीते सन्त सुजान।
नाम रहे संसार में, पावे पद निर्वान।।
नशा चढ़े जब भक्ति का, विसरे तन, मन ज्ञान।
सुख दुख की चिन्ता नहीं, रहे चरण का ध्यान।।
भक्ति पुष्प अति सुगंधित, भक्त भ्रमर सुख लेय।
सबको आनन्दित करे, पाय अचल पद लेय।।
भक्ति अमोला खेत है, जब ऋतु पर पक जात।
देता चार पदार्थ है, सुधरे मानव गात।।
भक्ति करो भगवान की, तन–मय हो मन लाय।
श्रद्धा प्रेम प्रसंग से, भक्ति भाव में आय।।
भक्ति बीच भगवान है, भक्तों के बीच भगवान।
भक्ति भाव में रहे हरि, यही भक्ति का ज्ञान।।
जन–जन में हरि जोत है, विद्यमान सब ठौर।
भक्ति–हीन जाने नहीं, यों भटके सब और।।
सुभक्ति अपने नाथ की, नहीं और से काम।
निराकार भगवान है, सबसे ऊँचा धाम।।
सत्य नाम शुभ नाम जौ, वही जान औंकार।
वही नाथ के नाम से, सन्तन कहा पुकार।।
करो भक्ति उस धाम की, पकड़ नाम की डोर।
सिमरन चिन्तन ध्यान से, दो दर्शन की भोर।।

प्रेम भाव से नाम जप, तप सयंम को धार।
अराधन शुभ कर्म से, बढ़े भक्ति में प्यार।।
सेवन मन मे नाम का, भजन ध्यान गुण–गान।
भावो सहित उपासना, भक्ति लीजिए जान।।
श्रद्धा प्रेम से सेविए, भाव चाव में आय।
ऊँ शिव जपिए लगन से, यही भक्ति कहलाय।।
आस्तिकता हो सुदृढ़, श्रद्धा प्रीति अटूट।
मन में निश्चय अचल हो, तब हो भक्ति अखूट।।
बसे भक्ति में भावना, नियम धर्म शुभ काम।
जप–तप संयम साधना, और ईश का नाम।।
रस जीवन का जानिए, यही धर्म का सार।
ज्ञान कर्म का मर्म हैं, नहीं तो सब असार।।
भक्ति बिना तो फोक है, सारा कर्म कलाप।
तर्क ज्ञान थोथा सभी, कथनी निरी विलाप।।
भक्तिहीन जो धर्म है, है बालू का कोट।
नकली मोती लाल है, लगे खरे सा खोट।।
भक्ति को धर्म समझिए, आत्मज्ञान निधान।
मर्म धर्म का मानिए, मुक्ति सुगति सोपान।।
भक्ति में ज्ञेय ज्ञान है, ज्ञाता जाने ज्ञेय।
करके कर्म उपासना, तज कर सब जो हेय।।
भक्ति बिना नहीं ज्ञान है, भक्ति बिना नहीं योग।
प्रेम लगन श्रद्धा बिना, शुभ न बने संजोग।।
दान पुण्य हो प्रेम से, सेवा पर उपकार।
भक्ति से जाति देश हित, होवे सर्व सुधार।।
परम पुरूष की राधना, करते भक्त विद्वान।
संयम साधन ध्यान ही, भक्ति धर्म जान।।
अतः समन्वय भक्ति में, ज्ञान कर्म का मान।
इस से ऋषि मुनि संत सब, करते भक्ति विधान।।
भक्ति भारी नदियां बहे, वृष्टि में गहराय।

छम–छम बरसे प्रेम की, बादलियां जब आय।।
लगे झड़ी सत् संग में, हरि यश वर्णन सगं।
उछले प्रेम तंरग तब, उमड़े भक्ति सुगगं।।
जो जन करे स्नान वहां, सो पावे भव पार।
ज्ञान भक्ति भागिरथी, प्रेम भावना धार।।
पीना चाहे भक्ति रस, मन चाहे अभिमान।
एक कोश में दो खड़ग, देखे सुने न कान।।
नाम मान, मन एक में, एक समय न समाय।
तेज तम तो एक स्थल, कहीं न देखा जाय।।
मोटा तन अभिमान का, लांघे न भक्ति द्वार।
हस्ति यथा मणि छिद्र से, पा सके नहीं पार।।
जिस मन में छल कपट हो, उस में न भक्ति मेल।
जिस तरू जड़ में आग हो, उस पर चढ़े न बेल।।
द्वेष कलह विवाद जहां, वहां न भक्ति उमंग।
यथा ही मिल कर न रहे, अग्नि गंग के संग।।
शेंका शील में न भक्ति, नहीं प्रेम लवलेश।
शेंका न रहे भक्त में, भज कर राम महेश।।
संशय वाद विर्तक हो, जहां असत्य विचार।
भक्ति वहां उपजे नहीं, बढ़े न श्रद्धा प्यार।।
श्रद्धा निश्चय हीन में, भक्ति न अंकुर लाय।
केसर कमल कपूर कब, ऊसर में उपजाय।।
दया दान उपकार शुभ, सेवा विमल विचार।
उपजते भक्ति में यथा, सर में पद्म अपार।।
प्रतिपन्न तव शरण में, मैं हूँ मेरे ईश।
सुरस भक्ति में दो मुझे, भजूँ तुझे जगदीश।।
भक्ति करूँ तेरी सदा, हो कर धुन में लीन।
निर्भय पद तेरा मिले, बनूँ न जन का दीन।।
उदय होंय पुण्य जब ही, लगे भजन की लाग।
श्रद्धा प्रेम सुभक्ति के, भाव गये हैं जाग।।

वैरागी हो सबसे, धार नाथ का राग।
भक्ति ध्वनि में मस्त हो, पूरा लिये विराग।
सिर दे सौदा करे, स्नेह सरस के साथ।
टाला टले न भक्ति से, कभी न छोड़े हाथ।।
नाथ भक्ति में मग्न हो, धरे न पीछे पैर।
चाहे विरोधी हों सब, करें बन्धु भी बैर।।
शीत उष्ण माने नहीं, जाने खान न पान।
हानि लाभ निन्दा स्तुति, सहे मान अपमान।।
केवल नाथ सुभक्ति में, तत्पर ही हो जाय।
विरहिन चकवी रात में, ज्यों चकवे की ध्याय।।
लगन यथा जो चाहिए, उमड़े सुभक्ति पाय।
पूर्ण शशि की ओर ज्यों, सागर उमड़ा जाय।।
ऊँ शन्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## प्रेम

प्रेम बिना नहीं भक्ति है, प्रेम बिना नहीं योग।
प्रेम बिना नहीं ज्ञान है, मिटे न भव के भोग।।१।।
प्रेम रंग में जो रंगे, धन्य उन्ही के भाग।
भव भय से निर्भय बने, छुटे द्वेष अरु राग।।२।।
प्रेम ही ज्ञान, ध्यान है, यही योग तप जान।
गुरु चरणन का प्रेम रख, जगत बह्म मय मान।।३।।
गुरु चरणन का प्रेम हो, विचरे आज्ञा माहिं।
असत् कबहु भाषे नहीं, भव से वह तिर जाहि।।४।।
प्रेम न बाड़ी नीपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
जे कोई चाहे प्रेम–रस, सिर दे सिर ले जाय।।५।।
पोथी पढ़ पढ जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।।६।।
प्रेम पियाला सो पिये, शीष दक्षिणा देय।
लोभी शीष न दे सके, नाम प्रेम का लेय।।७।।
छिन ही चढ़े छिन उतरे, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावे सोय।।८।।
जां घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, श्वास लेत बिन प्रान।।९।।
प्रेम बिना धीरज नहीं, विरह बिना वैराग।
सतगुरु बिना मिटे नहीं, मन मन्शा का दाग।।१०।।
गुरु मूरत मुख चन्द्रमा, सेवक नैन चकोर।
अष्ट पहर निरखत रहे, गुरु चरणन की ओर।।११।।
जहाँ प्रेम तहाँ नेम नहिं, तहाँ न बुधि व्यवहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि बार।।१२।।
प्रेम छिपाया न छिपे, जां घट उपजा होय।
जो पे मुख बोले नहीं, नैन देत हैं रोय।।१३।।
पीया चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान।

दोय खड़ग एक म्यान में, देखी सुनी न कान।।१४।।
जिह्वा के तो दिल नहीं, दिल के जिह्वा नाहिं।
सतगुरु सच्चे प्रेम को, समझत है दिल माहिं।।१५।।

ऊँ शान्ति! प्रेम!!आनन्द!!!

# मुक्ति का रहस्य

1. मनुष्य जीवन में आत्म–ज्ञान ही सर्वोपरि है, इसके लिए शुद्ध एवं स्वच्छ मन ही अनिवार्य शर्त है। कोई इसे पूरी कर दे तो गुरु प्रसाद तत्काल ही उपलब्ध हो जाता है, इसमें एक क्षण का विलम्ब नहीं होता।

2. आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि बुद्धि की पकड़ से बाहर हैं। बुद्धि की एक सीमा है, वह असीम को नहीं पकड़ सकती। अध्यात्म सूक्ष्म को पकड़ने का विज्ञान है। स्थूल सूक्ष्म का ही रूपान्तरण है।

3. मनुष्य न शरीर है, न बुद्धि, न अहंकार। वह शुद्ध चैतन्य मात्र है। शरीरस्थ यह चैतना ही आत्मा है व विश्व की समस्त आत्माओं का एकत्व भाव ही ब्रह्म है। दोनों अभिन्न हैं।

4. सृष्टि का आधार चैतन्य है। सृष्टि अनित्य है। यह चैतन्य, शाश्वत व नित्य है। यही मूल–तत्व है। सृष्टि इसी के सृजन का परिणाम है।

5. सांसारिक विषयों के प्रति जो आसक्ति है, उसे विष के समान छोड़ दो तथा स्वयं को शुद्ध चैतन्य आत्मा मानकर उसमें निष्ठापूर्वक स्थित हो जाओ। यही है वैराग्य, ज्ञान व मुक्ति का रहस्य।

6. राई की ओट में पर्वत छिपा है, किन्तु इस ओट को सद्गुरु ही हटा सकता है। यह पर्दा आत्मा पर नहीं हमारी आँख पर पड़ा है। आत्मा तो निर्वस्त्र है, प्रत्यक्ष है, सामने है, देखने की क्षमता मात्र आनी चाहिए। सद्गुरु बोध देकर इस पर्दे को हटाता है।

7. आत्म–ज्ञान के लिए गुरु का महत्व सर्वोपरि है। गुरु ईश्वर का ही प्रतिरूप होता है। शिष्य के लिए गुरु ईश्वर का साकार अवतार है। ईश्वर गुरु के माध्यम से ही सहायता करता है किन्तु उपलब्धि शिष्य की पात्रता के बिना नहीं होती। पात्रता के लिए मुमुक्षा, प्रज्ञा, श्रद्धा, प्रेम, समपर्ण भाव, नम्रता एवं प्रारब्ध (पूर्व जन्म में अर्जित ज्ञान) आवश्यक हैं।

8. जो चैतन्य–आत्मा में विश्राम कर ठहर गया वहीं मुक्त है। सभी भोग, कर्म अहंकार, लोभ आदि शरीर व मन के धर्म है। अतः ये कुछ भी मुक्ति में बाधक नहीं है। आत्मा न कर्ता है, न भोक्ता और न भोग्य विषय। आत्मा चैतन्य है, साक्षी है, ब्यापक है, सब में एक ही है, निराकार है। शरीरों के आकारों की भिन्नता के कारण आत्मा की भिन्नता के भ्रम रूपी अंधेरे को आत्म–ज्ञान रूपी प्रकाश हटा देता है।

9. अज्ञानी ही कहता है कि संसार है, माया है, ब्रह्म है, जीव है आदि। वह 'है' को ही जानता है। किन्तु जो कहता है यह सब नहीं है, सृष्टि, जीव आदि सब माया है, ब्रह्म ही सत्य है, वह भी

अज्ञानी है। जिसने जाना नहीं वही 'अस्ति' 'नास्ति' के भ्रम में जीता है। जिसने जान लिया वह आत्म–वत ही हो जाता है। उसका अज्ञान जनित भ्रम भी मिट जाता है कि क्या है ?और क्या नहीं है। वह ऐसा भी नहीं कहता कि ईश्वर एक है, जीव उससे भिन्न है, या सभी आत्माएं ईश्वर हैं आदि। ये सब विचार हैं जो मन के ही कारण उठते हैं। आत्म–ज्ञानी में विचारों की तरंगे उठती ही नहीं। सब शान्त हो जाता है। कहने वाला बचता ही नहीं। ज्ञानी भी कर्म करता है किन्तु उसमें फल की आकांक्षा की वासना नहीं रहती। वह कोई शिकायत भी नहीं करता है। जो है या हो रहा है उसी में वह सन्तुष्ट है। वह सब बंधनों से मुक्त हो अपनी आत्मा के स्वभाव में जीता है।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## श्री गुरु–कृपा संस्मरण

(१)

बचपन से ही मेरे दिल में आध्यात्मिकता की ओर झुकाव व अपने बुजुर्गों एवं अध्यापको के प्रति बहुत सम्मान था। आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण होने तक प्रयाग विश्वविद्यालय की हिन्दी साहित्य में प्रथमा, मध्यमा परीक्षाएं तथा गीता प्रेस गोरखपुर की रामायण की प्रथमा, मध्यमा परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने का सौभाग्य मुझे मिला, जिसका पूर्ण श्रेय मेरे पूज्य अध्यापकों द्वारा प्रदत मार्गदर्शन व प्रेरणा थी। 11 वीं कक्षा में आते ही मुझे एक हमारे गणित के लेक्चरर श्री धनप्रकाश गुप्ता जी का अत्यन्त, स्नेह, सानिध्य व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। वे सफेद धोती व खड़ाऊ पहनते थे व प्राचीन समय के ऋषि मुनियों की तरह सीधा–सादा, सरल व सात्विक जीवन व्यतीत करते थे। मुझे ऐसा लगता था कि जैसे वे मेरे मन की हर बात जानते थे। संयोग से ऐसा हुआ कि उनका चयन एक व्याख्याता के पद पर एक सरकारी कॉलेज नहान (हिमाचल प्रदेश) में हो गया और 1959 ई. में वे चमड़िया कॉलेज फतेहपुर छोड़ कर नहान चले गये। जाते वक्त वे मुझे एक किताब 'Guru & Disciple' पर To my best student लिखकर यादगार रूप में दे गये। उनके जाने पर मैं एकान्त में बहुत रोया करता था। उनकी मुझे बहुत याद आती थी। उनके स्नेह व गुरुवत प्रेम को मैं भुला न पा रहा था कि इसी दौरान परम श्रद्धेय श्री श्रद्धानाथजी महाराज के सुन्दर व सुखप्रद दर्शनों का लाभ फतेहपुर के उत्तर में बालू रेत के टीलों में पाकर मैं कृत'कृत्य हो गया और उन्हें आध्यात्मिक गुरु स्वीकार कर लिया जिससे मेरे जीवन को एक लक्ष्य, एक दिशा व एक विशाल वट–वृक्ष की ओट मिल गई। ऐसे लगा मानो मुझे सर्वस्व मिल गया, मुझे मेरे गुरु, इष्ट व भगवान मिलगये। मेरी अआत्मा में बड़ा शकून व विश्राम मिला। तब से उनकी कृपा से मेरे जीवन में उनके चरणकमलों की मधुर याद व आत्मिक शान्ति बनी हुई है। उनकी कृपा रूपी व्रद हस्त मेरे सिर पर वैसा का वैसा बना हुआ है। परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज अपने गुरु स्थान श्री अमृतनाथजी महाराज की समाधि, श्री अमृततााश्रम फतेहपुर को सर्वोच्च तीर्थ मानते थे, अतः वे रमते घूमते इस पुण्य तीर्थ के दर्शन करने आते रहते थे, विशेषतौर पर महाशिवरात्रि व विलक्षण अवधूत श्री अमृतनाथजी महाराज की पुण्य निर्वाण तिथि (समाधि दिवस) के वार्षिक समारोह पर जो आश्विन शुक्ला शरद पूर्णिमा के दिन पड़ता है। इस दिन सम्बत 1973 में विलक्षण अवधूत श्री अमृतनाथजी महाराज ने अपना पार्थिव शरीर त्याग कर बह्य समाधि ली थी। परम पूज्य श्री श्रद्धानाथजी महाराज इस 'बरसोदी' के महोत्सव से दो चार दिन पहले ही पधार जाते व बरसोदी के दो चार दिन बाद तक यहीं श्री अमृताश्रम में विराजते थे तथा सुबह–शाम आश्रम से उत्तर दिशा में बालू रेत के टिलों

में रमने घूमने जाते थे। मैं वर्ष 1959 में देहाती छात्रावास जो फतेहपुर के उत्तर में चुरू रोड पर स्थित है, उसमें रहता था। हमारे छात्रावास के कुछ छात्रों ने उधर उत्तर–पूर्व में स्थित बालू के टीलों में एक दिन श्री श्रद्धानाथजी महाराज के दर्शन किये व वहीं उनका सत्संग लाभ छात्रों को मिला। उन छात्रों से वार्तालाप के दौरान श्री बाबाजी महाराज ने पूछा कि तुम्हारे होस्टल में सब से अच्छा लड़का कौन है, उन बच्चों के मुख से संयोगवश मेरा नाम निकल गया तो श्री बाबाजी महाराज ने उन्हें कहा कि "कल उसे बुला कर लाओ" शाम को उन विद्यार्थीगण ( बीबीपुर गाँव का कानसिंह, ढ़ाँढ़ण गांव के हरिबक्स, हरिप्रसाद, पन्ने सिंह व शिशुपाल आदि) ने आकर मुझसे कहा कि "तुम्हें कल एक बाबाजी ने बुलाया है।" इस पर मैने कहा कि ' मैं तो किसी बाबाजी को नहीं जानता'। दूसरे दिन शाम को वे लड़के लोग टिलों में फिर बाबाजी महाराज के पास चले गये परन्तु मैं उनके साथ न जाकर कुछ समय पीछे से देखने गया कि ये लोग कहाँ जाते हैं। आगे टीलों मे जाकर देखा तो श्रद्धेय श्री श्रद्धानाथजी महाराज एक ऊँचे टीले पर दक्षिण की ओर अपना श्री मुख किये हुए सामने गोल चन्द्राकार में बैठे विद्यार्थियों से बातें कर रहे थे। मैं भी चुपचाप जाकर उन लड़कों के पीछे बैठ गया। उस वक्त अनायास ही कोई गुरु–शिष्य प्रकरण चल पड़ा तो मैं पीछे से बोल उठा कि आजकल पहले वाले जैसे गुरु कहाँ हैं तो श्री बाबाजी महाराज ने कहा कि पहले वाले जैसे शिष्य भी कहाँ हैं। इस पर मैने स्वाभिमान रखते हुए कहा कि शिष्य तो मिल सकते हैं, तो श्री बाबाजी महाराज ने कहा कि अगर शिष्य मिल सकते हैं तो गुरु भी मिल सकते हैं।इस प्रसंग के चलते–चलते सूर्यास्त हो चला था, सब विद्यार्थीगण उठकर धीरे–धीरे वहाँ से छात्रावास की ओर आ गये, परन्तु मैं अकेला ही श्री बाबाजी महाराज के पास बैठा रह गया। मेरे मन में श्री बाबाजी महाराज के प्रति अनायास ही प्रेम उमड़ने लगा। श्री बाबाजी महाराज ने वहाँ से चलते वक्त मुझे रात को सबके सोने के बाद एकान्त में कुछ समय अकेले बैठने को कहा। मैने रात्रि में ठीक वैसा ही किया जैसा उन्होंने मुझे आदेश दिया था। सुबह टिलों में मैं फिर सूर्योदय से पहले ही श्री बाबाजी महाराज के पास पहुँच गया। उन्होंने मुझ से रात्रि में हुए अनुभव के बारे में पूछा तो मैंने बता दिया कि हां ऐसा अनुभव हुआ है। इस पर श्री बाबाजी महाराज ने कहा कि अब बोल गुरु मान रहा है कि नहीं। मैने सहर्ष हां कह कर उनके श्री चरण पकड़ कर उनका शिष्यत्व स्वीकार कर अपने आपको सौभाग्यशाली समझा। इस घटना के बाद मुझे कभी यह महसूस नहीं हुआ कि परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज मेरे से कहीं दूर हैं। मैं हमेशा उन्हे अपने आप से भी ज्यादा नजदीक अनुभव करता रहा हूँ। जीवन में न जाने कितने उतार–चढ़ाव आये परन्तु श्री नाथजी महाराज ने सदैव अपने बच्चे की भांति संभाले रखा है। 1971 ई. में भारत–पाक युद्ध में कई बार हवाई हमलों में व तोपों के बरसते गोलों में तथा कई भयानक दुर्घटनाओं में श्री बाबाजी महाराज ने

अपना रक्षा कवच बनाये रखा। जीवन के हर मोड़ पर उनकी कृपा से सही समय पर सही प्रेरणा मिलने से हर परिस्थिति में सफलता मिलती रही है। हर घटना का विवरण करना तो मुशिकल काम है। वर्ष 1960 में चमड़िया कॉजेल फतेहपुर से इन्टरमीडियट (साइंस) करके मैने नवलगढ़ पोद्दार कॉलेज से 1962 ई. में बी.एस.सी. पास की। नवलगढ़ में उन दिनों श्री नवानाथजी महाराज सांगानेरियों की बगीची में विराजते थे। वे एक वचन सिद्ध महापुरूष तथा श्री श्रद्धानाथ जी महाराज कि पुज्य वचन गुरु थे। अतः श्री श्रद्धानाथजी महाराज रमते घूमते श्री नवानाथजी महाराज के पास दर्शनार्थ आते ही रहते थे। परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज का जब नवलगढ़ पधारने का समाचार मिलता, मैं तुरन्त शाम को उनके पास सांगानेरियों की बगीची में पहुँच जाता। श्री नवानाथ जी महाराज के पास जब भी दर्शनार्थ जाना बनता, वे गोंद के लड्डू और खीर खूब खिलाते। मै दो साल (1961,1962) यादगार होस्टल नवलगढ़ मे रहा। कई बार श्री बाबाजी महाराज नवलगढ़ यादगार होस्टल में शिव मन्दिर के सामने सीमेंट की बनी हुई बेंचों पर ही रात्रि में विश्राम करते और मुझे उनका सानिध्य सहज में ही प्राप्त हो जाता। कई बार पोद्दार कॉलेज के सामने पसारिया हाऊस था जिसमें विद्याथिर्यों के पास श्री बाबाजी महाराज रात्रि विश्राम करते। मैं रात भर वहीं पसारिया हाऊस में श्री बाबाजी महाराज के पास रह जाता। नवलगढ़ से 5 कि.मी. दक्षिण–पश्चिम कौने में पोसाणी गांव है, जहाँ धर्मशाला के एक कमरे में श्री बाबाजी महाराज जब भी पोसाणी पधारते, उस कमरे में रहा करते थे। मुझे उनके पोसाणी पधारने का समाचार मिलता तो शाम को मैं भी वहीं धर्मशाला में पहुँच जाता। आदरणीय श्री चुनीलालजी पटवारी ने पोसाणी धर्मशाला में परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज की बहुत सेवा की। आने जाने वाने सेवक भक्तों के लिए भी भोजन व्यवस्था श्री चुन्नी लाल जी ही करवाते थे। श्री चुन्नी लालाजी उम्र में श्री बाबाजी महाराज से बड़े थे, परन्तु वे श्री बाबाजी महाराज को अपना आध्यात्मिक गुरु, श्री बाबाजी महाराज के भगवां वस्त्र धारण करने से पहले से ही मानते थे। श्री चुन्नीलालजी पटवारी एक बहुत सिद्धान्त वादी, सच्चे समाजसेवी व श्री नाथजी महाराज के परम विश्वासी सेवक एवं भक्त थे। लछमनगढ़ आश्रम बनने से पहले श्री बाबाजी महाराज विवेकानन्दजी की तरह गांव–गांव, ढ़ाणी–ढ़ाणी घूमकर युवा पीढ़ी व शिक्षित समाज जैसे डॉक्टरों, इंजिनियरों, अध्यापकों, व्याख्याताओं व प्रिंसिपलों से मिल मिलकर उन्हे एक प्रेम के सूत्र में पीरोया व आत्म बल रखते हुए सच्चा खरा मानवता पूर्ण और आस्तिकतामय जीवन जीना सिखाया। न जाने कितनों के कर्म काटे, कष्ट व व्याधियां मिटाई, जीवन–दान दिया, दीन–दुखियों को धन–धान्य व बांझों को पुत्र दिये। कैसी लीला थी, कैसा प्रेम व उदारता भरा दिल था श्री नाथजी महाराज का। श्रद्धालुओ के लिए तो उनकी सत्ता आज भी वैसी ही है।

गर्मियों की छुट्टियों में जब मैं पढ़ता था तब एवं फौज में 1963 ई. में अफसर बनने के बाद, मैं श्री बाबाजी महाराज के साथ साथ शेखावाटी के गांवों व कस्बों मे जाता क्योंकि मुझे श्री बाबाजी महाराज का सानिध्य बहुत अच्छा लगता था। हर वक्त, हर क्षण उनके साथ ही रहना चाहता था और वे भी अनायास ही इतने कृपालु थे कि छोटे बच्चे को जैसे मां सदैव साथ रखती है वैसे अपने साथ ही रखते थे। फौज की नौकरी की वजह से मेरे लिए समय की पाबन्दी थी, छुट्टी समाप्त होते ही वह प्रेम व आनन्द भरा साथ छोड़ कर ड्यूटी पर चला जाता, परन्तु मन सदा उनके चरण कमलों की मधुर याद में ही लगा रहता। 1973 की बात है मैं सिकरन्दराबाद (हैदराबाद) में मिलिट्री कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग में एक एडवान्स्ड कम्यूनिकेशन इन्जीनियरिंग (एमटेक के समतुल्य) 18 महिने का कोर्स कर रहा था मैं उस वक्त कैप्टेन था, सुबह–सुबह दही का नाश्ता करके कॉलेज स्कूटर पर जाता था।एक दिन रास्ते में कॉलेज जाते जाते स्कूटर पर ही नीन्द आ गई परन्तु स्कूटर चलता रहा। मेरे से आगे कोई फौजी जवान साइकिल पर जा रहा था, उसे पीछे से मेरे स्कूटर की टक्कर लगी, उसकी साइकिल टूट गई और वह जवान पता नहीं कैसे साइकिल से उछलकर मेरे स्कूटर पर सामने के पहिये के मड–गार्ड पर मेरी तरफ मुंह करके आ बैठा। परन्तु स्कूटर फिर भी चलता रहा, उस जवान ने चिल्लाना शुरू किया, साहब रोको, रोको। आवाज सुनकर मेरी आँखें खुली तो उस जवान को सामने मड–गार्ड पर मेरी ओर मुंह किये बैठा देख। मैने उससे पूछा "आप कैसे इस तरह स्कूटर पर आ बैठे तो उसने कहा कि "कैसे नहीं बता पाऊँगा क्योंकि मुझे भी पता नहीं है परन्तु इतना जरूर है कि आपके स्कूटर की पीछे से मेरी साईकिल के टक्कर लगने से ऐसा हुआ है। मेरी साइकिल टूट गई है।" जो पीछे करीब 30–40 मीटर पर पड़ी दिखई दी। मैने पूछा "तुम्हे तो चोट नहीं आई तो जवान ने कहा 'कोई खास नहीं', थोड़ी सीने में अन्दर चोट लगी है। मैने अपनी जेब में हाथ डाला और कुछ रूपये जवान को साइकिल की मरम्मत के लिए दिये और कहा कि मरम्मत में और पैसे लगें तो मेरे से आकर ले लेना। मैने मेरा क्लास रूम का पता दे दिया। यह एक ऐसी घटना है जिसको पढ़कर हरेक को ही अचम्भा होता है कि ऐसा कैसे हो गया। मेरे को खुद को अचम्भा होता है, नींद में स्कूटर कैसे सही चलता रहा, स्कूटर गिरा कैसे नहीं। यह सब खेल श्री नाथजी महाराज का है, वे कुछ भी कर सकते हैं।

एक और घटना है 1982 की। मैं सीक्यूए आई रायपुर, देहरादून में काम करता था परन्तु मैं 21–ई.सी रोड़ देहरादून से सुबह–साढ़े आठ बजे के लगभग 6 किलोमिटर स्कूटर से रायपुर जाता था, रायपुर रोड़ उस समय बहुत खराब हालत में थी और ट्राफिक भी उस रोड़ पर बहुत था। रायपुर भट्टों के पास सड़क काफी संकड़ी थी और सड़क के दोनो तरफ बड़े–बड़े पत्थरों के ढ़ेर लगे हुए थे। सामने से एक जीप बहुत तेजी से आ रही थी। मैने बचने के लिए थोड़ा साइड में भी

जाने की कोशीश की परन्तु जीप वाले ने इतनी जोर से टक्कर मारी कि पता नहीं मैं कैसे स्कूटर से टक्कर लगने से उछलकर 7–8 मीटर दूर जाकर गिरा। मैं आर्मी वर्दी में था। मुझे देख आसपास के लोग इक्ट्ठे हो गये। मेरा स्कूटर पूर्णतया कचूमर होकर जीप के पूरा नीचे फंसा हुआ पड़ा था। मुझे एक सरदारजी ने जल्दी से जल्दी उनके स्कूटर पर बैठा कर अस्पताल पहुँचाया जहाँ से एम्बूलेन्स से आर्मी असप्ताल में ले गये। परन्तु इतनी भयंकर दुर्घटना में मुझे कोई खास चोट नहीं आई। एक मामूली सा हेयर लाइन करैक बायें पंजे की अन्तिम अंगुली वाली हड्डी मे हुआ जो थोड़े ही दिनों मे ठीक हो गया। श्री नाथजी महाराज ने साक्षात् यमराज के मुंह में जाने से मुझे बचा लिया। मुझे हवा में से जमीन पर गिरते वक्त परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के भगवां वस्त्रों की झलक सी पड़ी, ऐसा लगा जैसे उन्होंने मुझे अपने हाथों से गेन्द की भांति पकड़कर जमीन पर धीरे से छोड़ा। मुझे जमीन पर गिरना बिल्कुल याद नहीं है, मैने तो अपने आपको खड़ा ही पाया।

परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के किन, किन उपकारों का वर्णन करूँ–

सात समद की मसी करूँ, लेखनी सब बनराय,
धरती सब कागद करूँ, हरि गुण लिख्या न जाय।

मेरे जीवन का हर क्षण, हर मोड़ उनकी कृपा और उपकारों से भरा हुआ है। अगर श्री बाबाजी महाराज मुझे गुरु रूप में नहीं मिलते तो पता नहीं जीवन में कहाँ कहाँ दर दर की ठोकरे खाता फिरता। आज जीवन में मुझे जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, वह सब सिर्फ परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज की कृपा से ही मिला है, मेरे जीवन में जो भी शान्ति और उल्लास है सो सब श्री नाथजी महाराज की कृपा का ही फल है। परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के शरीर छोड़ने से पूर्व मैने कोई छुट्टी चाहे दो दिन की हो या दो महिने की कभी श्री बाबाजी महाराज से दूर नही बिताई। घर परिवार व रिश्तेदारों के लिए कभी भी दो–तीन घण्टे से ज्यादा समय नहीं देता था। मैं सर्विस के दौरान ट्रांसफर पर जहाँ जहाँ गया, श्री बाबाजी महाराज वहीं वहीं हमें संभालने कम से कम एक बार साल में और कई बार तो दो बार साल में पधारते रहते और लगभग एक एक महिने विराज कर हमें सेवा का मौका देते। सर्व प्रथम 1968 आश्विन कृष्णा चतुर्दशी को अम्बाला पधारे। श्री जवाहर सिंह मील (मिर्जवास) साथ में थे। इस दौरान श्री बैजनाथजी (कोठयारी से), श्री निवासजी (कोठयारी से), श्री नारायण (भदड़वास) दर्शनार्थ आये। एक एक हफते रूक कर रवाना हो गये। रिशालदार सवाईसिंजी हिरना, कैप्टेन भीमसिंह शेखावत व उनके बहुत सारे फौजी साथी शाम को दर्शनार्थ आते रहते। इस दौरान आसौज सुदी पूर्णिमा को कुरुक्षेत्र में सूर्यकुण्ड में स्नान भी करने गये। मैं साथ ही गया था। करीब एक महिने अम्बाला विराजने के बाद श्री बाबाजी महाराज हरिद्वार गंगा स्नान करने के पश्चात वापिस राजस्थान प्रस्थान कर गये। फिर जुलाई में जब मैं मिलिट्री

कॉलेज पूणे में इंजीनियरिंग में डिग्री कोर्स कर रहा था तो श्री बाबाजी महाराज बम्बई से कार द्वारा पूणे पहुँचे। साथ में सेठ प्यारेलाल सांगानेरिया आये थे। प्यारेलाल जी 3–4 दिन ठहर का वपिस बम्बई चले गये। श्री बाबाजी महाराज लगभग एक महिना ठहर कर वापिस बम्बई होते हुए शेखावाटी (राजस्थान) पधार गये। पूणे में भाई नारायण (भदड़वास), घासी (तासर), रामचन्द्रजी (कोलिण्डा का बास) आदि कई गुरु भाई श्री बाबाजी महाराज के दर्शनार्थ आते रहते। इसी दौरान श्री बाबाजी महाराज ने 'ऊँ अलख निरंजन स्तुति' व अनमोल वचन आदि की रचना की और मुझे डायरी में लिखवाया। मेरे कई दोस्त (आर्मी अफसर) श्री बाबाजी के दर्शन कर व बातचीत करके बहुत प्रभावित हुए और कहने लगे; 'ये बाबाजी तो सब कुछ जानते हैं, त्रिकालज्ञ हैं।'

1973 में 15 फरवरी से 25 फरवरी तक मेरे वार्षिक अवकाश के दौरान मुझे श्री बाबाजी महाराज के साथ सीकर (राजस्थान) से गोरखपुर, सीतामंडी, जनकपुर धाम व नेपाल की राजधानी काठमण्डू की यात्रा करने का अवसर मिला। वापिस आते हुए अम्बाला पहुँचे। श्री बाबाजी महाराज अम्बाला से दिल्ली होते हुए वापिस ल्छमनगढ़ पहुँच गये।

21 जून 1973 को श्री बाबाजी महाराज सिकन्दराबाद पधारे। मैं सिकन्दराबाद में एडवांस कोर्स कर रहा था। भाई मालीराम बिजारणिया साथ में था, उन्होंने सिकन्दराबाद से 3 जुलाई को तिरूपति बालाजी के लिए प्रस्थान किया। तत्पश्चात 9 सितम्बर को एक सप्ताह के लिए फिर श्री बाबाजी महाराज सिकन्दराबाद पधारे, जब वे कन्याकुमारी की यात्रा पर गये। कन्याकुमारी से वापिस आते वक्त भी करीब सप्ताह भर सिकन्दराबाद ठहर का 30 सितम्बर को जयपुर के लिए रवाना हुए इस बार भाई गोपाल साथ में था।

इस तरह मैं जहाँ भी ट्रांसफर पर या कोर्स पर गया, श्री बाबाजी महाराज वहीं हमें संभालने व सेवा का मौका देने जरूर पधारे। नीचे संक्षेप में समय व शेष स्थानों का विवरण है:–

| क्र.सं. | स्थान | पधारने की तारीख/समय | विराजने की लगभग अवधि |
|---|---|---|---|
| 1. | जम्मू | अक्टूबर 1974 | तीन सप्ताह |
| 2. | जम्मू | अक्टूबर 1975 | तीन सप्ताह |
| 3. | देहरादून | अप्रेल 1976 | चार सप्ताह तक |
| 4. | देहरादून | अक्टूबर 1976 | तीन सप्ताह तक |
| 5. | देहरादून | मई 1977 | चार सप्ताह तक |

6. देहरादून–1978 से 1982 तक मई–जून महिने हर साल एक महिने के लिए पधारते थे।

7. देहरादून–1983 मई के अन्त में पधारे व 4–5 दिन विराज कर ऋषिकेश के लिए रवाना हुए। उस समय मेरी ड्यूटी वरणगांव महाराष्ट्र में लगी हुई थी।

8. देहरादून 14 जून से 27 जून 1985 तक विराजे, देहरादून से रवाना होते वक्त मुझे व मेरी धर्म पत्नी नन्दा को स्पष्ट संकेत दिया कि 'बेटा अब तुम ही आना। तुमने जहाँ जहाँ नौकरी की वहाँ वहाँ आना हुआ। तुमने जो जो सोचा श्री नाथजी महाराज ने वैसे ही तुम्हारे लिए किया, अब इस शरीर से दुबारा आना नहीं होगा। तुम ही आते रहना। खुश रहना, श्री नाथजी महाराज को याद रखना'।

9. मेरी 11 अगस्त 1985 से महू में ड्यूटी लगी थी, सो वहाँ जाने से पूर्व मैं रास्ते में तीन दिन लक्ष्मणगढ़ आश्रम में रुक कर श्री बाबाजी महाराज की सेवामें रहा। 19 अगस्त को भाई लाला ने मुझे महू फोन किया कि श्री बाबाजी महाराज ने आपको जल्दी पहुँचने के लिए याद किया है। उस वक्त मैं सुबह बाथरूम में दाढ़ी बना रहा था। तुरन्त दाढ़ी बनाकर बिना छुट्टी लिये ही जैसे ही मैस से बाहर निकला तो सामने सड़क पर तेजी से कार आई, मैने कार रोकने के लिए इशारा किया तो ड्राईवर ने कार रोकी। मैने पूछा मुझे जल्दी ट्रेन पकड़ने के लिए इन्दौर पहुँचना है। उन्होने कहा कि वे इन्दौर ही जा रहे हैं। मैं कार में बैठ गया। इन्दौर में आते ही ट्रेन मिल गई और जयपुर पहुँच गया। वहाँ से बस से 20 अगस्त को सुबह 11 बजे सीधा लक्ष्मणगढ़ आश्रम पहुँचा।

10. मैं जैसे ही आश्रम के दरवाजे पर पहुँचा, भाई सुभाष ने मुझे सीधा ही परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के पास चलने का इशारा किया तो मैं सब सामान वहीं दरवाजे पर छोड़ पीछे श्री बाबाजी महाराज के कमरे में पहुँच कर उनके श्री चरण कमलों में गिर पड़ा। श्री बाबाजी महाराज ने बैठे होकर मुझे सीने से लगाकर मां की भांति बहुत प्यार किया। मुझे ऐसे लगा मानो मेरे सारे कर्म कट गये। अपार शान्ति, प्रेम व आनन्द की वर्षा रूपी बादल मानों मेरे पर फूट पड़ा। मैं नतमस्तक हो सुन्न सा मूर्तवत बन गया उनका अगाध प्रेम व आशीर्वाद पाकर, हालांकि उसके बाद श्री बाबाजी महाराज ने अपने शरीर में चेतना बनाये रखी, परन्तु किसी से बात नहीं की। दिन भर हजारों सेवक–भक्तों व श्रद्धालुओं का तान्ता दर्शनार्थ लगा रहा। 20 अगस्त की रात अर्थात 21 अगस्त की बह्मवेला में सुबह साढ़े तीन बजे भाई सुभाष के हाथ से एक चमच पानी पीकर श्री बाबाजी महाराज ने अपना भौतिक चोला छोड़ दिया और सदा के लिए ब्रह्मलीन हो गये। इस तरह से मुझे उनके शरीर के अन्तिम साढ़े सोलह घण्टों के लिए उनके चरण कमलों में माथा टिकाये रखने का अवसर उनकी महान कृपा से मिला और मैं कृत'कृत्य हो गया उनका यह आशीर्वाद पाकर। परन्तु यह दृश्य बड़ा ही हृदय द्रावक था, एक तरह का वज्र पात सा हुआ, जिस दिव्य शरीर के माध्यम से हम सेवक–भक्तों के ऊपर श्री बाबाजी महाराज इतने हास्य विनोद व प्रेम के साथ कृपा व आनन्द की

वर्षा करते रहे, वह भौतिक शरीर की लीला श्री गुरुदेव ने क्षणों में ही समेट ली। अब तो उस परम पवित्र दिव्य शरीर के सानिध्य में बिताये उन आनन्द के क्षणों की, उनके श्री चरणकमलों की मधुर याद में ही यह जीवन बीते, यही मनोकामना है। श्री नाथजी महाराज हम सब श्रद्धालु गुरु भाइयों, पर अपनी कृपा से पूर्ववत् शान्ति, प्रेम और आनन्द की वर्षा करते रहें, यही उनके चरण कमलों में प्रार्थना है।

ब्रिगेडियर(सेवा निवृत) लक्ष्मण सिंह कुलहरी

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

श्री नाथजीमहाराज की असीम कृपा से मुझे परमे श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के साथ जुड़े मेरे अनुभवों को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बाल अवस्था से ही माता–पिता के संस्कार और प्रभु कृपा से अध्यात्म की ओर रूख था किन्तु गुरु के सानिध्य से मैं वंचित था जिसकी वजह से एक सही आध्यात्मिक राह नहीं मिल पा रही थी। बड़े–बुजुर्गों से सुना था कि समर्थ गुरु अपना शिष्य स्वयं खोज लेते हैं। 1971 की बात है, उन दिनों मैं जयपुर के मालवीय रीजनल इन्जिनिरिंग कॉलेज का छात्र था। एक रात स्वप्न में मुझे एक साधु महाराज के दर्शन हुए, जिन्हे मैने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था परन्तु उनकी वह झलक एक बेहद सुखदायी अनुभव रहा। इस दृष्टान्त के करीब 5–6 दिन बाद मेरा अपने एक प्रोफेसर श्री मूलसिंहजी के घर जाना हुआ और वहाँ मैने उन्हीं साधु महाराज की तस्वीर देखी जिनके कुछ इिन पहले मुझे स्वप्न में दर्शन हुए थे। मूलसिंह जी ने उनका परिचय अपने गुरु श्री श्रद्धानाथजी महाराज के रूप में करवाया। मेरी जिज्ञासा को देखते हुए उन्होंने कहा कि वे अगले दिन, शुक्रवार की शाम को बाबाजी से मिलने जा रहे हैं और मैं भी उनके साथ चलूँ। अगले दिन हम जयपुर से सीकर के लिए रवाना हुए। उन दिनों बाबाजी रमणी करते थे, उनका कोई निश्चित स्थन नहीं था। परन्तु सीकर में पोषाणी वालों के ढ़ाबे पर उनके विचरण की सही जानकारी रहती थी। अतः मूलसिंहजी ने वहीं से पता किया कि बाबाजी लक्ष्मणगढ़ में हैं। लक्ष्मणगढ़ पहुँच कर स्टेशन से करीब 2 कि.मी. दूरी पैदल तय करके रात्रि में 11 बजे हम बाबाजी के पास पहुँचे। जैसे ही मैने धोक प्रणाम किया बाबाजी ने कहा " आ भाई मालूराम, तुझे कितने दिनों से याद कर रहा हूँ।" यह सुनकर मैं हतप्रभ रह गया। मेरा रोम–रोम पुलकित हो उठा, आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे और मुँह से कोई शब्द नहीं निकल रहा था–मुझे मेरे गुरु महाराज मिल गये। बाबाजी के आदेश से श्री घनश्यामजी व्यास ने हमें भोजन करवाया तत्पश्चात् बाबाजी ने मुझे अपने पास बिठाया और श्री मूलसिंहजी को सो जाने का आदेश दिया। बाबाजी तो परमहंस थे, अंतरयामी थे, उन्होंने मेरे मन में चल रही सभी दुविधाओं का निवारण किया और मुझे सही मार्गदर्शन दिया। मध्यरात्रि के समय उन्होंने मुझे सोने का आदेश दिया। उन दिनों आप छतरियों (शमशान भूमि) पर विश्राम करते थे और मैं वहाँ सोने से झिझक रहा था क्योंकि बचपन से ही मुझे पग–पग पर प्रेत आत्माएँ नजर आती थीं। कृपालु बाबाजी महाराज ने मेरे डर को भाँप लिया और कहा कि " जा हनुमानजी का नाम लेके सोजा आज के बाद तुझे कभी उस तरह प्रेतात्माएं दिखाई नहीं देंगी, तुझे कभी डर नहीं लगेगा।" वह दिन और आज का दिन बाबाजी महाराज की कृपा से मुझे फिर कभी इन भूत प्रेतों का डर नहीं रहा।

वैसे तो जीवन में बहुत सारी ऐसी घटनाएँ घटी जिनके बारे में आपने समय–समय पर पूर्वाभास करवा दिया था, किन्तु दो चार अनुभव ऐसे हैं जो अविस्मरिणीय हैं। उन दिनों मैं अपने दोस्त अजीत सांघी के साथ रह रहा था। एक बार मेरा मंगलवार का व्रत था सो शाम को प्रार्थना करके भोजन के लिए बैठा तभी अजीत ने हठ किया आज तो मैं बाबाजी महाराज के दर्शन करके ही भोजन करूँगा। उसके मन में काफी दिनों से उथल पुथल मच रही थी कि उसे साधु बनना है। बहुत समझाने पर भी जब वह नहीं माना तब हम दोनों जयपुर से स्कूटर पर रात्रि के 9 बजे लक्ष्मणगढ़ (जहाँ महाराज का आश्रम बन चुका था) के लिए रवना हुए। जयपुर से लक्ष्मणगढ़ की दूरी 145 कि.मी. है और यह निश्चित था कि हम आधी रात से पहले वहाँ नहीं पहुँच सकते थे। रास्ते में एक जगह रास्ता काफी खराब था और अंधेरे में ठीक से दिखाई ना देने के कारण हम स्कूटर सहित एक गहरे गड्ढे में गिर गये परन्तु बाबाजी की कृपा से हमें खरोंच तक नहीं आई। मध्यरात्रि के करीब जब हम आश्रम में पहुँचे तो क्या देखते है कि बाबाजी महाराज हाथ में घोटा लिए आश्रम के द्वार पर उसी प्रकार खड़े थे जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चों का बेचैनी से इन्तजार करती है। हमें देखते ही थोड़ा क्रोधित होते हुए अपने चिरपरिचित अंदाज में बोले, " ये कोई आने का समय है? ना तो खुद पड़ते हो (सोते हो) और ना दूसरों को पड़ने देते हो। तुम्हारा क्या बिगड़ता, कुछ हो जाता तो नाम तो नाथजी का ही खराब होता।" ये कह कर वे आश्रम में जाने लगे और हम दोनों, बिना कुछ कहे, सिर झुकाए, उनके पीछे–पीछे चल पड़े। अंदर पहुँचने पर आपने आदेश दिया, उसे सुनते ही मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि आपको जब भी कोई शिष्य प्रेम से, निष्ठा से याद करता है, आप उसके बारे में सब कुछ जान जाते हैं। आपने कहा, " हाथ मुँह धोकर भण्डारे में जाओ, दो थालियों में भोजन ढ़क कर रखा है, जाओ खा लो'। वैसे ये आश्रम के नियम के विरूद्ध है किन्तु नाथजी महाराज अपने आश्रम में किसी को भूखा कैसे सोने दे सकते हैं।" ऐसा स्नेह था बाबाजी का अपने बच्चों पर। भोजन के बाद बाबाजी ने मुझे सोने का आदेश दिया और अजीत को अपने पास बिठा लिया, पूरी रात अपने पास ही बिठाये रखा। सुबह नहा धोकर प्रार्थना करने और कलेवा करने के बाद हम दोनों बाबाजी के पास जाकर बैठे तो बाबाजी ने कहा " मालूराम तू तो वापिस जा और अपनी पढ़ाई कर, अजीत तो अब मेरे पास ही रहेगा और हम दोनों एक साथ प्रभु का भजन करेंगें।" बाबाजी ने यह बात इस तरह आदेशात्मक कही कि अजीत आपके चरणों में झुककर रो पड़ा और कहने लगा "महाराज मुझसे गलती हो गई। मुझे समझ आ गई कि साधु बनना और साधुत्व का निर्वाह करना बहुत ही कठीन है, मुझे माफ करे।" बाबाजी ने आशीर्वाद दिया " अजीत तुझे जीवन में सब कुछ मिलेगा और तेरे भाव नाथजी महाराज के प्रति हमेशा अच्छे

रहेंगे परन्तु उतार चढ़ाव चलता रहेगा।" बाबाजी महाराज ने हम दोनों को वापिस जयपुर जाने और मन लगा कर पढ़ने की हिदायत दी।

दूसरी घटना 1973 की है जब मैं इन्जिनियरिंग के चौथे साल में था। मुझे यूरीनरी इनफेक्शन हो गया था जिसके कारण पेशाब में खून आने लगा था और मैं बहुत वेदना में था, काया बिल्कुल कंकाल हो चुकी थी। जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में मैं भर्ती था जहाँ मेरा ईलाज चल रहा था। एक दिन सुबह 4 बजे के करीब ऐसा आभास हुआ जैसे श्री बाबाजी महाराज मेझे बुला रहे हैं और कह रहे हैं कि अस्पताल छोड़ दे और आश्रम आ जा। यह आभास मुझे सत्य लगा और मैंने अपने दोस्त के नाम पर्ची लिखी कि मैं बाबाजी के पास जा रहा हूँ और तकिये के नीचे रख दी, और चुपचाप अस्पताल छोड़ दिया। रिक्शे में बैठकर सिंधी कैम्प बस अड्डे पहुँचा। जहाँ से सुबह 5 बजे जयपुर–बीकानेर एक्सप्रेस रवाना होने वाली थी, मैं उसमें बैठ गया और कंडक्टर से निवेदन किया कि मेरे पास केवल 5 रूपये हैं और लछमनगढ़ जाना है। कंडक्टर ने पूछा कहाँ जाना है? तब मैने बताया कि स्टेशन के पास नाथजीमहाराज का आश्रम है, वहीं जाना है, तो उसकी आँखों में चमक आगई और कहा कि मैं तुम्हे छोड़ दूँगा। वह व्यक्ति जिनका नाम सवाई सिंह था बाबाजी महाराज का शिष्य था। बाबाजी की कृपा से उसे दया आगई और मुझे उसने आश्रम के नजदीक रोड़ पर उतार दिया। मैने आश्रम पहुँचकर हाथ मुँह धोकर बाबाजी को प्रणाम किया। इस समय तक मुझे तेज बुखार हो गया था। आपने आदेश दिया कि नहा धोकर प्रार्थना कर लो। मैने ऐसा ही किया, उसके बाद आपके आदेश से दूध जलेबी (छाछ और सूखी रोटी) का नाश्ता किया। मेरा मुँह दवाईयों के कारण गला हुआ था, बहुत मुश्किल से खा पाया। इसके बाद भी बाबाजी ने कुछ नहीं पूछा और मुझे पेड़ों में पानी डालकर उनकी सेवा करने को कहा। करीब दो घण्टे में मेरा बुखार उनकी कृपा से अपने आप उतर गया। शाम को प्रार्थना के बाद आपने पूछा, " क्या तुम ठीक होना चाहते हो? " मैने हां भर दी। आपने कहा तो फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ और नाथजी महाराज का नाम लेकर हम यदि जहर भी दें तो लेना होगा" मैने हाँ करदी। आपने मुझे कुछ खाने को दिया जिसे मैने पानी के साथ लिया जिसके बाद मेरे शरीर में जलन शुरु हो गई। बाबाजी ने पुजारी जी (श्री चेतन नाथ जी) को बुला कर कहा इसे मतीरा खिला कर सुला दो। मेरे शरीर में असहनीय जलन हो रही थी फिर भी मैने बाबाजी की आज्ञा का पालन किया। बहुत दिनों के बाद मुझे रात्रि में अच्छी नींद आई। सुबह पेशाब करते वक्त बहुत तकलीफ हुई और काफी मात्रा में बारीक बजरी खून और मवाद के साथ निकली । मेरा वह दिन ठीक निकला। शाम को फिर प्रार्थना के बाद आपने कहा " थोड़ी बहुत तकलीफ है वह भी ठीक हो जायेगी, परन्तु आज फिर वही प्रयोग करना होगा।" बाबाजी ने फिर से कुछ पाउडर दिया जो मैंने

पानी के साथ ग्रहण किया। उसके दूसरे दिन मुझे बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं हुई। इसके बाद मेरा स्वास्थ्य तेजी से सुधरने लगा और पाँचवें दिन आपने मुझे एकान्त में बिठाकर कुछ नियम बताये और शर्त रखी कि " तू इस बारे में जब तक मैं जिन्दा हूँ किसी को नहीं बतायेगा, अन्यथा बुरा होगा। श्री नाथजीमहाराज में तुम्हारे विश्वास के कारण ही तुम ठीक हुए हो। बाबाजी ने कहा कि दो चार दिन गांव में जाकर मां बाप के पास रहो और उसके बाद जयपुर चले जाना और ठीक से पढ़ना क्योंकि बीमारी के कारण तुमहारा बहुत समय बर्बाद हो गया है। उस वर्ष कॉलेज में मेरा तीसरा स्थान रहा। बाद में मुझे डॉक्टर से पता चला कि मेरी किडनी में गांठें बनी हुई थी जिसकी वजह से दोनों गुर्दे फेल हो चुके थे, और भारत में उस वक्त उसका कोई ईलाज नहीं था। मेरे गुरु महाराज की कृपा से मुझे यह नया जीवन मिला। बाबाजी को दिये गए वचन की अनुपालना मैंने 1986 तक की और कभी किसी को इस घटना के बारे में नहीं बताया।

इसके अलावा 1984 में वसाई क्रीक में रेलवे के पुल निमार्ण के दौरान रात्रि को निरीक्षण के समय वैल फाउन्डेशन से बाहर निकलकर जब फलौटिंग पैन्टून पर उतर रहा था तो लाइट रिफलेक्शन के कारण कुए और पैन्टून के बीच की ऊँचाई का सही अन्दाजा नहीं लग पाने से पैन्टून के मुख्य होल में करीब 20 फुट नीचे जा गिरा। गिरते समय मुझे ऐसा आभाष हुआ जैसे किसी ने मेरे हाथ पकड़े हों और मुझे सहमते हुए गिरने दिया। हालांकि पेट में अन्दरूनी काफी चोटे आई परन्तु श्री बाबाजी महाराज की कृपा से मैं अपने आप बाहर तो निकल गया, परन्तु उसके बाद 48 घण्टे बेहोश रहा। उस बेहोशी में श्री बाबाजी महाराज की कृपा से मेरा ऐसा पोश्चर अपने आप बना कि अन्दर की ब्लीडिंग रूक गई और डेढ़ घण्टे बाद जब डॉक्टर के पास पहुँचा तो डॉक्टर ने कहा कि उस पोश्चर से ही तुम्हारी ज़ान बची है।

श्री बाबाजी महाराज ने मुझे कदम कदम पर बचाया, आगाह किया। सारी घटनाओं का विवरण करना तो मुश्किल काम है, परन्तु श्री बाबाजीमहाराज ने मुझ पर इतनी कृपा की है कि मेरे पास बखान करने के लिए शब्द नहीं हैं। श्री बाबाजी महाराज साक्षात भगवान थे, त्रिकालज्ञ थे, उनकी शक्ति असीम थी वे आज भी हाजिर हैं, सब कुछ करने में सक्षम हैं। मेरा उनको कोटि कोटि नमन है।

मालूराम चौधरी

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

सर्वप्रथम सन् 1965 मार्च माह में जब मैं एम.काम.(पूर्वार्द्ध) में पढ़ रहा था, बापूनगर जयपुर में परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज के दर्शन लाभ का सौभाग्य मुझे युनिवर्सिटी रोड पर हुआ। शाम का समय था श्री बाबाजी महाराज चार–पाँच विद्यार्थियों के साथ पैदल जा रहे थे। साधु–भेष के प्रति श्रद्धा भाव होने के कारण मैने उनको नमस्कार किया तो उन्होंने मुझे रात्रि में सुलतान रूहेला के मकान पर आने को कहा। किन्तु उस रात मैं नही जा सका। उसके बाद नवम्बर 1965 में मैं जिस मकान में रह रहा था उसी में श्री बाबाजी महाराज अचानक आ पधारे। मैं उस समय एम. काम.(उत्तरार्द्ध ) में पढ़ रहा था। मेरे साथ एक और विद्यार्थी मुकन्दगढ़ निवासी रहता था जो शायद श्री बाबाजीमहाराज से पहले से ही परिचित था। परन्तु श्री बाबजी महाराज पहले सीधे ही मेरे कमरे में आये और विराज गये। उन्होंने बताया कि वे तो उस मुकन्ददगढ़ वासी छात्र से मिलने आये हैं, लेकिन उन्होंने उस लड़के से तो दो मिनट ही बात की और फिर मुझे अपने साथ चलने को कहा। मैं उस समय पायजामा व बनियान पहने नंगे पैरों था, परन्तु मैं वैसे का वैसा बिना कुछ सोचे समझे व ड्रेस का खयाल किये बिना उनके साथ चल पड़ा। लगभग आधा किलोमीटर मंगल मार्ग पर श्री बाबाजी महाराज के एक सेवक की लकड़ी चीरने की आरा मशीन , व लकड़ी की टाल (दुकान) थी, उस पर जाकर मैं श्री बाबाजी महाराज के सामने बैठ गया। मुझे वह दिन याद है, 23 नवम्बर को श्री बाबाजी महाराज ने एक प्रतिज्ञा पत्र पर मेरे हस्ताक्षर लिए और उस दिन से श्री बाबाजी महाराज ने मुझे अपने शिष्य के रूप में अपना लिया।

उसके बाद सन् 1965 मई महिने में श्री बाबाजी महाराज मेरे गांव बख्तावरपुरा पधारे। रात्रि में उन्होंने बाबा नाथूराम की कुटिया में विश्राम किया। वहीं कुटिया में मेरे को बुलवाया तो मैं रात्रि दस बजे तक श्री बाबाजी महाराज के पास सत्संग मे रहा और दूसरे दिन प्रातः श्री बाबाजी महाराज बख्तावरपुरा से पैदल झुंझुनू के लिए रवाना हो गये। 5–10 रोज बाद मैं श्री बाबाजी महाराज के दर्शनार्थ जब पोषाणी पहुँचा तो उन्होंने बताया कि तेरे लिए 20 किलो मीटर पैदल चल कर आया। श्री बाबाजी महाराज न तो विद्यार्थियों से यात्रा के लिए टिकट कटवाते, न ही विद्यार्थियों का खाना खाते और न ही रुपया–पैसा कभी छूते व पास में रखते। सदैव पूर्ण त्याग–वैराग्य वृति में ही रहे। मेरा विशेष लगाव इस तरह श्री बाबाजी महाराज के पास पोषाणी दर्शनार्थ पहुँचने के बाद ही हुआ। उनकी कृपा से उसके तुरन्त बाद ही मेरी नौकरी लक्ष्मणगढ़ तोदी कॉलेज में व्याख्याता के रूप में लग गई। तत्पश्चात् जब भी श्री बाबाजी महाराज लक्ष्मणगढ़ पधारते, मैं सुबह और शाम दोनों वक्त उनके श्री चरण कमलों के दर्शनार्थ जाता। 1966 के अन्त में चर्खी दादरी (हरियाणा) में एक कॉलेज में व्याख्याता पद के लिए साक्षातकार के लिए जाने का मानस बनाया,

परन्तु जब श्री बाबाजी महाराज के पास अनुमति लेने गया तो उन्होंने मना कर दिया और कहा कि ' लक्ष्मणगढ़ में ही रहो। यहीं पर तुम्हे पूरा मान–सम्मान मिलेगा। उनकी असीम कृपा से मैं आज प्रिंसिपल पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद भी इसी तोदी महाविद्यालय में काम कर रहा हूँ और शुरू से लेकर अब तक एक ही क्वार्टर में उनके आशीर्वाद से मान–सम्मान से ही रह रहा हूँ। श्री बाबाजी महाराज ने मुझे एक चारपाई, एक रजाई व एक गद्दा भरवाकर दिया जो उनकी मधुर स्मृति के रूप मेरे पास आज भी सही सलामत है । उनकी मुझ पर असीम कृपा रही है।

मैं आश्रम बनने से पहले चुड़ीवालों की छतरियों में दर्शनार्थ जाता था और बाद में आश्रम में। यदि कभी न जाना पड़ता तो दुबारा जाने पर श्री बाबाजी महाराज कहते बहुत वर्षों बाद आये। इस तरह मायत की भांति उनका स्नेह और प्यार मैं जब भी दर्शनार्थ गया, मुझे मिला और वही मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर बनती गई। आश्रम में जब भी प्रसाद बनता, मैं अक्सर पहुँच ही जाता। श्री बाबाजी महाराज प्यार से कहते, 'तेरे को सुगन्ध आती है क्या'। मैं अगर सुबह चला जाता तो मुझे शाम तक आने की अनुमति नहीं देते। शाम की प्रार्थना के बाद 10–11 बजे तक उनके चरणों में बैठा रहता। अस़ल में मेरा भी आने का मन ही नहीं करता था। उनके पास इतना स्नेह औ प्यार मिलता जितना एक मां अपने बच्चे को नहीं दे सकती। उन्ही की कृपा व आशीर्वाद से यह जीवन पूर्ण शान्ति से व्यतीत हुआ है और हो रहा है। मेरे पास उनकी कृतज्ञता जाहिर करने के लिए शब्द नहीं हैं। ऐसा लगता है जैसे वे मेरे प्राणों में समाये हुए हैं, व मेरे प्राणधार हैं। मैं उन्हे कोटि कोटि प्रणम करता हूँ।

एक बार मैं एक साल तक बीमार रहा। टोंसिल, बुखार व पेट की खराबी एक साथ हुई जो मिटाई मिटी नहीं। डॉक्टरों का खूब ईलाज करवाया परन्तु कोई स्थायी निदान नहीं हुआ। उन्हीं दिनों श्री बाबाजी महाराज देहरादून श्री लक्ष्मणजी के यहाँ पधारे हुए थे। मैं भी दर्शनार्थ वहाँ पहुँच गया। दो–तीन दिन रहने के बाद जब वापिस रवाना होने लगा तो श्री बाबाजी महाराज ने पूछा 'तेरे क्या तकलीफ हो रही है। मैने अपनी बीमारी के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि अब वापिस लक्ष्मणगढ़ पहुँचते ही गनेड़ी वाले वैद्य श्री मोहनलाल जी से सीतोपलादि चूर्ण शहद के साथ ले लेना और उनसे कहना एक और कोई चूर्ण दे देंगे। मैं लक्ष्मणगढ़ पहुँचकर तुरन्त गनेड़ी गया और वैद्यजी को यह बात बताई तो उन्होंने कहा कि अब आप ठीक होगये हैं। मेरे पास से दवाई लेना तो एक बहाना है क्योकि श्री बाबाजी महाराज कोई चीज का श्रेय सीधा अपने ऊपर नहीं लेते । इसलिए इस कृपा के लिए मुझे माध्यम बनाया है। मैने वैद्य जी से दवाई ली और तुरन्त ठीक होगया। कैसा मधुर प्यार भरा तरीका था उनका कृपा करने का।

आश्रम की नींव का शिल्यानास जब हुआ तो आश्रम तक पहुँचने को कोई रास्ता नहीं था। नींव का पाया आश्रम की जमीन की सीमा पर था। उस समय मैने श्री बाबाजी महाराज से पूछा कि आश्रम में कैसे रहेंगे और आश्रम तक बिना रास्ते के कैसे पहुँचेंगे। उन्होंने उत्तर दिया श्री नाथजी महाराज की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। तत्पश्चात् जिस पण्डितजी ने जमीन देने से मना कर दिया था उसी ने एक घटना घटने के कारण जमीन आश्रम के लिए अपने आप बेच दी। घटना इस प्रकार है कि उसका इकलौता बेटा एक महिने से टाईफाइड से पीड़ित था। एक दिन अर्द्धरात्रि में उसने अपने पिता को जगाया और कहा कि वह जमीन प्यारी है या मेरी जिन्दगी। पिता ने कहा कि बेटा तेरी जिन्दगी के सामने वह जमीन कुछ भी नही है तो पुत्र ने उस जमीन का बेचान आश्रम को करने को कहा क्योंकि आपने आश्रम के शुभ काम के लिए जमीन देने से मना कर अच्छा काम नहीं किया। बेचान के तुरन्त बाद श्री नाथजी महाराज की कृपा से वह लड़का स्वस्थ हो गया तथा कुछ दिन बाद उसकी नौकरी भी लग गई।

एक बार सीकर जिलाधीश श्री परमेश चन्द्रजी श्री बाबाजी महाराज के दर्शनार्थ आश्रम आये। उन्होंने श्री बाबाजी से पूछा कि आपने यह भगवां भेष क्यों लिया। श्री बाबाजी महाराज ने जबाब दिया कि जहाँ से आपको क्लेक्टर बनने का आदेश हुआ है वहीं से हमारा भगवां वस्त्र धारण करने का आदेश हुआ है। जैसे मेरा आज के दिन यहाँ लक्ष्मणगढ़ में विराजने का आदेश है तो मैं लक्ष्मणगढ़ आश्रम में हूँ। यहाँ से और कहीं जाने का आदेश होगा तो और कहीं रम जायेगें। आप आज सीकर में हैं कल आपके लिए जयपुर जाने का आदेश हो जाये तो आपको जयपुर जाना पड़ेगा। क्लेक्टर जब सीकर वापिस पहुँचे तो उनके जयपुर स्थानांन्तरण के आदेश सीकर पहुँच चुके थे। दूसरे दिन कलक्टर वापिस आश्रम आये और बाबाजी महाराज को बताया कि मेरा तो जयपुर स्थानान्तरण का आदेश हो गया है। श्री बाबाजी महाराज ने कहा कोई बात नही, जयपुर, जा आओ। वे जयपुर ट्रान्सफर पर गये परन्तु दो साल बाद पुनः सीकर के जिलाधीश बन कर आ गये। उसके बाद जिलाधीश जी आश्रम के पक्के भक्त बन गये और दर्शनार्थ आत रहते।

इसी तरह एक बार सीकर एस.पी. शाम को आश्रम में दर्शनार्थ आये थे। उन्होंने जैसे ही श्री बाबाजी महाराज को नमस्कार किया तो बाबाजी ने कहा कि ' सीकर ही तो नानी को नानेरो थोड़ो ही है'। एस. पी. साहब को समझ में नहीं आया तो उन्होंने श्री बाबाजी महाराज से पूछा तो साथ वालों ने एस.पी. साहब को चुप रहने को बोला। उसी रात उनका ट्रान्सफर सीकर से कहीं और हो गया।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो परम श्रद्धेय श्री बाबजी महाराज की कृपालुता, सर्वज्ञता, सर्वसामर्थ्यता व उनके निस्वार्थ प्रेम का परिचय देते हैं। वे साक्षात ईश्वर रूप थे, लेकिन किसी को

इस बात का आभास तक नहीं होने देते। ऐसे सन्त महापुरूष की शरण पाकर हम लोग कृतार्थ हो गये। इनकी महिमा का बखान करना मेरी शब्द शक्ति से बाहर है।

मुरारीलाल कटेवा

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

मेरा अहोभाग्य है कि मेरा जन्म श्री बाबाजी महाराज की तपोभूमि लक्ष्मणगढ़ में हुआ। मैं आठवीं कक्षा में था, उस समय शाखा में जाया करता था। शाखा चूड़ीवालों की छतरियों में लगा करती थी। उन दिनों श्री बाबाजी महाराज रमते हुए जब भी लक्ष्मणगढ़ आते, तब वहीं विश्राम करते। एक दिन शाम के समय श्री बाबाजी महाराज के पास सभी स्वयंसेवक दर्शन करने गये। उनमें मैं भी उनके साथ था। श्री बाबाजी महाराज ने मखाने का प्रसाद देकर और सभी को भेज दिया परन्तु मुझे बैठने को बोला। उस समय अंधेरा हो रहा था, श्री बाबाजी महाराज ने बोला, घनश्याम व्यास के यहाँ से लालटेन ले कर आयेगा क्या? मैंने हाँ में जबाव दिया। श्री बाबाजी महाराज ने बोला गोला मत फोड़ देना। परन्तु वहाँ जाकर जब लालटेन का गोला उतारने लगा तो गोला फूट गया। मैं भाग कर बाजार से नया गोला अति शीघ्रता से लाकर श्री बाबाजी महाराज के सम्मुख उपस्थित हुआ। श्री नाथजी महाराज ने मुस्कराते हुए बोला, 'गोला फोड़ दिया ना'। उसी समय ही मुझ पर श्री बाबी महाराज की असीम दया दृष्टि हो गई। थोड़े समय बाद ही लक्ष्मणगढ़ में आश्रम की स्थापना हो गयी। मैं हर रोज आश्रम की ओर खींचा चला जाता और शाम की प्राार्थना में पहुँच जाता। यह सब राथजी महाराज की कृपा ही थी। तभी से श्री नाथजी महाराज की हमारे परिवार पर भी असीम कृपा रही। श्री बाबाजी महाराज ने मेरे पिताजी, मेरे पुत्र व स्वयं मेरे को काल के मुंह से निकाल कर जीवन दान दिया। घटनाएं इस प्रकार हैं:—

मेरे पिताजी सन् 1988 में सीकर एस.के. हॉस्पीटल में भर्ती थे। उनके लीवर में एबसिस होगई थी जिसकी वजह से उनकी हालत बहुत खराब थी। डॉक्टर ने कहा भगवान से प्रार्थना करो क्योंकि इस स्टेज में ठीक होना मुश्किल है। शाम को आश्रम में मैं श्री बाबाजी महाराज के पास बैठा हुआ था, श्री बाबाजी महाराज ने अपने आप ही बिना मेरे कुछ बताये ही बोला, 'उदास क्यों होता है, हिम्मत रखनी चाहिए, श्री नाथजी महाराज सब ठीक करेंगे। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने अपने पिताजी के बारे में श्री नाथजी महाराज को कुछ भी नहीं बताया था, फिर भी उन्हें सब पता था और उनकी कृपा से मेरे पिताजी शीघ्र ही स्वस्थ होगये।

1976 में मेरे भाई की शादी थी। उस समय मैं अत्यधिक बीमार होगया था, बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, डॉक्टर ने भी उम्मीद छोड़ दी थी। जब रात को तबीयत अधिक खराब हो गई तो छोटा भाई रमेश श्री बाबाजी महाराज के पास सुबह 4 बजे ही आश्रम पहुँच गया व श्री बाबाजी महाराज को बताया कि सुशील भाई की तबीयत ज्यादा खराब है। श्री बाबाजी महाराज ने बोला 'जा रिछपाल डॉक्टर को दिखा दे'। डॉक्टर सुबह 8 बजे आया व उनकी दवाई लेने के साथ ही मैं एक दम ठीक हो गया। 10 बजे उठ कर बाहर आ गया, 10 दिन से बगैर खाये पीये मेरे अन्दर

इतनी हिम्मत आ गई थी कि मैं बाहर आकर घूमने लगा। घर वाले मना कर रहे थे व आश्चर्य भी कर रहे थे।

सन् 1996 में मेरे लड़के गौरव को डेंगू हो गया था, डॉक्टरों ने भी जबाब दे दिया था। खून व प्लेट लेट जो चढ़ाया जा रहा था, सफल न होने से, उसे बन्द कर उतार दिया गया। श्री महाबीर जी पारीक बैड की दूसरी तरफ मुँह करके रो रहे थे, गौरव अचैत अवस्था में पड़ा था, मैं और श्री मालूरामजी तीन दिन से लगातार गौरव के पास ही थे, स्नान भी करने को समय नहीं मिल पाया था। अतः जब स्नान करने गये हुए थे, उसी वक्त हम दोनों को दिल में बैचेनी का एक झटका सा लगा व भाग कर हॉस्पिटल पहुँचे तो वहां पर गौरव की नाजुक स्थिति व महाबीर जी को रोते देख कर दुःख के मारे आवाक रह गये। उसी समय मुझे श्री नाथजी महाराज की झलक गौरव के सिर के पास दिखाई दी। मैने महाबीर जी से बोला कि अब गौरव को कुछ नहीं होगा, श्री नाथजी महाराज आ गये हैं। गौरव कुछ देर मे ही ठीक हो गया। डॉक्टर व नर्स को भी आश्चर्य हुआ तथा ब्लड व प्लेट लेट उसी समय वपिस चढ़ाना शुरू कर दिया। श्री नाथ जी महाराज की कृपा से गौरव शीघ्र ही स्वस्थ हो गया और इस तरह उसे एक नया जीवन मिला।

मेरा छोटा भाई रमेश बंगलोर में सर्विस करता था। वहाँ उसका सम्पर्क प्रजापति ब्रह्मकुमारी संस्था से हो गया। उस समय उसकी यह स्थिति थी कि वह प्रजापति पंथ के अलावा किसी और बात को सुनना भी नहीं चाहता था, उन्ही के बताये मार्ग पर चलता था। उस समय मैं श्री बाबाजी महाराज के पास प्रार्थना के समय रमेश को लेकर गया। रमेश के बारे में श्री बाबाजी महाराज को भी नहीं बताया फिर भी प्रार्थना समाप्त होने के बाद श्री बाबाजी महाराज ने रमेश को बोला कि तुम्हारे परिवार के श्री नाथजी महाराज से जुड़ा रहने पर भी तुम ब्रह्मकुमारी प्रजापति में कैसे चले गये। श्री बाबाजी महाराज के समझाने पर भी वह नहीं माना, तब श्री नाथजी महाराज जो दया के सागर हैं उनको उस पर दया आगई व हँसते हुए मुझे कहा, 'आज के बाद रमेश को कोई कुछ भी नहीं कहे व न ही उसे कोई समझाने की कोशीश करे। यह कुछ साल बाद अपने आप ठीक हो जायेगा, अच्छा कमायेगा व शादी भी कर लेगा'। श्री बाबाजी महाराज का आदेश मान कर हमने इस विषय में उस से कोई बात नहीं की। रमेश धीरे धीरे ठीक हो गया। अच्छा कमाने भी लग गया व शादी भी हो गई। यह सब श्री नाथजी महाराज की असीम कृपा का ही फल है।

श्री बाबाजी महाराज के पास बैठने व दर्शन करने का जो आनन्द आता था, उसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। मैं सोचता रहता कि श्री बाबाजी महाराज को मैं ऐसे ही देखता रहूँ व उनके मुख से निकलते हुए हर शब्द को सुनता रहूँ जो आनन्द से विभोर कर देते थे। हर समय उनके पास 10–20 दर्शनार्थी बैठे ही रहते थे। उनकी समस्याओं को उनके कहे बिना ही दूर करते

रहते थे। श्री बाबाजी महाराज के पास बैठने पर समाधि जैसी स्थिति हो जाती थी व हर पल आनन्द की अनुभूति होती थी।

एक बार किसी गाँव से दो आदमी अपने साथ एक औरत को लेकर आये, उसकी गोद में 4 महिने की बच्ची थी, वे श्री बाबाजी महाराज को बोले, महाराज बच्ची की मां के दूध नहीं आता है। यह बच्ची भूखी मर जायेगी। उस समय कई आदमी श्री बाबाजी महाराज के पास बैठे थे। श्री बाबाजी महाराज मुस्कराने लगे व सभी से पूछा क्या भैंस को डण्डा मारने पर वह दूध देती है, सभी ने नां में उत्तर दिया। श्री बाबाजी महाराज ने बोला इस औरत की इन दोनों ने भैंसवाली स्थिति कर रखी है। उन दोनों को डांटा, बोले तुम इसको बोलते हो 'लड़का पैदा करती!' लड़की क्यों पैदा की। तुम्हारे भाग्य में लड़की ही है तो यह लड़का कहाँ से पैदा करेगी। इस औरत को मारा मत करो। इसकी सेवा किया करो, अच्छा खिलाओ व प्रेम किया करो। श्री बाबाजी महाराज ने उस औरत को बाई बोल कर सम्बोधित किया। वहीं पर वह औरत प्रेम से गद्–गद् हो गई,। लड़की दूध पीने लगी, औरत के स्तनों में दूध आगया। मीठे बोल व प्रेम की शक्ति को श्री बाबाजी महाराज ने दर्शाया। वे दोनों आदमी व औरत महाराज को प्रणाम करके बड़े प्रसन्नचित हो गये।

इसी प्रकार एक दिन श्री बाबाजी महाराज दोपहर 2 बजे बैठक में सेवकों के साथ बैठे थे। उस समय श्री सालासर धाम के एक पुजारी आये, उन्होने बोला महाराज 'मैं श्री सालासर बालाजी के प्रसाद के पेडे लेकर आया हूँ'। श्री बाबाजी महाराज अति प्रसन्न हुए व बोले 'ला भैया बाबा का प्रसाद सभी को देंगे। अपने हनुमानजी के मन्दिर में भी सालासर बाबा बैठे हैं, जाओ दर्शन करके आओ, उसके बाद सबको प्रसाद देंगे'। पुजारी जी पीछे मन्दिर में गये उनको हनुमानजी की मूर्ति में श्री सालासर बालाजी के दर्शन हुए। पुजारी जी बहुत अचम्भित हुए और आकर नाथ जी महाराज को बताया व आकर उनके श्री चरणों में गिर पड़े।

एक बार एक साधु अपने आपको अहं ब्रह्मास्मि बोलता हुआ आया और बातचीत के दौरान श्री बाबाजी महाराज को बोला के मैं ब्रह्म हूँ। मैने कांच पीस कर पीया है, मैने बहुत कठीन योग साधना की है। महाराज उसकी बातों पर मुस्कराते रहे। 5–6 दिन आश्रम में रहने के बाद जब वह साधु जाने लगा, उस समय श्री नाथजी महाराज ने उसको उपदेश दिया कि तूं अभी कहाँ ब्रह्म बना है, तू तो बोलता है, शरीर धारी है। ब्रह्म में कोई आवाज नहीं होती, न ही प्रकाश होता है, ब्रह्म होने पर तो सृष्टि में विलिन हो जाता है जैसे मिट्ठी का डला (टुकड़ा) पानी में डालने पर पानी में विलीन हो जाता है। उसका कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। उस समय वह ब्रह्म को प्राप्त होता है। तुम्हें अभी ब्रह्म बनने का भ्रम हुआ है, बने नहीं हो। इसलिए कड़ी तपस्या व योग करो। झूठा ब्रह्म बनने में कोई सार नहीं है। साधु को बाबाजी महाराज का उपदेश समझ में आ गया। उसने बोला

महाराज मैं सब जगह घूम आया परन्तु आपके दर्शन अब हुए हैं। मेरी आँखे खुल गई। मैं अब आपके पास ही रहना चाहता हूँ। आप मेरे गुरु बनो। श्री बाबाजी महाराज ने समझाया कि अब तुम यहाँ से जाओ, कहीं और एकान्त मे अपनी साधना करो। यहाँ तो दर्शनार्थियों का आना जाना बहुत है।

इसी प्रकार एक बार एक अन्य साधु जो दिल्ली युनिवर्सिटी का वाईस चान्सलर था, बाद में साधु बना और फिर साधु समाज का सैकेट्री बना। वह 80 साल के करीब उम्र का था, श्री बाबाजी महाराज के पास आया व आश्रम में एक सप्ताह के लिए रुका। वह दिन में किसी से बात नहीं करता था, मौन व्रत धारण कर रखा था। हाथ के इशारे से लिख कर बातें करता था। रात के समय एक टाईम भोजन करता था। दिन में सभी अखबार सीकर से मंगवाकर पढ़ता था। एक सप्ताह बाद जब वह जाने लगा तो सुभाष जी ने श्री बाबाजी महाराज को बोला महाराज इस साधु को अहम् अधिक है, इसका अहम् दूर करो। श्री बाबाजी महाराज ने उसको पास बुला कर उपदेश दिया व समझाया, इस मन को तूं क्यो मारता है, तेरी इच्छा करती है 'मैं इन लोगों से बाते करूँ' पर तूं इस बात से डरता है कि मेरा मौन टूट जायेगा, ऐसा कयों करता है? तेरा मन खाने को करता है, भूख लगी है, तू सोचता है, रात होने पर खाऊँगा, दिन भर अखबार पढ़ता रहता है, राम का नाम कब लेता है, झूठा साधु बना फिरता है। अब आखिरी समय आ गया है। साधु बड़ा पश्चताया व श्री नाथजी महाराज के चरणों में गिर गया व बोला आप ही मेरे गुरु हो। मेरे को अपनी शरण में लो, आखरी समय में मैं आपके चरणों में आपके पास ही रहना चाहता हूँ। श्री बाबाजी महाराज ने समझाया व कहा; यह साधु समाज का सेकेट्री का चोला उतार कर अब हरिद्वार चले जाओ व छोटी कुटिया लेकर भगवान का भजन करो, तुम्हारा समय नजदीक आ गया है। साधु ने बार बार श्री बाबाजी महाराज के चरणों में प्रणाम किया और शाम को दिल्ली वाली ट्रेन मेरे साथ ही पकड़ी। रास्ते मे उसने श्री बाबाजी महाराज की बातों के अलावा और कोई बात नहीं की। वह बोला 'अपन अब गुरु भाई हो गये हैं, मेरे गुरु भी श्री नाथजी महाराज ही हैं'। वह हरिद्वार श्री बाबाजी महाराज के आदेश का पालन करता हुआ चला गया। इसी तरह श्री नाथजी महाराज सभी का उद्धार करते रहे। सभी भक्त जनों की इच्छा उनके कहने से पहले ही पूरी करते रहते।

एक बार एक बूढ़ा पण्डित जी आया व महाराज के पास बैढकर बोलने लगा, 'महाराज बड़ा दुखी हूँ, नीद नहीं आती'। श्री बाबाजी महाराज ने माला मंगवाई, और माला पण्डित जी को देकर बोले 'पण्डित जी ईश्वर का नाम लेकर माला फेरते रहो'। माला फेरने से पण्डितजी को 2 मिनट में ही नींद आ गई, माला हाथ से छूट कर नींचे गिर गई। बाबाजी ने किसी को माला उठाने का ईशारा किया। माला उठाली गई। श्री बाबाजी महाराज मुस्कराने लगे। हम सभी हँसने लगे। श्री

बाबाजी महाराज ने पूछा पण्डितजी! माला कहाँ है। पण्डित आश्चर्य करने लगे कि उसको कब नींद आई। श्री बाबजी महाराज ने समझाया कि पण्डितजी, भगवान का नाम लिया करो, चिन्ता व फालतू बातों में ध्यान मत दिया करो, मन से माला फेरा करो, नींद अपने आप आ जाया करेगी। पण्डितजी बार बार प्रणम करने लगा। इसी तरह की लीलायें करके श्री बाबाजी महाराज सभी को आनन्दित किया करते थे। उन की हर बात निराली थी, अनूठी थी व आनन्ददायक थी। वे होनी को अनहोनी में व अनहोनी को होनी में सहज ही बदल देते थे और किसी को पता भी नहीं लगने देते थे। अपनी लीला या चमत्कार को अपने ऊपर कभी नहीं लेते थे। श्री नाथजी महाराज का नाम लेते रहते कि वे ही करने वाले हैं। विद्वानगण श्री बाबाजी महाराज के पास अपने प्रश्न लेकर आते थे, उन्हे सहज भाव में ही समझा देते थे। दर्शनार्थियों को दर्शन कर बड़ा आनन्द आता था व सभी आगन्तुक यही सोचते थे कि श्री बाबाजी महाराज बोलते ही रहें। दर्शनार्थी बैठा है, उससे कोई मिलने आता, उसे पता भी नहीं होता, उस समय श्री बाबाजी महाराज उसे बोलते जा तेरे से कोई मिलने आया है, जा मिलकर आजा। दोनों को मिलने पर आश्चर्य होता था। कई बार दूर से आये बुजुर्ग आदमी बैठे होते, स्टेशन से गाड़ी व तांगे चले जाते, उस समय श्री बाबाजी महाराज बोलते ' भाग कर इनके लिए तांगा ले आ' उनको बस स्टेन्ड जाना है। हम सोचते इस समय तांगा कहाँ मिलेगा। परन्तु श्री बाबाजी महाराज की आवाज के साथ ही भाग खड़े होते व रोड़ पर सामने ही तांगा दिखाई दे जाता, जो वहाँ से जा रहा होता। कैसी अद्भुत लीलाएं श्री बाबाजी महाराज करते रहते। उन्हे मैं बार बार प्रणाम करता हूँ। श्री बाबाजी महाराज के समाधि लेने के कुछ समय पहले मैं ऑफिस कार्य से बम्बई गया था, मुझे बम्बई पहुँचे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था, तथा ऑफिस का काम शुरू भी नहीं हुआ था; उस दौरान दिल्ली से सेठ जी के पास फोन गया कि सुशिल को दिल्ली शीघ्र भिजवाओं क्योंकि बैंक से परेशानी हो रही है, इसलिए सेठ जी ने बम्बई हैड अकाउन्टेट को बोला, सुशील को शीघ्र दिल्ली भिजवाओ। उनका भेजने का मन नहीं था, फिर भी एक सप्ताह वास्ते मुझे दिल्ली जाने का आदेश मिला। मैं बम्बई से दिल्ली की टिकट लेकर ट्रेन में बैठ गया। सुबह सवाईमाधोपुर में दिल्ली जाने का विचार कैंसिल करके वहीं उतर गया और वहाँ से जयपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया जो रात में जयपुर पहुँची। जयपुर से रात को ही बस से लक्ष्मणगढ़ के लिए रवना हुआ और सुबह 3 बजे वहाँ पहुँचा। घर पर पहुँचा पर चैन नहीं पड़ी। उसी समय प्रातः 4 बजे नहाकर आश्रम पहुँच गया। आश्रम में सुबह आरती हो रही थी। मैं हमेशा आश्रम सुबह आठ बजे जाता था, उसी दिन 4 बजे पहुँचा। उस समय भाई लाला मिले। उन्होने बोला श्री बाबाजी महाराज 2 दिन से याद कर रहे हैं, दिल्ली फोन करवाने के लिए बोला, परन्तु तुम नहीं मिले, जाओ बाबाजी महाराज बुला रहे है। उसी समय मैं श्री बाबाजी महाराज के दर्शन

करने गया। श्री बाबाजी महाराज ने कहा तू आगया, बैठ जा। उस समय के प्रेम का मैं बखान नहीं कर सकता। मैं उस समय 10 दिन आश्रम रहकर दिल्ली गया और दिल्ली से लछमनगढ़ होता हुआ 20–25 दिन बाद बम्बई पहुँचा। परन्तु मेरे को इस समय के बारे में किसी ने कुछ नहीं पूछा कि तुम कहाँ थे। दिल्ली वालों ने सोचा बम्बई में है, बम्बई वालों ने सोचा दिल्ली में है। इस तरह यह श्री बाबाजी महाराज की असीम कृपा रही जिसकी वजह से उस समय मैं उनके शरीर के अन्तिम दिनों में दर्शन करने व आश्रम में सेवा–कार्य हेतु रह सका। हमारे गुरुदेव परम् ब्रह्म स्वरूप होते हुए भी साधारण मनुष्य की तरह व्यवहार करते रहते। मैं न्योछावर हूँ उनकी इन लीलाओं पर। उनके प्रेम की याद को कभी भूल नहीं सकता। वे प्रेमानन्द स्वरूप हैं, दयालु हैं। आज भी सब पर वैसे ही कृपा–दृष्टि बनाये हुए हैं।

सुशील पारीक

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

परम पूज्य श्री बाबाजी महाराज 17.7.1971 को श्री टोडाराम जी पूनिया के पास उदयपुर पधारे हुए थे। उन्होंने दिनांक 16.7.71 को दिल्ली फोन करके मेरी तबियत के बारे में पुछवाया। उस दिन मैं अस्पताल में अपेंडीक्स ब्रस्ट केस के रूप मे भर्ती होगया था और उस दिन ही एमरजेंसी केस होने के कारण मेरा ऑपरेशन भी हो गया था। फोन पर श्री बाबाजी महाराज को मेरे सेठ ने यह समाचार दे दिया। श्री बाबाजी महाराज उदयपुर से आगे यात्रा पर अहमदाबाद पहुँचे। 23.7. 1971 को मेरी हालत बहुत बिगड़ चुकी थी। श्री बाबाजी महाराज ने सेठ श्री देवीप्रसाद टिबड़ेवाला से फोन करवा कर मेरे समाचार मेरे सेठ जी से लिए। जब मेरी हालत अत्यधिक बिगड़ गई और अन्दर से मल घाव (सटिचेज) के थ्रू बाहर आने लगा और डॉक्टरों ने भी उम्मीद छोड़ दी तो मैने मन ही मन श्री बाबाजी महाराज से प्रार्थना की कि 'महाराज! अगर शरीर को रखना है तो इसे ठीक करो, मैं बहुत तकलीफ में हूँ, अब और सहा नहीं जा रहा है।' मुझे तीन दिन से नींद नहीं आ रही थी, सिर फटा जा रहा था, उस हालत में मेरे को श्री बाबाजी महाराज के अलावा कोई सहारा नजर नहीं आ रहा था, इसलिए दरख्वाश्त लगाई। उनकी कृपा से पता नहीं कैसे मुझे थोड़ी देर के लिए नीन्द की झपकी आई और उस दौरान परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज ने मुझे दर्शन दिये तथा मुझे हाथ पकड़ कर बैड से नीचे उतार कर खड़ा किया और वार्ड के बाहर निकाला। उतने में मेरी आँख खुल गई तो मुझे विश्वास हो गया कि 'अब ठीक हो जाऊँगा श्री बाबाजी महाराज ने मुझे संभाल रखा है।' इस घटना के तुरन्त बाद मेरे हालात अपने आप श्री बाबाजी महाराज की कृपा से सुधरने लगे और मैं 4–5 दिन में पूर्ण स्वस्थ हो गया। मेरे ठीक होने का डॉक्टरों को भी अचम्भा हुआ कि कैसे नाउम्मीद केस अपने आप सुधर गया। इस तरह मेरा यह जीवन श्री बाबाजी महाराज का दिया हुआ है, मेरे लिए यह नया जीवन है।

उपरोक्त घटना के छःमहिने बाद श्री बाबाजी महाराज जब अम्बाला से दिल्ली के लिए रवाना हो रहे थे, उस वक्त उनके साथ अम्बाला से दिल्ली तक कोई सेवक–भक्त साथ में नहीं था, अतः कैप्टेन लक्ष्मणसिंह जी ने मुझे इस बाबत सूचना देने के लिए अम्बाला से विद्याधर भूरिया को फोन करने की कोशीश की। संयोगवश उस वक्त मैं भी विद्याधर भूरिया को चान्दनी चौक दिल्ली से दिल्ली कैन्ट फोन लगा रहा था। परन्तु मेरा विद्याधर भूरिया से सम्पर्क नहीं हुआ और न ही भाई जी लक्ष्मण जी का विद्याधर से सम्पर्क हुआ, परन्तु श्री बाबाजी महाराज की कृपा से कैसे भाई लक्ष्मणजी और मेरा टेलिफोन जुड़ गया और भाई लक्ष्मणजी जो सूचना, श्री बाबाजी महाराज के दिल्ली पघारने के बाबत व बस का नम्बर और समय बताने हेतु विद्याधर के थ्रू मुझे देना चहते थे, वह सूचना श्री बाबाजी महाराज की कृपा से मुझे सीधी ही मिल गई।

श्री बाबाजी महाराज की कृपा व उनकी अद्‌भूत लीलाओं का कहाँ तक वर्णन करू, ऐसी मेरे जीवन में अनेकों और घटनाएं घटी हैं। वे अत्यन्त दयालु हैं, किसी न किसी रूप में दया करते ही रहते हैं। मेरा उनको बारम्बार प्रणम है।

शिशुपाल कुलहरी

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

समाज में साधु सन्तों का विशेष स्थान रहा है और साधु समाज को हमेशा ही दिशा दिग्दर्शन कराते रहते हैं। मनुष्य के जीवन में एक साधु का बहुत ही अहम् महत्व है। परन्तु आजकल सही साधु की पहचान बहुत ही मुश्किल है। बाबाजी श्री श्रद्धनाथजी महाराज जैसा साधु मिलना अति दुलर्भ है। समाज में साधुओं के बारे में कई तरह की चर्चायें सुनने को मिलती हैं और यदा–कदा अखबारों में भी छपती रहती हैं। इसलिये समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जो साधुओं को कोई तरजीह नहीं देता। अतः मुझे भी साधुओं में कोई विशेष रूची नहीं थी। मेरे पिताजी के भी विचार कुछ ऐसे ही थे। यद्यपि कभी–कभी किसी साधु की पुरानी चर्चा किया करते थे। परन्तु मेरी माताजी की साधु–सन्तों में बहुत श्रद्धा थी और माता जी बाबाजी श्री श्रद्धानाथजी महाराज और फतेहपुर बाबाजी श्री अमृतनाथ जी महाराज के आश्रम में दर्शनाथ जाती रहती थी।

मेरा ननिहाल लक्ष्मणगढ़ में है। एक बार मेरे पिताजी लक्ष्मणगढ़ गये हुए थे तो उन्हे वहां श्री बाबाजी महाराज श्री श्रद्धानाथजी के दर्शन करने का इत्तफाक हुआ। पिताजी जब दिल्ली आये तो उन्होंने श्री बाबाजी महाराज के बारे में चर्चा की और कहा कि बहुत अच्छे साधु हैं। इससे मेरे मन में भी श्री बाबाजी महाराज के दर्शन करने की इच्छा हुई और इसके बाद जब मेरा लक्ष्मणगढ़ जाना हुआ तो मैं भी श्री बाबाजी महाराज के दर्शन करने के लिए आश्रम में गया। श्री बाबाजी महाराज कमरे में तखत पर विराजमान थे और सामने कुछ आदमी बैठे हुए थे। मैने कमरे में घुस कर बाबाजी महाराज को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और मैं बैठने वाला ही था कि उससे पहले ही बाबाजी महाराज ने मुझे मेरा नाम पूछा। मैने नाम बताया तो बोले कि कहां से आया है? मैने बताया कि दिल्ली से आया हूँ तो बोले कि "कीं कै है"? मैने बताया कि मैं पन्ना लालजी का लड़का हूँ और मेरी मां मणी लक्ष्मणगढ़ की है। अठै मेरो नांदेरो है। तो बोले अच्छा मणी को बटो है, कंया है। मणी, पीरोतजी कंया हैं। मैने कहा 'सब ठीक है महाराज' और मैं बैठ गया। मैं सिर्फ दस–पन्द्रह मिनट बैठा और मेरी इच्छा हुई कि मैं चलूँ तो बाबाजी महाराज ने अपने आप ही कहा कि ले तो प्रसाद ले ले और मुट्ठी भर कर बतासे दे दिये और मैं चला आया। यह मेरी श्री बाबा जी महाराज से पहली मुलाकात रही। पता नहीं क्यों जब कि मैं वहां बहुत कम समय बैठा और परिचय देने के अलावा और कुछ भी बात चीत नहीं की मैने, फिर भी मुझे अच्छा लगा और मेरे मन में विचार आया कि अब मैं जब भी लक्ष्मणगढ़ आऊँगा बाबाजी महाराज के दर्शन करने आश्रम में जरुर आऊँगा। इसके बाद जब भी कभी मैं लक्ष्मणगढ़ जाता तो बाबाजी महाराज मां और पिताजी की कुशल क्षेम पूछते और मैं उन्हे प्रणाम करके बैठ जाता। यह सिलसिला बराबर ऐसे ही चलता रहा। बाबाजी

महाराज ने मुझे फिर कभी मेरा परिचय नहीं पूछा। मुझे लगता था कि बाबाजी महाराज की याद–दास्त बहुत अच्छी है, परन्तु अब महसूस होता है, जब लोग–बाग उनके बारे मे अपने–अपने किस्से सुनाते हैं कि बाबाजी महाराज सच्चे ब्रह्मज्ञानी साधु थे। वे त्रिकाल दर्शी थे। उन्हे सब के बारे में सब कुछ पता था। परन्तु समाज में रहते थे इसलिये एक सामाजिक की तरह व्यवहार करते थे वरना उनसे कुछ भी छुपा हुआ नहीं था।

सन् 1980 में मेरे मामाजी का स्वर्गवास हो गया तो मैं लक्ष्मणगढ़ आया और शाम तक सब निबटा कर खाना खाकर सीकर जाने के लिये स्टेशन के लिये चला तो रास्तें में बाबाजी महाराज के दर्शन करने के लिये आश्रम में गया। बाबाजी बाहर चौक में दूब में तखत पर विराजमान थे और सेवक दूब में बैठे थे। मैने वहां जाकर बाबाजी को प्रणाम किया और प्रसाद के वास्ते हाथ बढ़ा दिये तो बोले 'बैठ जा'। मैने कहा कि बाबाजी मुझे इस गाड़ी से सीकर जाना है। बोले 'बैठ जा' अभी गाड़ी आने में टाइम है। मैं जैसे ही बैठा तो बोले 'जीम ले'। मैं बोला बाबाजी मामाजी की ब्रह्मपुरी निबटा कर अभी खाना खाकर आया हूँ। बाबाजी ने दुबारा कहा "खा ले रे" मैने फिर मना कर दिया कि बाबाजी बिल्कुल भी भूख नहीं है। इतनी देर में अभयनाथ जी बाबोजी जिन्होने उस समय भेख नहीं लिया था बाबाजी के पास आकर खड़े हो गये। तीसरी बार बाबाजी ने अभयनाथजी को कहा कि इसे जीमा दे और मैं चुप–चाप उठकर अभयनाथजी के पीछे–पीछे चला गया और जाकर बैठ गया। अभयनाथजी थाली में दो फुलके और चावल व गुंवार फली की कढ़ी लाकर रख दी जो पुरी खुराक थी। मैने कहा कि मैं इतना नहीं खा सकूंगा। उन्होंने भी कह दिया –खा लोगे और वहां से चले गये। अब मेरे पास खाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। मैं खाना खाने लगा तो सारा खाना बहुत आराम से खा गया और पेट में भारीपन वगैरह भी कुछ महसूस नहीं हुआ। मैं आकर फिर बाबाजी के पास बैठ गया। थोडी देर बाद बाबाजी बोले ले प्रसाद ले ले तेरी गाड़ी का टाइम हो गया। मैं प्रसाद लेकर स्टेशन गया, टिकट ली और प्लेटफार्म पर पंहुचा तो सिगनल हो रहा था और गाड़ी आ रही थी मैने सोचा ठीक समय पर पहुंच गया। उस समय किसी बात का अहसास नहीं हुआ। क्योंकि मैं अपनी मैं में था कि जो कर रहा हूँ मैं ही कर रहा हूँ। इस समय मेरी वित्तीय स्थिति बहुत ही कमजोर थी। पैसे के लिये बहुत तंगी महसूस कर रहा था। आने के बाद बड़े लड़के ने बी.काम. कर लिया। मिल में अप्रेंटिस की जगह निकली थी। उसे वहां लगवाया। एक साल बाद उसके साथ के दूसरे अप्रेन्टिसों को हटा दिया गया और उसे रख लिया गया। इस पर भी मुझे कोई अहसास नहीं हुआ। फिर वह परमानेन्ट हो गया और मेरी आर्थिक स्थिति सुधर गई। तब तक भी मुझे कुछ अहसास नहीं हुआ। जब बाबाजी ने शरीर छोड़ दिया तब एक दिन अचानक ही मुझे अहसास हुआ कि यह सब जो हुआ वह सब बाबाजी महाराज के खाना खिलाने के बाद ही

हुआ है और उन्होंने इसी लिये इतना जोर देकर खाना खिलाया था कि इसका भी भला हो जाये। वे यह भी जान रहे थे के इसके बाद यह मेरे से नहीं मिल सकेगा। इसके बाद मेरी भावना बाबाजी के प्रति और ज्यादा बढ़ी और मैं प्रार्थना भी नित–नियम से करने लगा। फिर तो भावना बढ़ती ही गई और बाबाजी महाराज की कृपा भी एक के बाद एक होती रही। मेरी लड़की को 10 साल होगये थे बच्चा नहीं हो रहा था। जयपुर में प्रसिद्ध गायनोकोलोजिस्ट है जिसने कह दिया था कि बच्चा नहीं होगा परन्तु बाबाजी महाराज की कृपा ऐसी हुई कि उसे बच्चा हो गया, और मेरी पुत्र वधु को भी दो लड़कियां थी, उस पर भी महाराज की कृपा हुई और उसे भी लड़का हो गया। मेरे घर परिवार में और कितनी ही घटनाऐं जिन सबका लिखना संभव नहीं है। संक्षेप में यही है कि मैं तो मेरे घर–परिवार में जिधर देखता हूँ उधर बाबाजी महाराज की कृपा ही कृपा ही नजर आती है। सबसे बड़ी कृपा यह है कि मुझे शान्ति और सन्तोष मिल गया है। अतः मुझे कही भी कोई कमी नजर नही आती है। उनकी कृपा से मैं अपने परिवार सहित बहुत ही सुखी और आनन्द में हूँ।

मेरी बाबाजी महाराज से यही प्रार्थना है कि मेरे पर और मेरे परिवार पर अपनी कृपा दृष्टि ऐसे ही बनाये रखने की कृपा करें और हमारी भूल चूक माफ करने की कृपा करें।

महाबीर प्रसाद पारीक

कमलानगर दिल्ली

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

आदरणीय एवं परम पूज्य श्री गुरुदेव श्री श्रद्धानाथजी महाराज को शत् शत् बार प्रणाम। मेरा जीवन जब से प्रारम्भ हुआ तब से मेरा यह सौभाग्य रहा कि उनका सानिध्य मुझे हमेशा मिला और मेरा मार्ग दर्शन भी उनके द्वारा ही हुआ। ऐसे पूर्ण समर्थ गुरु को पाकर मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ जिन्होंने मुझे हर कदम पर प्रेरणा दी तथा मेरा ध्यान रखा। बाबाजी महाराज ने अपनी प्रशंसा लिखने तथा करने की बात को हमेशा ही मना किया, मगर ऐसे गुरुओं की बात अगर जन मानस तक न पहुचे तो वह भी अधूरी रह जाती है। मेरे जीवन में उनके द्वारा इतने चमत्कार हुए हैं जिनका आज वर्णन करना चालू करूँ तो शायद ही मेरे जीवन काल में वह पूर्ण रूप से मैं लिख पाऊँ । जिस जीवन का हर क्षण उनकी याद में समाया हो उसका वर्णन तो स्वयं मां सरस्वती अगर मेरा साथ दे तभी सम्भव हो पायेगा। इसके बावजूद मैं अपनी कुछ मधुर स्मृतियां जो आज भी मुझे बार बार उनकी याद दिलाती हैं उनको यहां पेश कर रहा हूँ। मैं उनसे क्षमा चाहता हूँ, मेरे से कोई भूल हो जाये तो श्री गुरु महाराज मुझे क्षमा करें।

मेरे जीवन मे पहला वाकया सन् 1965 के वर्षा ऋृतु का है जब मैं अपने बड़े भाई साहब के साथ अपने ग्राम पालड़ी गया हुआ था और मेरी इच्छा हुई कि मैं तालाब में स्नान करूँ। तालाब पानी से भरा हुआ था और मुझे तैरना भी नहीं आता था। मैने भाई साहब से विनती की कि मुझे तैरना सिखा दे। उन्होंने हाँ की तथा हम दोनो भाई तालाब पर चले गये। वहाँ जाकर देखा तो तालाब में इतना गहरा पानी था कि मेरी हिम्मत ने जवाब दे दिया और मैने तय किया कि मैं तैरना नहीं सिखूँगा। मैं तालाब के बाहर किनारे पर ही बैठ गया। भाई साहब को तैरना अच्छा आता था। उन्होने धोती पहन रखी थी, उसके समेत ही पानी में छलांग लगादी तथा तैरते हुए एक दम तालाब के बीच में पहूँच गये तथा वहाँ पर उन्होंने डुबकी लगाई और ज्योंहि उन्होंने डुबकी लगाई उनकी धोती नीचे उगी किसी झाड़ी में फंस गई। उनके भरपूर प्रयत्न करने पर भी वे बाहर नहीं निकल पा रहे थे। मैने स्थिति को समझ कर चिल्लाना शुरु किया, 'बचाओ बचाओ'। वहाँ तालाब के पास दूर दूर तक कोई नहीं था। फिर मैने अन्तरमन से गुरु महाराज को याद किया कि आज या तो इन्हें बचाओ नहीं तो मैं भी पानी में जान दे दूगा। ऐसा मन में दृढ़ विश्वास करके गुरु महाराज को याद करते हुए पानी में प्रवेश कर गया। जब मैं करीब अपने कमर से उपर तक पानी में पहुंच गया था और मेरे भी पांव पानी में उठने ही वाले थे कि इतने में एक लड़का दौड़कर आया और पानी में कूद पड़ा। भाई साहब को अपने कंधे पर लेकर तैरता हुआ बाहर ले आया। इस रोज अगर दो मिनट भी देरी और होती तो हमारा दोनों भाइयों का उस पानी में अन्त निश्चित था लेकिन गुरु महाराज नें अपना अदृश्य रूप बनाकर यह सहायता की।

मेरे जीवन की दूसरी घटना मुझे इससे से भी ज्यादा मूर्त रूप  में दिखायी दी जब सन् 1990 में मुझे दिल का दौरा पड़ा और मैं आल इन्डिया मेडिकल सांईसेंस में भर्ती था। मुझे वहां आइ.सी.यू. में रखा गया था तथा तीसरे रोज मुझे डॉक्टर ने टी.एम.टी टेस्ट के लिए भेजा। मेरा हाल तथा पेपर देखकर जो डॉक्टर टी.एम.टी. कर रहा था उसने मेरे से कहा किस बेवकूफ डॉक्टर ने आपको इस टेस्ट के लिए भेज दिया। इससे तो अभी आपको पन्द्रह से बीस रोज आराम करने के बाद भेजना चाहिए था। मैं फिर अपने आराध्य देव श्री बाबाजी महाराज को याद करने लगा तथा उनसे यही प्रार्थना करने लगा कि अब आप ही सम्भालना और मैं टी.एम.टी. मशीन पर चालू हो गया। अभी मैं छः सात मिनिट ही exercise कर पाया था कि मेरे सीने में दर्द होने लगा, इतने में मशीन खराब हो गई और मेरा चलना अपने आप ही रुक गया। अगर मैं अगले दो चार कदम भी लेता तो मुझे फिर से दिल का दौरा पड़ सकता था मगर मुझे बाबाजी महाराज पर पूरा भरोसा था और उनकी छाया चित्र मैने अपने मन में बनाकर अपने सामने कर रखा था और मन में उनको अपनी अरदास कर रहा था, जैसे द्रोपदी अपने मन ही मन चीर हरण के समय कृष्ण को पुकार कर रही थी, मैं भी अपने गुरु महाराज को मन ही मन पुकार रहा था जिन्होंने उस मशीन को ही बन्द कर दिया जिससे मुझे समस्या होने वाली थी।

आज जब भी मुझे कोई समस्या आती है तो मै मुक्त भाव से सब कुछ उन्ही पर छोड़ देता हूँ कि अब आप ही सम्भालो मै ने तो जो गलती की सो करदी इसे सुधारने में आप ही सहायता करो और मुझे हर समय उनसे सहायता मिलती है। मैने आज भी अपना सब कुछ उन्हीं को सौंप र,खा है और जब से उनको सौंपा है तब से हर काम व्यवस्थित है तथा उनकी कृपा से सब ठीक चल रहा है।

कन्हैया लाल चोटिया

ऊँ  शान्ति!  प्रेम!!  आनन्द!!!

यह घटना 1952 के आसपास की है तब श्री नाथजी महाराज ने भगवां वस्त्र धारण नहीं किये थे, वे सफेद वस्त्र पहनते थे। वे पोषाणी आये हुए थे एवं रात में घर पर रुके। सुबह पिताजी के साथ सीकर रवाना हुए। दादिया से सीकर जाने का एक मात्र साधन उन दिनों रेल थी पर जैसे ही वे गांव से निकले पिछे पटरियों पर रेल आने की आवाज सुनाई दी। स्टेशन अभी 4 किलोमिटर दूर था। महाराज जी ने पिताजी से कहा पटवारी जी हाथ दो। पिताजी ने कहा हाथ देने से भला ट्रेन रुकती है। उन्होने फिर कहा आप हाथ तो दो। पिताजी ने अनमने भाव से हाथ दिया, गाड़ी धीरे होने लगी तथा समीप आते–आते गाड़ी रेंगने लगी। गार्ड–टीटी व ड्राईवर तीनों ट्रेन रुकने का कारण पूछने लगे। पर सन्तोष जनक जवाब न मिलने पर गार्ड ने ईशारा किया गाड़ी तो इनके लिए रुकी है, अतः इन्हें मैं अपने पास बैठाता हूँ। टीटी ने इन्हें प्रथम श्रेणी में बैठाने की इच्छा जाहिर की। दोनों गार्ड के पास बैठ गये। दादिया आने पर महाराज जी ने कहा पटवारीजी टिकट तो ले आओ, गार्ड ने मना कर दिया पर ज्यों ही पिताजी आगे बढे टीटी ने पिताजी से आठ आने लेकर टीकट लाकर देदी।

उस आश्चर्यजनक घटना के बाद से पिताजी के अनुसार उन्होने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। सेवा में सम्मान व आदर मिला महाराज जी कृपा से ही। सीकर महाराज श्री कल्याणसिंह जी से 50 चांदी के सिक्के तथा जयपुर महाराज से 150 रूपये व प्रशंसा पत्र भी प्राप्त हुए व भारत भ्रमण कराया। कभी भी उनके हलके का विवाद कोर्ट तक नहीं गया। यह सब श्री नाथजीमहाराज की अनुकम्पा का ही परिणाम था।

जब से मैने होश संभाला मैने आपे आपको श्री श्रद्धानाथजी महाराज की छत्रछाया में ही पाया। पूरा परिवार उनकी सेवा हेतु समर्पित था। गुरुजी ने मुझे हनुमानचालिसा कंठस्थ करवाया। बात उस समय की है जब हनुमान जयन्ती पर धर्मशाला में प्रसाद वितरण हो रहा था। उसी समय एक बालक आकर बोला कि शिवबक्स कुए में गिर गया है, आपने शान्त भाव से कहा उसे कुए से निकाल लो उसका कुछ नहीं बिगड़ा है। गांव वालों ने उसे कुए से बाहर निकाला परन्तु उसे कोई खरोच तक नहीं लगी थी। पर महाराज जी ने कहा अब प्रसाद यहां नहीं करेगें आज तो श्री बालाजी ने बचा लिया।

यह घटना उस समय की है जब मैं छठी कक्षा में पड़ रहा था, महाराज जी के लिए सांय का खाना लेकर घर से चला उस समय बूंदाबांदी हो रही थी मेरा पांव एक घढ्ढे में पड़ गया व सारा खाना बिखर गया। मैं बर्तन लेकर घर वापिस गया, दादी ने फिर खाना बनाया तथा एक लोटा दुध भर दिया, किन्तु सब्जी खतम हो गयी थी सो पड़ोसी करणाराम जी के घर से मांगकर दी। धर्मशाला पहुंचने पर सत्संग शुरु हो गया था, मैंने खाना रख दिया। करीब 10 बजे सत्संग के बाद महाराज जी ने खाना शुरु किया परन्तु सब्जी का कटोरा मुझे देते हुए बोले इसे बाहर गढ्ढे में डाल दो। मैंने मूर्तिवत वैसे ही किया। चलते वक्त आपने कहा दादी से कहना घर मे जो बने वही लाना किसी अन्य घर से नहीं।

यह घटना भरत–पाक युद्ध सन् 1965 की है, गुरुजी बीकानेर पधारे। आप वहां टीचर टेनिंग कॉलेज में ठहरे। गुरुजी ने एक टीचर से कहा कि एयरफोर्स में हरलाल को फोन तो कर दो ताकि दर्शन करले। अध्यापक ने कहा महाराज यहॉ फोन तो केवल प्रिंसीपल रुम में है जो बन्द हो चुका है सुबह खुलेगा। आपने कहा फोन भी कहीं बन्द होते हैं। मै अपने साथी भागिरथ को लेकर चला कि कोई परिचित अध्यापक मिल जाये, सामने देखा महाराज जी पैर धो रहे हैं प्रार्थना हेतु। हमारे पास आने पर बोले कह रहे थे न कि टेलिफोन बन्द होगया यह तो चल ही रहा है कहने सुनने वाला चाहिए। प्रार्थना के बाद आपने कहा हरलाल कल सांय एयरफोर्स चलेंगे। मुझे भय हुआ क्योंकि मैंने उच्च अधिकारी से गुरुजी को कैम्प में लाने की अनुमति मांगी थी पर उसने मना किया था। हमारी युनिट युद्ध पर आई थी, दूसरे दिन पांच बजे मैं और गुरुजी पैदल ही चल पड़े। दिसम्बर का महिना था गेट पर पहुंचते–2 अंधेरा हो गया। मैं अन्दर ही अन्दर घबराया पर गुरुजी

को देखते ही डी.एस.सी गार्ड ने गेट खोल कर सलामी दी। अन्दर बैठा गार्ड भी रिवाल्वर लेकर दौड़ा व महाराज हेतु कुर्सी दी एवं एक रुम हीटर भी पास लाकर रखा। मैं अनुमति लेने वारन्ट अफसर के बंगले की तरफ दौड़ा तो उसने आवाज दी, "एच.सिंह इजाजत बाद में लेते रहना पहले महाराज को ले जाओ"। प्रार्थना के बाद आपने कहा मेरे बारे में कोई बात हो तो ओ.सी. से ही बात करना। गेट पर वा.आ. का आदमी बोला अन्दर कैसे आये बाहर चलो। मैंने ओ. सी. से फोन किया सर गुरुजी आये हैं , उन्होंने कहा मना किया था परन्तु अब रात को आराम से रहो, और पुलीस से कहो लोग–बुक में लिख दो परमिशन है।

अगले दिन सुबह हम लोग श्री कोलायत जी के लिए रवाना हुए। उस समय बीकानेर के डी.एस.पी. झाबरमल महरिया थे। उनकी पत्नी ने गुरुजी के लिए जीप भेजी, आपने जीप वापिस भेजदी व पैदल ही रवाना हुए। रास्ते में ओ.सी. साहब मिले उन्होंने बस स्टेन्ड तक छोड़ने के लिए कहा पर आपने मना कर दिया। ओ.सी. ने मुझसे कहा तम्हारी 10 दिन की छुट्टी में एक दिन बचा है अतः एक दिन की छुट्टी भर दो और महाराज के साथ जब तक चाहो भ्रमण करो। बाद में आपने कहा अब श्रीमति हीरा महरिया के यहां चलो। डी.एस.पी. तो ड्यूटी पर चले गये पर जिसकी भावना प्रेम मय हो उसे दर्शन देगें। बाद में हमने महरियाजी के यहां खाना खाया एवं दों घंटे विश्राम करके चुन्नीलालाजी अध्यापक के साथ कोलायत रवाना हुए।

आप सितम्बर 1968 में जोधपुर पधारे साथ में कैप्टेन लक्ष्मणजी , सी.आइ.डी. ईन्सपेक्टर झाबरसिंह जी प्रेमी थे। लक्ष्मणजी व झाबर सिंह जी तुन्त चले गये। उन्हें आगे निकलना था। श्री गुरुजी महाराज ने जोधपुर का किला देखने की ईच्छा व्यक्त की, ज्योंही हम बाहर निकले एक टेक्सी में बिरदी चन्द ट्राफिक इन्सपेक्टर निकले। गुरुजी को प्रणाम कर बोले महाराज यह गाड़ी आज आपकी सेवा में ही रहेगी व स्वयं दूसर गाड़ी में चले गये। हम लोग किला देखने पहुंचे पर मंगलवार होने से किला बंद था, अतः चौकीदार ने मना कर दिया। आपने कहा विश्राम करते हैं, तब तक महारानी का आदेश हुआ व किला खुल गया। किला देखने के बाद गेस्ट हाउस में बैठने की व्यवस्था हुई। बाद में महारानी भी फल मेवों के साथ आदर योग पहुंची व गुरुजी से महल में ठहरने हेतु प्रार्थना की पर आपने कहा हनुमानसिंह होते तो ठहरता इस समय रुकना उचित नहीं है। आपने प्रसाद लोंगों में बटवा दिया। चलते वक्त रानी ने 1100 रुपये चांदी के न्योली में भेंट किये पर महाराज जी ने विनम्रता से मना किया। उस पर राजमाता ने कहा हमारे यहां से कोई खाली नहीं जाता। अतः गुरुजी ने 1 रुपया लेने तथा उसे रास्ते में खर्च करने के लिए थानजी को कहा। आपने चलते वक्त कहा "हम अपना व्रत तोड़ेंगे इनका नहीं।" दूसरे सन्तों का रास्ता क्यों बन्द करें।

एक बार की बात है 17 सितम्बर 1973 को पूज्य गुरुदेव श्री मालीरामजी के साथ कोयम्बटूर पहुंचे। श्री नाथजी महाराज ने बताया कि जा तो बंगलोर रहे थे, परन्तु रिजर्वेशन कायम्बटूर के डिब्बे में होने से वहां पहुंच गये। स्टेशन पर मालीरामजी ने बताया हम तो कोयम्बटूर आ गये। दूसरे दिन गुरुवायु मन्दिर देखने के लिए निकले साथ में रामनारायण शर्मा भी थे। वहां हम लोग 11 बजे पहुंच गये तथा प्रसाद लेकर कमरे में विश्राम किया जब 4 बजे तो हम मन्दिर में दर्शन करने हेतु पहुंचे। वहां पुजारी सफाई में लगे थे तथा कहा कि पहले महन्तजी दर्शन करेगें फिर जनता के लिए द्वार खुलेगा। आपने कहा "भगवान तो दर्शन देना चाहते है। पर ये भगवान से बड़े हैं"। इतना कह कर गुरुजी मुड़े ही थे कि सामने महन्तजी हाथ जोड़कर खड़े मिले व पैरों में गिर पड़े। गुरुजी ने कहा मैने पहचाना नहीं। महन्तजी बोले मैं पहचान गया। आपकी वजह से मुझे भगवान के दर्शन हुए हैं। आप पहले दर्शन करें व मेरी कुटिया को पवित्र करें। गुरुजी को कोचिन जाना था। महन्त ने कार से बार–बार भेजने की जिद की पर आप न माने, महन्तजी ने पालकी की व्यस्था की पर आपने कहा मैं तो कमजोर घोड़े वाले तांगे में नहीं बैठता यहां तो आदमी जुतेगें। महन्तजी ने कहा आप बैठिये आप बैठेगें तो ही मैं बैठूंगा क्योंकि यहां महन्त को पालकी में ही जाना पड़ता है। आपने कहा यह नियम आपके लिए है। महन्तजी पैदल ही साथ चला। उन्होंने कहा महाराज मैने इतने वेद पुराणों को पढा पर ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। पर सपने मे ही सही आपके

साथ ईश्वर के दर्शन किये। मैंने सपने में देखा एक साधु मूर्ति के सामने खड़ा है तो मूर्ति भी खड़ी हो गई तथा दोनों आपस में गले मिल रहे हैं। महाराज आप मेरा उद्धार करो। करीब दो घंटे बाद गुरुजी मालीराम के साथ कोचिन प्रस्थान कर गये मैं व शर्माजी वापस कोयम्बटूर चले गये। श्री नाथजी 21 सितम्बर को कन्याकुमारी से कोयम्बटूर वापस आऐ। उन्होंने बताया जा तो रहे थे मीनाक्षी मन्दिर पर बस यहां ले आई। यह पहले न आने का दण्ड है। वायु सेना स्टेशन पर आप भक्तों से मिले, तथा अगले दिन रिजर्वेशन, कराने गये पर नहीं हुआ। हम लोग शाम को 4 बजे उन्हें छोड़ने गये तो टी.टी. ने टिकट की व्यवस्था कर दी। यह उनके अद्‌भूत चमत्कार का ही परिणाम था। हम वापस 10 बजे रात वायु सेना स्टेशन आ गये।

यह घटना 20 दिसम्बर 1973 की है मुझे मऊ जाना था। मेरा एक साथी भी उसी तरफ जा रहा था। इस लिए कायम्बटूर से रेलवे स्टेशन तक एक ही गाड़ी में जाना था। वह मेरे क्वार्टर पर प्रातः 4.45 पा आ गया जबकि ट्रेन 5.30 की थी। मैं गुरुजी की आज्ञा के अनुसार 4.45 पर घर नहीं छोड़ना चाहता था व पूजा कर रहा था। उसने बार–बार हार्न दिया पर मैं 5.01 मिनट पर निकला। उसने कहा अब कैसे पहुंचेगे उसपर अपना रिजर्वेशन भी कनफर्म नहीं है। मैंने कहा चिन्ता मत करो सब ठीक हो जायेगा। वैसे ही हुआ। उसने कहा अपने गुरुजी से कहो यह गाड़ी मऊ तक पहुंचा दे। मैंने उत्तर दिया क्यों नहीं गुरुदेव के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। उसने कहा जरुर मद्रास की गाड़ी में बैठो और कश्मीर पहुंच जाओगे। अचानक पता चला कि नागपुर में हड़ताल है रास्ता जाम है अतः गाड़ी का रास्ता बदल गया है। हम रात 1 बजे के करीब मऊ में थे। मुझे किसी ने जगाया कि मऊ आ गया है। मुझे साथी की व्यंग्य बातें याद आ गई, उढा तो स्टेशन पर बिजली न होने से नाम न पढ़ सका और वापिस से गया। अगला स्टेशन खण्डवा आ गया। वहां कुली को मऊ वाली गाड़ी पर चलने को कहा तो उसने क्रोध से कहा इसी में बैठे रहो यह गाड़ी वहीं से होकर आ रही है फिर वहीं वापिस जाना चाहते हो। यह सुन कर मेरे साथी ने मुझे प्रणम किया। मुझे गुरुदेव का स्मरण हेता रहा।

एक विचत्र घटना पोषाणी गांव मे हुई। श्री नाथजी महाराज गांव में पधारे हुए थे। उन्होंने मुझे नाई को बुला कर लाने को कहा। मैंने जाकर नाई को कहा चलो बाबाजी आये हैं, हजामत बनानी है। नाई चिढ कर बोला मेरा बच्चा तो यहां जान पे पड़ा है , न मरता है न जीता है, तुझे हजामत की पड़ी है। बात यह थी कि नाई के बच्चे होकर मर जाते थे। एक बच्चा था वह भी बीमार था। मैंने सारी बात बाबाजी को बतायी। महाराज स्वयं नाई के पास गये और पुछा तुमने क्या कहा। नाई ने सारी बात बताई। महाराज ने कहा बच्चे को गुदड़ी पर लिटा दो और हजामत के लिए कुए से पानी लाओ। नायी गया। इतने में गुरुजी ने कमण्डल से पानी बच्चे पर छिड़का बच्चा चुप हो गया। नाई पानी लेकर आया व हजामत बनाने लगा। महाराज ने कहा अब तुम्हारे बच्चे दीर्घायु होगें। ऐसी थी गुरुदेव की कृपा दृष्टि।

30 अप्रेल बुद्धवार 1975 को मैं श्री नाथजी महाराज के पास पोषाणी धर्मशाला में रात को रहा। लक्ष्मणगढ में आश्रम बनने के बाद आप यहां 18 दिन तक रहे। उसी समय मेरी पदोन्नति भी हुई। हालाकि मैं इस योग्य नहीं था पर यह गुरु कृपा से ही संभव था। अतः मैं आश्रम में प्रसाद करवाना चाहता था, साथ तीन लड़की होने पर नसबंदी भी करवाना चहता था पर इतनी हिम्मत नहीं थी कि गुरुजी से ऐसे विषय पर विचार करुं। आप गहरी नींद में सो रहे थे मैं पांव के पास बैठा था कि अचानक आप बोल पड़े प्रसाद दोनों का साथ ही करवा देना। मैने कहा दोनों कौन महाराज। आपने फिर कहा "तुम्हारे यहां तीन पुत्रियों पर पुत्र होने पर भी तो प्रसाद होता है। अतः पुत्र व प्रमोशन दोनों का साथ प्रसाद करवा देना। 10 जनवरी 1976 को मैं कुम्भी ग्राम एयरफोर्स स्टेशन पर था। सुबह सपने में महाराज ने दर्शन दिये। इसी दिन पुत्र महेश का जन्म हुआ। गुरुजी की कृपा का ही फल था यह सब।

खींवासर गांव के अलीम खां श्री नाथजी महाराज के परम भक्त थे। वह प्रत्येक वर्ष अपने खेत से बड़ा मतिरा गुरुजी के लिए लाते थे। एक बार जब वे मतीरा लेकर आश्रम आये तो गुरुजी ने देखते ही कहा जो मतीरा मेरे लिए रखा था वह तो लाये ही नहीं। खां साहब वापस गये तथा

सफेद वाला मतीरा ले आये। गुरुजी ने कहा तुम्हे पुत्र की कामना है। तुम्हारे दो पुत्र होंगे। इस भक्ति के कारण मुसमानों ने उन्हे जात बाहर भी किया तथा काफिर तक कहा। गांव के ही एक अध्यापक ने उनका साथ दिया। गुरुजी सब धर्मों का आदर करते थे।

लक्ष्मणगढ के आश्रम में एक नाई श्री नाथजी महाराज की हजामत करने आता था। एक दिन उसने महाराज से कहा आप किसी थानेदार को जानते हैं क्या? गुरुजी ने कहा थानेदार को तो नहीं पर बड़े अफसर को जानता हूं। नाई ने कहा यह तो और भी ठीक है।। मेरी पत्नी मायके बैठी है उसे सास नहीं भेज रही है कहीं और भेजने की सोच रही है आप मदद करें। नाई सप्ताह में दो बार आने लगा। एक दिन उसने कहा महाराज अफसर को कह दिया। महाराज ने कहा हां। नाई खुस होकर दूसरे दिन ही पत्नी को लेने सुसराल चला। बस स्टेन्ड ज्योंही उतरा देखा कि उसकी पत्नी घर आने के लिए बस का इंतजार कर रही है। उसने पति को देखते ही घुंघट कर लिया और बोली किसी ने मुझे सपने में जाने को कहा इसलिए घर आ रही थी।

यह घटना 1985 की है, गुरुजी के दर्शन करने के लिए सुबह करीब दस बजे मैं आश्रम पहुंचा। दर्शन के बाद सांय तक वहीं रहा। शाम को श्री बैजनाथजी ने कहा हरलाल तुम्हे घर चले जाना चाहिए क्योंकि रात को रुकोगे तो बाबाजी आराम नहीं करेगें। जाने से पहले मैं गुरुजी को प्रणाम करने गया तो महाराज ने कहा घर पर कोई जरुरी काम है क्या? मैंने थेला वापस रख दिया तथा बैजनाथजी के आदेश की बात बताई। शाम को प्रार्थना में बैजनाथजी ने कहा अरे हरलाल तुम गये नहीं। अच्छा रात को महाराज को तंग मत करना उनका स्वास्थ ठीक नहीं है। रात को मेरे कमरे में लालचंद जी भी विश्राम कर रहे थे। 10 बजे हम महाराज के सानिध्य से हेतु उठे कि लालाचंद की आंख में एक कीड़ा गिर गया। हम अभयनाथजी से साइकिल लेकर डॉ रिछपालजी के यहां चले। हालांकि किड़ा रास्ते में स्वतः ही निकल गया फिर भी हम डॉक्टर को दिखा कर वापस आये। दरवाजे पर बैजनाथजी मिले उनके पूछने पर सारी बात बताईं। बैजनाथजी ने कहा जल्दी जाओ महाराज याद कर रहे हैं। महाराज ने पूछा कहां चले गये थे? मैंने सारी बताई। हमें 11.50 पर विश्राम का आदेश मिला । चलते वक्त गुरुजी बोले बैजनाथ की बात का बुरा मत मानना क्योंकि वह अपने ही तरीके से इस शरीर के विश्राम की व्यस्था करना चाहता है।

हरलाल पोषाणी

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

श्री नाथजी महाराज गांव–गांव ढाणी–ढाणी घूम कर प्राणी मात्र की सेवा में लगे रहते थे तथा अपने उपदेशों द्वारा जन कल्याण हेतु संलग्न थे। एक बार आप उदनसरी कर्नल लक्ष्मणसिंह के यहां पधारे। कर्नन साहब के ताऊजी बोले महाराज बरसात के बिना बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है पशु मर रहे हैं। चारा तक नसीब नहीं है। श्री नाथजी महाराज ने कहा श्री नाथजी का विश्वास रखो वर्षा भी होगी। वास्तव में कुछ समय बाद जमकर वर्षा हुई। यह गुरुदेव का ही चमत्कार था।

फतेहपुर कें पास के एक चौधरी बाबाजी के भक्त थे। उनके कोई सन्तान नहीं थी। वह आश्रम बराबर आता तथा गुरुजी से सुख दुख की बातें करता। गुरुजी ने कहा चौधरी जीते जी किसी को गोद मत लेना न पैसा व जमीन किसी के नाम मत करना। परन्तु चौधरी के भाइयों ने जबरन अपने एक पुत्र को गोद बैठा दिया। जब चौधरी ने यह बात गुरुजी को बताई तब श्री नाथजी बोले कोइ बात नहीं पैसा और जमीन उसके नाम मत करना मरने पर तो उसकी हो ही जायेगी। परन्तु अपनी सेवा से दत्तक पुत्र ने चौधरी का दिल जीत लिया। चौधरी ने पैसा व जमीन उसके नाम कर दिया। कुछ समय बाद चौधरी बीमार पड़ा व इलाज में पैसा लगने लगा। थोड़े दिनों बाद पैसे मांगने पर उसने इन्कार कर दिया और कहा कि अब पैसा कहां है? चौधरी को बाबाजी के सुझाव की बात ध्यान आई वह पछताया भी पर गुरु अवज्ञा दण्ड तो भुगतना ही था। गुरुजी भविष्य की बातें सहज ही बता देते थे।

बात 1980 के आसपास की है बाबाजी के एक प्रेमी बंगाली साधु पगला बाबा थे। उन्होंने मथुरा में दिल्ली आगरा रोड पर एक मन्दिर बनवाया। मन्दिर के उदघाटन के अवसर पर श्री नाथजी महाराज के पास निमंत्रण भेजा। महाराज पत्र हाथ में लेकर खुब हंसे। पास बैठे मुरारीलाल कटेवा, रामेश्वरजी लेक्चरार से मुखतिब होते बोले देखों पगला बाबा वास्तव में पगला बाबा है। खुद तो उदघाटन में रहने वाला नहीं है और हमें बुला रहा है। विचित्र बात कि उदघाटन के कुछ दिन पूर्व ही पगला बाबा का निधन हो गया।

एक बार करपात्रीजी महाराज आश्रम मे पधारे। आश्रम में उन्हे परम शान्ति व आनन्द का अनुभव हुआ। बाबाजी ने बड़े आदर सत्कार से उन्हें सम्मानपूर्वक तख्त पर बैठाया। करपात्रीजी बोले मैने पूरे भारत का भ्रमण किया है परन्तु इतनी शान्ति कहीं पर नहीं पाई। यह श्री नाथजी महाराज की साधना का ही फल था। उन्होंने कहा अब जब भी राजस्थान आऊंगा इस आश्रम पर अवश्य ही आऊंगा। श्री नाथजी बोले आप जैसे महापुरुष के दर्शन लाभ बार–बार कहां होते हैं। 6 महिने बाद करपात्रीजी ने महा प्रयाण कर दिया।

रामनाथ
श्री नाथजी महाराज का आश्रम गोठड़ा
ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

(10)

जब मैं आठ वर्ष का था तभी से श्री नाथजी महाराज के दर्शन मुझे सपने में होने लगे। हालांकि उस समय तक मैने उनके साक्षात दर्शन नहीं किये थे। श्री नाथजी एक बड़े आसन पर विराजमान दिखायी देते व सामने समुद्र जैसा दृश्य, उनके हाथों में मकड़ी के तार जैसे पतले धागे लटक रहे होते जिसे पकड़ कर मैं उस सागर में डूबने से बचने का प्रयास करता। धागा छूट जाता तो इसी व्याकुलता में नींद खुल जाती और मैं उठ कर भागने लगता। घर वाले इस घटना से घबरा जाते तथा इसे उपरी हवा का असर मानते थे। 13 वर्ष में विवाह के बाद बाबाजी के दर्शन बन्द हो गये। 35 वर्ष की आयु में एक बार सवामणी करवाने के लिए आटा पिसवाया पर पड़ोस में एक जाट व एक कुम्हार की मोत हो जाने से कार्यक्रम न हो सका। उसी समय गणपत सारण ने श्री नाथजी के बारे में बताया तब बाबाजी महाराज के दर्शन हेतु पुस की रात में 9 बजे ही लक्ष्मणगढ के लिए रवाना हुआ तथा वहां रामलीला देखकर सुबह पांच बजे आश्रम पहुंच गया। परन्तु दर्शन नहीं हुए क्योंकि बाबाजी आश्रम पर नहीं थे। फिर एक सप्ताह बाद गया तो आश्रम के गेट पर ही प्रार्थना भवन के सामने उनके दर्शन कर आनन्द की अनुभूति हुई। स्वप्न की मूर्ति साकार सामने देखकर शरीर में कम्पन होने लगा। पास पहुंचने पर उन्होंन मुझे नाम से बुलाया और कहा हनुमान हम तो पहले से ही किसी रुप में मिले हुए हैं। तभी से मेरा दृढ विश्वास हो गया। मैंने उन्हें ईश्वर मान लिया। सप्ताह बाद फिर आश्रम में गया तो मैंने स्वेटर व कम्बल ओढ रखा था। गुरुजी ने कहा हनुमान कम्बल कोट उतार दे अब सर्दी गई। उसके बाद आज तक उनी कपड़ा नहीं ओढा और न ही कभी मुझे सर्दी जुकाम हुआ। मेरे सात लड़किया व तील लड़के हैं। मेरा एक लड़का पढाई छोड़ कर खेती का कार्य करता था। किसी कारण वश घर छोड़ कर चला गया और 18 महिने नहीं आया। एक दिन मैं आश्रम में उदास बैठा था कि महाराज बोले हनुमान उदास क्यो बैठा है दो–2 लड़कियों की शादी एक साथ हो जायेगी। उनकी कृपा से ऐसा ही हुआ। बड़ी दो लड़कियों का विवाह एक साथ एक दिन तय हुआ। परन्तु पुत्र की चिन्ता थी। एक दिन पत्नी सहित शादी से 5–7 दिन पहले मैं आश्रम गया। तब बाबाजी ने बड़े शहरों में बड़े होटलों के नाम पत्र डालने की सलाह दी, जैसे एल.एम.बी. जयपुर। एक पत्र एल.एम.बी. जयपुर भी डाला। रामलाल जयपुर में जौहरी बाजार से निकल रहा था पीछे से एक आदमी ने भाग कर उसे यह पत्र दिया और कहा घर पर दो बहिनों का विवाह है और तूं यहा फिर रहा है। यह बाबाजी महाराज की ही कृपा थी।

हनुमान
पूरा की ढाणी
ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## आध्यात्म–प्रेमी सेवक–भक्तों के लिए पालनीय नियम

निम्नांकित नियम परम श्रद्धेय श्री गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज की शिक्षाओं पर आधारित हैः–

1. श्री नाथजी महाराज को इष्टदेव मानकर नित्य नियम से धूप, दीप आरती एवं सुबह–शाम की प्रार्थना, ध्यान व चिन्तन करें।
2. अपने इष्टदेव व गुरु महाराज में पूर्ण श्रद्धा, प्रेम और विश्वास रखें। श्री गुरुदेव के बताये हुए मंत्र का जप नियम से करें।
3. माता–पिता, साधु–सन्तों व बड़े–बूढ़ों के प्रति सेवा–भाव और सम्मान रखें ताकि उनका आशीर्वाद मिलता रहे।
4. अपना चरित्र उज्जवल रखते हुए अपने कर्त्तब्यों का पालन जिम्मेदारी व ईमानदारी से करें तथा अभक्ष्य, नशीली वस्तुओं और दुर्व्यसनों से बचे, तत्पश्चात् आत्म कल्याण की खोज करें।
5. न तो किसी को धोखा देने की चेष्टा करें और न किसी को झूठा विश्वास दिलाएं। स्पष्ट सच्ची बात से सब के साथ प्रेम–पूर्ण व्यवहार करें।
6. प्रसन्न चित्त रहे और आत्म–बल रखें। पीठ–पीछे किसी की निन्दा करना आत्मा की कमजोरी व हीनता है। जो कुछ कहना है, उसे सामने कह देना उचित है। सच्चे मानव का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।
7. भूल व परिस्थिति  वश कोई गलती हो जाय तो वह पाप नहीं, गलती है, परन्तु गलती पर गलती करना और उसे स्वीकार न करना पाप है।
8. गृहस्थाश्रम में संयम से रहते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करो, इससे बुद्धि का विकास व आत्मबल प्राप्त होता है। पराई स्त्री को अपनी मां–बहन समझो, अश्लील साहित्य व गलत संगत से बचो।
9. न्याय–नीति से काम करते हुए अपनी खरी कमाई का सदुपयोग करो। अपना एक पैसा भी व्यर्थ मत खोओ। बिना कमाया लाख धन धूल समझो। अपनी कमाई का कुछ धन सेवा और परोपकार में लगाओ।
10. आशावादी रहकर वीर बनो, कायर मत बनो। तुम बनो, औरो को भी बनाओ। अपने हक पर रहो। दूसरे के हक पर हाथ मत डालो। दुःखों और कष्टों में घबराओ मत तथा सुखों में इतराओ मत। दोनों ही परिस्थितियों में समता रखो।
11. सभी अपने जैसे है तो उन्हे कष्ट क्यों दें। सभी को भगवान ने बनाया है

तो भेद–भाव और घृणा क्यों करे। ईष्या–द्वेष छोड़कर आपस में प्रेम रखो और समय का सदुपयोग करो। मानव शरीर अमूल्य है, फिर मिलना दुर्लभ है। सत्–कृर्तव्यो का पालन करते हुए भगवत्–भक्ति का लाभ उठायें।

## साधु के लिए पालनीय नियम

निम्नांकित नियम भी परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज की शिक्षाओं व उपदेशों वर आधारित हैंः–

1. अपनी आत्मा में सदैव प्रसन्नचित रहें और श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने इष्टदेव को सदा याद रखें। अपने सद्‌गुरु के आदेशों का सदैव पालन करें क्योंकि मोक्ष–प्राप्ति के श्री गुरुदेव ही सबसे बड़े सहायक हैं।
2. मान–सम्मान व ख्याति की इच्छा न करे। सुख–दुख व निन्दा स्तुती को समान समझे और निष्काम कर्म करे।
3. तृष्णा और निराशा को छोड़ कर त्याग और वैराग्य पूर्ण सन्तोष रखे क्योंकि राग जीवात्मा का बंधन है और वैराग्य मुक्ति है।
4. मन, वचन और कर्म की समरसता ही साधु का सच्चा तप है। साधु सदैव अपने मन पर नियन्त्रण रखे और निश्पक्ष रहे। सच्चाई और प्रेम न छोड़े।
5. सब से प्रेम करे, पर मोह में आसक्त न हो। क्षमा, दया, शील, सन्तोष रखे।
6. समस्त स्त्री जाती को मां–बहन के समान समझे।
7. आवशयकता से अधिक संग्रह न करे। निन्दा और ईर्ष्या जैसे असाध्य रोगों से बचे।
8. कम बोले। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को कष्ट न दे। सभी को ईश्वर की आत्मा समझकर प्रेम–पूर्ण व्यवहार करे।
9. जात–पांत की महा बीमारी को छोड़े, इसकी दवा है अपने आपको समझे।
10. अपने आपको बड़ा न कहे। जीवन के अन्तिम लक्ष्य ईश्वर–प्राप्ति को कभी न भूले।
11. चोरी, जारी, मिथ्या और साध की इच्छा। अध्यात्म साधना के लिए एकान्त स्थान, शुद्ध–शान्त वातावरण, सदाचार औा सात्विक आहार अपनाये।

# आश्रम का परिचय

श्री नाथजी महाराज का आश्रम गोठड़ा (भूकरान) ग्राम के दक्षिण में गोठड़ा–सीकर रोड पर पूर्वाभिमुख गांव से अलग एकान्त व शान्त वातावरण में स्थित है। यहाँ से सीकर 15 कि.मी. है। आश्रम का भूमि पूजन शुभ मिति रामनवमी 1998 को सम्पन्न हुआ। उसके ठीक दो साल बाद चैत्र सुदी 11 शुक्रवार दिनांक 15.4.2000 को श्री नाथजी महाराज का आश्रम, गोठड़ा भूकरान वास्तु पूजन समारोह श्री अमृतनाथ आश्रम के महन्त श्री नरहरिनाथ जी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। 14.4.2000 की रात्रि को भव्य जागरण व भजन कीर्तन का प्रोग्राम रहा और सुबह वास्तु पूजन के बाद भण्डारा हुआ जिसमें सभी साधु सन्त पधारे। सभी सन्तों को नाथ सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार सम्मान के साथ भोजन करवाया गया, वस्त्र, चींपी आदि के साथ भेंट पूजा की गई। तत्पश्चात सारे सेवक भक्तों ने प्रसाद पाया।

सर्व प्रथम श्री नाथजी महाराज के छोटे से मन्दिर का निमार्ण कार्य पूरा हुआ तत्पश्चात सन्त विश्राम कुटिया, रसोईघर, स्नान कक्ष व प्रार्थना–हाल का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। साथ–साथ ही पानी की टंकी व ओलिया भवन का निर्माण पूरा हुआ। उसके दो साल के भीतर ही उत्तर पूर्व की चार दिवारी व सामान कक्ष का निर्माण पूरा हुआ। यह सब श्री नाथजी महाराज की असीम कृपा से ही बहुत ही सहज में स्वतः ही हो गया। श्री नाथजी महाराज की कृपा से सेवक–भक्तों का दर्शनार्थ बराबर आना जाना रहता है व शेष उनकी कृपा से आनन्द मंगल है। आगे भी उनकी कृपा से शुभ निर्माण व शुभ कार्य सम्पन्न होते रहेंगे।

## आश्रम के नियम

1. आश्रम में नित्य सुबह–शाम श्री नाथजी महाराज की  आरती पूजा का विधान है।
2. आश्रम में सुबह शाम नियमित रूप से श्री नाथजी महाराज की प्रार्थना बोली जाती है।
3. आश्रम की भोजन व्यवस्था में सब का समान अधिकार है।
4. आश्रम के भीतर धूम्रपान व मादक द्रव्यों का सेवन सर्वथा वर्जित है।
5. आश्रम के भीतर अध्यात्म साधना एवं ईश्वरीय चिन्तन ही करें। व्यर्थ के वाद विवाद एवं परस्पर भेद उत्पन्न करने वाली चर्चाओं की नीतान्त मनाही है।
6. आश्रम में प्रेम से आयें, प्रेम के साथ जायें। आश्रम के भीतर व बाहर प्रेम का प्रसार करें।
7. आश्रम की शान्ति, स्वच्छता, पवित्रता एवं व्यवस्था को बनाये रखना आश्रम में आने वाले प्रत्येक  व्यक्ति का कर्तब्य है।

## आरती प्रार्थना का कार्यक्रम

### (क) धूप–दीप, आरती के बाद आश्रम में बोले जाने वाले मंत्र, श्लोक व जय जय कार

ऊँ श्री मात–गंगे हर नर्मदे हर जटा शंकरे हर नमो पार्वती पतये हर हर हर महादेव। बोलिए सर्व श्री शंभु–जति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की जय। माया स्वरूपी दादा मच्छन्दर नाथ जी महाराज की जय। रमते–घूमते नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय। विलक्षण अवधूत बाबा श्री अमृत नाथजी महाराज की जय। योगी राज तपस्वी गुरुदेव श्री श्रद्धानाथजी महाराज की जय। श्री भेष–भगवान की जय। अपने–अपने गुरु महाराज की जय। श्री सनातन धर्म की जय। श्री अटल क्षेत्र की जय। श्री रमतेश्वर महादेव की जय। ज्वालामाई की जय। बोल सच्चे दरबार की जय। श्री बजरंग बली की जय। श्री सिद्धेश्वर महादेव की जय। सब सन्तन की जय। तैंतीस करोड़ देवी देवताओं की जय। गुप्त प्रकट पीर पैगम्बर सब अवतार ओलियों की जय। खेड़ा–बस्ती की जय। अपने–अपने माता–पिता की जय। बोलिए श्री नाथ जी महाराज की जय। हरि ऊँ नमो पार्वति पतये हर हर महादेव।

हरि ऊँ गुरुजी कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारं। सदा वंसन्तं हृदयार्विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

मन्दार माला कालिताल कायै कपाल माला शेखाराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
गोरक्ष बालं गुरु शिष्य पालं शेष हिमालं शशि खण्ड मालं।
कालस्य कालं जित जन्म जालं वन्दे जटालं जगदाब्जनालं।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु सरक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवै नमः।।
घ्यान मूलं गुरुर्मूर्ति। पूजा मूलं गुरु पदम्।
मत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।
मंत्र सत्यं पूजा सत्यं देव निरजनं।
गुरुर्वाक्यं सदा सत्यं सत्यं विमलम चलम्।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणिं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
आकाशे ताड़का लिंगं, पाताले बटकेश्वरम्।

मृत्यु लोके महाकालं सर्वलिंगं नमोस्तुते।।

सींगी सेली सिर जटा, झोली भगवां भेष।

कानन कुण्डल भस्मी लसै, शिव गोरक्ष को आदेश।।

एक ऊँकार तेरा आधार, तीन लोक में जै जै कार। नाद बाजे, काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजै। गले नाद पुष्पन की माला, रक्षा करे श्री शंभु यति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज बाला, चार खानी, चार बानी चन्दा सूरज पवन पानी। एकौ देवा सर्वत सेवा, जोत–पाठ ले पुरसो देवा। कानन कुण्डल गले नाद। करो सिद्धो आदेश–आदेश।।

## सुबह की प्रार्थना का कार्यक्रमः–

### श्री गोरक्ष–चालीसा

जय जय जय–गोरक्ष अविनाशी।
कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी।।
जय जय जय गोरक्ष गुण खानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी।।
अलख निरंजन तुमरो नामा।
सदा करो भक्तन हित कामा।।
नाम तुम्हारो जो कोई गावें।
जन्म–जन्म के दुःख नसावे।।
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे।
भूत पिसाच निकट नहीं आवे।।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे।
रूप तुम्हारा लखा न जावे।।
निराकार तुम हो निर्वाणी।
महिमा तुम्हारी वेद बखानी।।
घट–घट के तुम अन्तर्यामी।
सिद्ध चौरासी करे प्रणामी।।
भस्म–अंग, गले नाद विराजे।
जटा शीश अति सुन्दर साजे।।
तुम बिन देव और नहीं दूजा।
देव मुनिजन करते पूजा।।
चिदानन्द भक्तन हितकारी।
मंगल करो अमंगल हारी।।
पूर्णब्रह्म सकल घटवासी।
गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी।।

गोरक्ष–गोरक्ष जो कोई गावे।
ब्रह्मस्वरूप का दर्शन पावे।।
शंकर रूप धर डमरू बाजे।
कानन कुंडल सुन्दर साजे।।
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा।
असुर मार भक्तन रखवारा।।
अति विशाल है रूप तुम्हारा।
सुर–नर मुनि पावै नहिं पारा।।
दीन बन्धु दीनन हितकारी।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी।।
योग युक्त तुम हो प्रकाशा।
सदा करो संतन तन वासा।।
प्रातः–काल ले नाम तुम्हारा।
सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा।।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।
अपने जन की हरो चौरासी।।
अचल अगम है गोरक्ष योगी।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी।।
काटो राह यम की तुम आई।
तुम बिन मेरा कौन सहाई।।
कुपा–सिधु तुम हो सुख सागर।
पूर्ण मनोरथ करो कृपा कर।।
योगी सिद्ध विचरें जग माहीं।
आवागमन तुम्हारा नाहीं।।
अजर–अमर तुम हो अविनाशी।
काटो जन की लख चौरासी।।
तप कठोर है रोज तुम्हारा।
को जन जाने पार अपारा।।
योगी लखै तुम्हारी माया।

परम ब्रह्म से ध्यान लगाया।।

ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे।

अष्ट सिद्धि–नव निधि घर पावे।।

शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा।

पापी अधम दुष्ट को तारा।।

अगम अगोचर निर्भय नाथा।

योगी तपस्वी नवावै माथा।।

शंकर रूप अवतार तुम्हारा।

गोपीचन्द–भरतरी तारा।।

सुन लिज्यो गुरु अर्ज हमारी।

कृपा–सिन्धु योगी ब्रह्मचारी।।

पूर्ण आश दास की कीजे।

सेवक जान ज्ञान को दीजे।

पतीत पावन अधम अधारा।

तिन के हित अवतार तुम्हारा।।

अलख निरंजन नाम तुम्हारा।

अगम पंथ जिन योग प्रचारा।।

जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।

सेवा करै सिद्ध चौरासी।।

सदा करो भक्तन कल्याण।

निज स्वरूप पावे निर्वाण।।

जो नित पढ़े गोराक्ष चालीसा।

होय सिद्धि योगी जगदीशा।।

बरह पाठ पढ़े नित जोही।

मनोकामना पूर्ण होही।।

धूप–दीप से रोट चढ़ावे।

हाथ जोड़ कर ध्यान लगावे।।

अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार।

कानन कुंडल–सिर जटा, अंग विभूति अपार।।

सिद्ध पुरूष योगेश्वर, दो मुझको उपदेश।।
हर समय सेवा करू, सुबह–शाम आदेश।।
सने–सुनावे प्रेमवश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरक्षनाथ।।

## अमृत–प्रार्थनाष्टक

व्याधि–टारण तप्त जारण, काम मारण रक्षमाम् ,
योग–धारी न्यायकारी, निर्विकारी पाहिमाम्।
भेद–भन्जन, भक्त रन्जन, सत्य सुख के धाम हैं,
ख्यात अमृत नाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम है।।१।।

पापहारी मोक्षकारी, सत्यधारी अति सुखी,
श्रेष्ठ–ज्ञानी निरभिमानी, भेद पाते गुरुमुखी।
सत्य–शिक्षा योग–दीक्षा, भक्त के विश्राम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।२।।

ब्रह्मचारी दम्भहारी, मोहमारी भय–हरण,
तत्व–ज्ञाता बुद्धि–दाता, नमो हे अशरण–शरण।
चक्र–भेदन भ्रान्ति–छेदन, दर्श तव अभिराम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।३।।

भक्त–रक्षक दुःख भक्षक, सुषम्ना में शान्त हैं,
तुरीयवासी भ्रम–विनासी, सर्वथा निभ्रान्त हैं।
ब्रह्मरत हैं, ज्ञान पथ हैं, दयामत अविराम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।४।।

अमिट सत्ता अटल वाणी, आप तन्मय आप में,
नहीं कृत्रिम योग जप, तप, लीन अजपा जाप में।
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।५।।

ब्रह्मवेता उर्ध्वरेता, पक्षपात ने नेक हैं,
ध्यान भौतक देह का नहीं सत्य सन्तत टेक हैं।

स्वर्ग–नरक विचार नहीं, अपवर्ग जिनका धाम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।६।।

शरण आया, तत्व पाया, भेद अपना जानिया,
खेद भव का हट गया, उपदेश जिसने मानिया।
अशरण शरण, कारण–करण, भव–भय हरण निष्काम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।७।।

सन्त ध्यावे मुक्ति पावे, भक्त अन–धन पावते।
दुःख दुखिया के हरो, 'शंकर' विमल यश गावते।
श्री चरण सुन्दर मनोहर, सकल सुख के धाम हैं,
ख्यात अमृतनाथजी तोहि बारम्बार प्रणाम हैं।।८।।

**ऊँ शिव गोरक्ष**

## श्री श्रद्धा चालीसा

जय–जय सतगुरुदेव दयाला।
भक्तन हित धरि देह कृपाला।।
सुदि आषाढ़ दूज बुधवारा।
शुभ जगनाथ दिवस अवतारा।।
जोर कंवर माता के जाये।
माथे टिका लाल लगाये।।
मंगल गीत गाँव में गाये।
दिव्य स्वरूप सभी को भाये।।
शिशु चारणों में करे प्रणामा।
धर "नारायण" सुन्दर नामा।।
देख पिताश्री वचन सुनाये।
बाल–रूप मम् गुरुजी आये।।
पितृ वचन सब सत्य सयाना।
गुरु लीला देखे बिन जाना।।
बारह वर्ष शिक्षा गोपालन।
मात–पितु सेव–आज्ञापालन।।
बारह वर्ष गीता रामायण।
भजन, कीर्तन मन्दिर परायण।।
बारह वर्ष खेत में तपिया।
योग साधना शिव शिव जपिया।।
बरह वर्ष रमन्ते रामा।
साधु–सेवा अरु तीर्थ–धामा।।
कामिनि कंचन जन्महि त्यागी
गृरु जिज्ञासू पूर्ण वैरागी।।

सतगुरु अमृतनाथजी भाये।
शरणे ज्योतिनाथजी आये।।
नवांनाथजी वचन सुनाये।
भेष गुरु शुभनाथजी पाये।।
नाथ पंथ में दीक्षा पाई।
श्रद्धानाथजी नाम धराई।।
कानन कुण्डल भगवां भेषा।
कण्ठे नाद जनेउ सुवेषा।।
कन्धे झोली पगां उभाणा।
कर कमण्डल घोटा सुहाना।।
मर्यादा पुरुषोतम रामा।
जपत रहे शिव गोरक्ष नामा।।
नशा–पता कुलक्षण छुड़ाये।
सद्मार्ग उपदेश सुनाये।।
निर्मल प्रेमी भक्त बनाये।
सुसंस्कार भक्तों ने पाये।।
सतसेवा का अलख जगाया।
भेद मिटा गुरु लक्ष्य बताया।।
निश्छल सरल सहज मधुवाणी।
आत्मज्ञान गुरुत्तत्व विज्ञानी।।
शुद्ध प्रेम की गंग बहाई।
गुरु महिमा भक्तों ने गाई।।
अमर–धुन गुरु विनती सिखाई।
भक्ति लहर गुरुवर ने लाई।।
सतगुरु ने आदेश दिया जब।
नव आश्रम निर्माण किया तब।।
सुन्दर आश्रम सहज बनाई।
त्याग वैराग्य सत्य कमाई।।
श्रद्धा सतगुरु शरण विधाता।

अगम अगोचर सब मन भाता।।

शांति प्रेम आनन्द प्रदाता।

सुखकर्ता शरणागत त्राता।।

भक्तों के सब कष्ट मिटावें।

हरदम उनका साथ निभावें।।

शरणागत को ह्रदय लगावें।

अभय वर दे निर्भय बनावें।।

श्रावण शुक्ला छठ बुधवारा।

ब्रह्म मुर्हूत मुख तेजस् भारा।।

परमानन्द स्वरूप समाना।

अखंड समाधि पद निर्वाणा।।

श्रद्धा सतगुरु धाम सिधाये।

नाथ निरंजन तत्व समाये।।

अन्तिम दर्शन करने धाये।

लाखों लोग उमड़ कर आये।।

प्रेम विहल नैना जल डारें।

जय–जय सतगुरु देव पुकारें।।

नाथ निरंजन घट घट वासी।

भव दुःख भंजन हे अविनाशी।।

म्हारे घट में आप विराजो।

सच्चिदानन्द स्वरुपहि साजो।।

श्रद्धा मन्दिर शीश नवावे।

सफल मनोरथ सम्पति पावे।।

सत्गुरु नाथा परम दयाला।

शरण पड़ा मेटो भव जाला।।

हे सत्गुरु तव चरण नमामी।

कृपा करो हे अन्तर–यामी।।

आर्तिहरण सुखकरण शुभ, भक्ति मुक्ति दातार।

करो अनुग्रह दीन लखि, अपनो विरद् विचार।।
पलक–पलक आशा भर्यो, रह्यो सुबाट निहार।
ढरौ तुन्त स्वभाव वश, नेकु न करो अबार।।
सत्गुरु श्रद्धानाथजी, मेरी सुनो पुकार।
हाथ जोड़ चरणन परूं, भव से लेहु उबार।।

## श्री गुरु वंदना

जय जय सत्गुरु नाथ तुमको कोटि कोटि प्रणाम है।
अज अविनाशाी सब घटवासी, भक्त के विश्राम है।
अनघड़ अवधूत अलख निरंजन, तेरा ही प्रभु नाम है।।
जय जय सतगुरु नाथ तुमको कोटि कोटि प्रणाम है।
अमृत ज्योति परमानन्द, सकल सिद्ध पूर्ण काम है।
पूर्ण योग योग अखण्ड समाधि, सब घट व्यापक राम है।।
जय जय सतगुरु नाथ तुमको कोटि कोटि प्रणाम है।
कानन कुंडल झलकत, शिवनाद शब्द निज धाम है।
शुभ मंगल कारण तारण, सुख सम्पति आठों याम है।।
जय जय सतगुरु नाथ तुमको कोटि कोटि प्रणाम है।
ज्ञान ध्यान निज तत्व शक्ति दो, सत्य रूप अभिराम है।
तिमिर हरो विमल प्रकाश करो, 'श्रद्धा' के गुरु राम हैं।
जय जय सतगुरु नाथ तुमको कोटि कोटि प्रणाम है।

## अमर धुन

अज अविनाशी परमम् धाम्।

नाथ नारायण रमते राम।।

शिव–गोरक्ष धुन

ऊँ शिव–गोरक्ष, जय शिव–गोरक्ष!

ऊँ शिव–गोरक्ष, जय शिव–गोरक्ष!

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## श्री श्रद्धा स्तोत्रम

`

।। श्री सद्गुरुदेवाय नमः।।

ऊँ नमः सद्गुरु देवाय सच्चिदानन्द मूर्तये।

निष्प्रंपंचाय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे।।१।।

श्रद्धानाथं गुरु शिष्य संसार भीति हारिणम्।

भक्तार्थ धृत देहं सत् चिदात्मानं नमाम्यहम्।।२।।

ऊँकार स्वरूप सद्गुरु देव श्री बाबाजी महाराज को नमःस्कार है, जिनका स्वरूप सत्–चित आनन्दमय है, जो संसार के प्रपंचों से रहित हैं, शान्त स्वरूप हैं, जो आलम्बन रहित हैं, जो तेजो मूर्ति हैं, ऐसे सत्गुरु श्री नाथजी महाराज को नमःस्कार है। शिष्य के भव–दुःख हरण करने वाले, केवल भक्तों के कारण ही सगुण देहदारी, सत्–चित् आत्म स्वरूप गुरुदेव श्री श्रद्धानाथजी महाराज को नमःस्कार करता हूँ।।१,२।।

श्यामं लालट लितकं कर्ण–मुद्रा सुशोभितम्।

दण्डकमण्डलु धरं काषायांशुक धारिणम्।।३।।

प्रेमानन्दस्य दातारं शान्ति सन्मार्ग शिक्षकम्।

शिव गोरक्षयोः रूपं सद्गुरु तं नमाम्यहम्।।४।।

जिनके ललाट में तिलक है, हाथ में कमण्डल और घोटा लिये हुए हैं, जिन्होंने भगवां वस्त्र धारण किये हुए हैं। जो शान्ति, प्रेम और आनन्द प्रदान करते हैं, सन्मार्ग की शीक्षा देते हैं, जो शिव–गोरक्ष के रूप हैं, ऐसे सत्गुरु देव श्री श्रद्धानाथजी माराज का मैं नमःस्कार करता हूँ।।३,४।।

'रमते राम' चैतन्यं मर्यादा पुरुषोत्तमम्।

सद् व्यवहार संयुक्तं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।५।।

शान्तिरूपं चिदानन्दं निश्चितं भव तारकं।

साक्षिभूतं च सद्रूपं सदगुरुं प्रणमाम्यहम्।।६।।

जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री नाथजी महाराज सर्वत्र चैतन्य रूप में व्याप्त हैं, 'रमते राम' हैं, जो सत्य, शुद्ध मानवतापूर्ण व्यवहार में कुशल हैं, उन श्री श्रद्धानाथजी महाराज को नमस्कार करता हूँ। जो चिदानन्द में निमग्न, शान्ति स्वरूप हैं, जो निश्चत ही शिष्यों को भवसागर से पार उतारने वाले हैं, जो सत्तरूप में सबके साक्षी हैं, उन सतगुरु देव श्री श्रद्धानाथजी महाराज को प्रणाम करता हूँ।।५,६।।

वैराग्य–त्याग सम्पन्नं शरणागत–वत्सलम्।

दिव्य रूपं शुचि–स्नेहं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।७।।

निश्छलां सहजां वाचं दधानं ब्रह्म सम्मिताम् ।

आत्म भावं विदेहं तं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्।।८।।

जो वैराग्य और त्याग की साक्षात मूर्ति हैं, जो शरणागत की रक्षा व पालन करते हैं, जो शुद्ध प्रेम की दिव्य–मूर्ति हैं, उन श्री श्रद्धानाथजी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जो वेद (ब्रह्म) सम्मत निश्छल, सरल, सहज वाणी को धारण किये हुए है और जो सदैव आत्म–भाव में संस्थित हो देहातीत् हैं, उन सत्गुरु देव श्री नाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।७,८।।

चैतन्य दत्तचितं तं शून्ययुक्तं मनोयुतम्।

निर्विकल्पं समाधिस्थम् श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।९।।

तुर्यातीतं। निराकारं निरपेक्षं निरंजनम्।

निगुर्णं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्।।१०।।

जिसका मन शून्य में और चित चेतन में स्थिर है, जो निर्विकल्प सहज समाधि में स्थित हैं, उन गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनका निराकार, निरंजन स्वरुप है, जो निरपेक्ष हैं, जो तुरियातीत हैं अर्थात जागृत, स्वप्न और सुसुप्ति अवस्थाओं से परे, उनके प्रकाशक और साक्षी हैं, जो सत् रज और तम तीनों गुणों से परे परम आनन्द–स्वरूप हैं, उन सत्गुरु देव को मैं प्रणाम करता हूँ।।९,१०।।

निर्वैरं निर्भयं चैव निर्भावं सत्–परायणम्।

निश्शकं निश्चयं चैव श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।। ११।।

अमरत्वं लयस्तत्वं शून्याशून्यं परं पदम्।

अमस्कं तथाद्वैतं सद्गुरुं तं नमाम्यहम्।।१२।।

जो निर्भाव, निर्वैर, निर्भय, निश्चय और निशंक हैं, उन सत्य परायण, नररूप में नारायण श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जो अमरत्व, लय, तत्व, शून्याशून्य, परमपद, अमनस्क तथा अद्वैत अवस्था को प्राप्त हैं, उन सत्गुरु महाराज को को नमस्कार करता हूँ।।११,१२।।

सर्वपूज्यं सदापूर्णं अखण्डानन्द विग्रहम्।

स्वप्रकाशं चिदानन्दं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।13।।

निर्लिप्तं च निराकाक्षं सर्वदोष विवर्जितम्।

निरालम्बं निरातंकं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्।१४।।

सभी जनों के पूज्य, सर्वदा पूर्ण स्वरूप, अखण्ड आनन्द जिनका शरीर है, ऐसे स्वयं प्रकाशित चिदानन्द स्वरूप सत्गुरु श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जो निर्लिप्त हैं, जो इच्छा रहित हैं, सर्वगुण दोषों से परे, आलम्बन रहित, समस्त दुःखों से मुक्त हैं उन श्री सत्गुरु महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ।।।१३,१४।।

निर्ममं निरहंकारं समलोष्टाश्मकांचनम्।
समदुःखसुखं धीरं श्रद्धानाथं नामम्यहम्।।१५।।
द्वेष्यो नास्ति प्रियो नास्ति यस्यनास्ति शुभाशुभम्।
भेदविज्ञानविहिन तं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्।।१६।।

जिनकी किसी भी पदार्थ पर ममता नहीं है, जो अहंकार रहित हैं, जिनकी दृष्टि में पत्थर, लोहा समान हैं, सुख–दुःख के द्वंद्व में समतायुक्त, अत्यन्त धैर्य वाले श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनको किसी से द्वेष नहीं है और प्रिति या मोह भी नहीं, जो द्वैत ज्ञान से रहित हैं, उन परम गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।१५,१६।।

नाहं देहो न मे देहो जीवो नाहमहं शिवः।
एवं विज्ञाय सन्तुष्टं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।१७।।
अविनाशिनमात्मनं ह्येकं विज्ञाय तत्वतः।
वीतरागभयक्रोधं सद्गुरुं तं नमाम्यहम्।।१८।।

मैं देह नहीं हूँ, देह मेरी नहीं है, मैं जीव भी नहीं हूँ, मैं तो शिव स्वरूप हूँ, ऐसा जानकर जो सदा सन्तुष्ट है ऐसे भगवान श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। एक अविनाशी आत्मा को जिन्होंने तत्व रूप में जान लिया है, जो राग द्वेष, भय और क्रोध से रहित हैं, उन सत्गुरु देव श्री नाथजी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।१७,१८।।

समस्त कल्पना मात्रं ह्यात्मा मुक्तः सनातनः।
इति विज्ञाय संतृप्तं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।१९।।
ज्ञानग्निदग्धकर्माणं काम सकंल्पवर्जितम्।
हेयोपादेयहीनं तं सद्गुरुं प्रण्माम्यहम्।।२०।।

अन्य जो कुछ भी है, वह कल्पना मात्र है, आत्मा तो सर्वदा मुक्त और सनातन ही है, ऐसा जानकर जो तृप्त है, ऐसे श्री गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। ज्ञान रूपी अग्नि

से जिन्होंने सब कर्मों को भस्म का दिया है, कामना और संकल्प से रहित हैं, जिनके लिए कोई पदार्थ ताज्य भी नहीं एवं स्वीकार करने योग्य भी नहीं, ऐसे सत्गुरु देव श्री नाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।१६,२०।।

नैव निन्दा प्रशंसाभ्यां यस्य विक्रयतें मनः।

आत्मारामं महात्मनं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।२१।।

नित्यं जाग्रदवस्थायां स्वप्नवद्योऽवतिष्ठते।

निश्चिन्तं चिन्मयात्मानं सद्गुरुं तं नमाम्यहम्।।२२।।

किसी भी प्रकार की निन्दा स्तुति से जिनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता, अपने आत्मा राम में मस्त महान् श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जो सदैव जाग्रत अवस्था में भी स्वप्न की तरह रहते हैं, किसी भी विषय के चिन्तन से मुक्त, चिन्मय स्वरूप श्री गुरुदेव श्री नाथजी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।२१,२२।।

यो ही दर्शन मात्रेण पूर्णकामं करोति वै।

पावनं जंगमं तीर्थं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।२३।।

सर्वमंगलकर्तारं कामधुक्कल्पपादपम्।

चिन्तामणि समं देवं सद्गुरुं तं नमाम्यहम्।।२४।।

जिनके दर्शन मात्र से ही सकल मनोरथ पूर्ण होते हैं, परम पवित्र चलते फिरते तीर्थ स्वरूप श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। जो सब तरह से मंगल करने वाले हैं, जो साक्षात कामधेनु हैं कल्पवृक्ष एवं चिन्तामणि हैं, उन सत्गुरु देव श्री नाथ जी महाराज को में नमस्कार करता हूँ।।२३,२४।।

योगपूर्णं तपोमूर्ति प्रेमपूर्णं सुदर्शनम्।

ज्ञानपूर्णं कृपामूर्ति श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।२५।।

निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निर्मलं परमामृतम्।

भक्तह्रन्निवसन्तं तं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्।।२६।।

सभी योगों से पूर्ण, साक्षात् तप की मूर्ति, प्रेममय, जिनका दर्शन आनन्ददायक है, ऐसे ज्ञान से पूर्ण, साक्षात कृपा के अवतार सत्गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। कला रतिह, क्रिया रहित, शान्त, निर्मल, परम अमृत रूप, भक्तों के ह्रदय में निवास करने वाले श्री सत्गुरु देव को मैं नमस्कार करता हूँ।।२५,२६।।

तापत्रयापहतरिं भक्ति–मुक्ति–प्रदं प्रभुम।

शिवयोगसमायुक्तं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।२७।।

अपरोक्षं परं तत्वं यस्य योगसमाधिना।

सदानन्दयुतं दिव्यं गुरुं तं प्रणमाम्यहम्।।२८।।

दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों तापों को हरने वाले, भक्ति मुक्ति प्रदान करने वाले, शिवयोग में सिद्धहस्त श्री नाथजी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। परम तत्व को जिन्होंने योग समाधि द्वारा साक्षात कर लिया है, जो नित्य आनन्द के सागर हैं उन दिव्य पुरुष श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ।।२७,२८।।

सर्वसौख्यकरं देवं भवबाधाहरं गुरुम्

दिव्य ज्योतिप्रदं सन्तं श्रद्धानाथं नमाम्यहम्।।२९।।

ऊँ हरयेऽमृतरूपाय श्रद्धानाथय विदमहे।

महाराजाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात।।३०।।

सभी सुखों को देने वाले, जन्म–मरण के दुःखों से मुक्ति प्रदान करने वाले और दिव्य ज्ञान स्वरूप प्रकाश के दाता श्री श्रद्धानाथ जी महाराज को मैं नमस्कार करता हूँ। अज्ञान का हरण करने वाले, एक ऊँकार अमृत स्वरूप श्री नाथ जी महाराज को हम जानें, श्री श्रद्धानाथ जी महाराज का हम ध्यान करें जिससे वे सत्गुरुदेव हमें आगे प्रेरण देते रहे।।२९,३०।।

ऊँ नमो भगवते तुभ्यं सच्चिदानन्द मूर्तये।

श्रद्धानाथाय धीराय महाराजाय ते नमः।।३१।।

श्री गुरुः! सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थितः।

नमस्तुभ्यं प्रसीद त्वं प्राणेश्वर नमोऽस्तुते।।३२।।

ऊँकार स्वरूप भगवान सत्–चित आनन्द की साक्षात्मूर्ति श्री श्रद्धानाथ जी महाराजधिराज आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे गुरुदेव आप ही समस्त प्राणियों में श्रद्धा रूप में व्याप्त हैं। हे मेरे प्राण–नाथ आप मुझ पर प्रसन्न होकर कृपा करें, आपको मेरा नमस्कार है, कोटि–कोटि नमस्कार है।।३१,३२।।

इदं स्तोत्रमं परं पूतं भुक्ति मुक्ति प्रदाकयम्।

भवव्याधिविनाशार्थं श्रद्धात्मनाजपेत्सदा।।

अनन्तफलमाप्नोति य स्तोत्रं नियतं पठेत्।

स याति गुरुसारूप्यं ध्रुवं पदं परं लभेत्।।

यह श्रद्धा स्तोत्र परम पवित्र है, भुक्ति मुक्ति प्रदान करने वाला है। भव व्याधि विनाश हेतु श्रद्धा भावना से इसका हमेशा जप करना चाहिए। जो इस स्तोत्र का नित्य नियम से जप करता है उसे

अनन्त फलों की प्राप्ति होती है और सत्गुरुदेव श्री श्रद्धानाथ जी महाराज का सारूप्य लाभ एवं निश्चित ही परम पद की प्राप्ति होती है।।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## ऊँ अलख निरंज स्तुति

ऊँ अलख निरंजन अविनाशी पूर्ण परमात्मा तूं।
ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश शेष शारद नारायण तूं।।
नाथ निराकार शुद्ध चेतन व्यापक ब्रह्म साक्षी तूं।
सुरनर मुनि जन गुरु देव योगी सिद्ध महात्मा तूं।।
राम कृष्ण तओ रहीम ईसा गोड ईश्वर अद्वैत तूं।
जल वायु आकाश पृथ्वी तत्व तेज शशि भानू तूं।।
विश्व जीव जगत सत्य शक्ति शिव श्वांस आत्मा तूं।
कर विश्वास है प्रेम का प्रकाश श्री श्रद्धानाथ जी महाराज रमते राम तूं।।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय!

## (ग) शाम की प्रार्थना का कार्यक्रमः–

## श्री गुरु गोरक्षनाथजी की प्रार्थना

ऊँ जय गोरक्ष देवा, श्री स्वमी जय गोरक्ष देवा।
सुर–नर मुनिजन घ्यावे, संत करत सेवा।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी योग युक्ति कर जानत–मानत ब्रह्मज्ञानी।
सिद्ध शिरोमणि राजत गोरक्ष गुण खानी।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी ज्ञान–ध्यान के धारी सबके हितकारी
गो इन्द्रियन के स्वामी राखत सुध जारी।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी रमते राम सकल जग मांही छाया है नाहीं।
घट– घट गोरक्ष व्यापक सो लक्ष घट मांही।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी भस्मी लसत शरीरा रजनी है संगी।
योग विचारक जानत योगी बहु रंगी।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी कंठ विराजत सींगी सेली जतमत सुखमेली।
भगवां कन्था सोहत ज्ञान रतन थेली।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी कानन कुण्डल राजत साजत रवि चंदा।
बाजत अनहद बाजा भागत दुःख द्वन्दा।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी निद्रा मारो काल संहारो संकट के बैरी।
करो कृपा सन्तन पर, शरणागत थारी।।ऊँ जय।।
ऊँ गुरुजी ऐसी गोरक्ष आरती निश दिन जो गावै।
वर्णै राजा रामचन्द्र योगी सुख–सम्पति पावै।।ऊँ जय।।

## श्री सत्गुरुदेव की प्रार्थना

ऊँ जय सतगुरु दाता, ऊँ जय सतगुरु दाता।
त्रिगुण रहित निर्वाणी जग में विख्याता।।ऊँ जय।।
चेतन रूप निरंजन आप पिता–माता।
भक्तन के हितकारी सदा सुखी नाता।।ऊँ जय।।
आदि सनातन देवा अगम ज्ञान–ज्ञाता।
दुःख हरता–सुख–कर्ता सत्य रूप भाता।।ऊँ जय।।
मन के रोग मिटावन पावन पथ जाता।
शील–क्षमा गुण–आगर शरणागत त्राता।।ऊँ जय।।
शान्ति रूप शरीरा नाशक भव–पीरा।
सुख सागर के नीरा भक्तन के नाता।।ऊँ जय।।
आदि पुरुष अविनाशी संतन–घट–वासी।
भव सागर दुख नाशी सतसुख के दाता।।ऊँ जय।।
अगम अगोचर स्वामी आप अन्तर्यामी।
अमर लोक के धामी संतन मन राता।।ऊँ जय।।
सत्य रूप भयहारी कामादिक मारी।
भक्तन के अघ–हारी पार नहीं पाता।।ऊँ जय।।
श्री अमृतनाथजी दयाला हरिए भव–जाला।
शंकर कर प्रतिपाला चरणन बलि जाता।।ऊँ जय।।

### श्री श्रद्धा प्रार्थनाष्टक

मर्यादा पुरुषोतम गुरु, गुणातीत अविनाशी।
सर्व समर्थ, परम दयालु, ऊँ शिव गोरक्ष घटवासी।
सच्चे त्यागी, अजपा रागी, सत्य सिद्ध, निष्काम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
निर्विकारी, पापहारी, सर्वहितेषि निर्मानी।
श्रेष्ठ–ज्ञानी, अलखध्यानी, अजर, अनुपम, कल्याणी।
दम्भहारी, नेहकारी, भक्त के विश्राम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
ज्ञ्म–ज्ञानी, मोक्ष दानी, त्याग तपस्या साधना।

मस्त–मौजी, तत्व खोजी, सत्य चित अराधना।
अभयदानी, सिद्धनामी नाथ रमतेराम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
मिताहारी, ब्रह्मचारी, ज्ञान सिद्ध, परमार्थी।
तत्व ज्ञाता, बुद्धिदाता, सदगुणों के सारथी।
तप्त भंजन, भक्त रंजन, सत्य सुख के ठाम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
आत्म स्वामी, सत्यनामी, अनहद्–धुन, श्वेत–श्याम।
शुभामृत ज्योति स्वरुपा, नाथ गुरु पूरण काम।
दुखहर्ता, अभयकर्ता, निर्बल के बलराम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
मन्दहासी, मधुरभाषी, लीन ब्रह्मानन्द में।
शरण आवे तृप्ति पावे, शान्ति प्रेमानन्द में।
शरणागत की लाज राखो, भक्ति दो अविराम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
प्रसन्न मुद्रा जीती निद्रा, सुप्ताही जाग्रत सी।
सदा सर्वज्ञ, सर्व मर्मज्ञ, जानतही रखि गुप्त सौ
अवतारी दातारी गुरु, तत्व निरंजन राम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।
पपमोपचन, ज्ञानलोचन, अलख, अमल नाथ सत्ता।
भक्त आवे, भक्ति पावे, जिज्ञासु हो बुद्धिमत्ता।
तुरीयवासी तम–विनाशी, आप सांवलश्याम है।
सतगुरु श्रद्धानाथजी, तव चरणन में प्रणाम है।

**ध्यान एवं जप**

कुछ समय मौन रह कर इष्टदेव का ध्यान करें। अपने गुरुदेव के बताये हुए मंत्र का जप करें।

ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव

ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव

**गुरु–महिमा**

ओ3म्कारा जय जय कारा सब संतन मिल कर्या विचारा गुरु की महिमा अपरंपारा सो गावें
सनकादिक सारा गुरु विश्वंभर परमं धाम गुरु बिन कबहुँ न हो कल्याण गुरु महाराजन के राजा
गुरु देवन के देव। गुरु अलख पुरुष गुरु अविनाशी
गुरु कामधेनु गुरु कल्पवृक्ष
गुरु चिन्तामणि
गुरु गंगा गुरु गोदावरी
गुरु पलहर केशव मुरली माधुरी
गुरु कंचन–पारस होय।
गुरु कृपा से भया अविनाशी
जां की कट गई यम की फांसी
गुरु की सेवा हर आपही कीन्हीं
जा रक्षा झींवर की कीन्हीं
ले बताया महि का सींग उलट सींग में दर्शनहुया
द्रवाक बिन माख माटला भर्या।
शिव शंकर कहे हे पार्वती!
गुरु का द्रोही सो हर का द्रोही जाँका मुख देखो मत कोई
मुख देख्यां मुरली कहे गुरुवां चढ़ै कलंक
दूरन्दूर विडारिये ले हरि गुरु की शरण
हरि रूठे तो गुरु बचाये गुरु रूठ्यां ठोर न पावे।
इतनी गुरु महिमा पढ़–कथ पुनि गावे
तो भव संकट नहीं आवे
जे संकट आवे तो हरि का दास कहावे।
इतनी गुरु महिमा सम्पूर्ण सही।
गुरु गोरक्षनाथजी महाराज आपों आप कही।
ध्यान मुलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरु–पद्म
मत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरु कृपा।
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरुदेव की (जिन) गोविन्द दिया बताय।

**गुरु–शरणम्**

हे नाथ! आपकी प्रेरणा से जो कर पाया हूं वह आपको समर्पण है।
हे प्रभो! भूल से अज्ञान से जो गलती हुई है उसके लिए क्षमा कीजिए।
हे भगवन्! सदा सद् बुद्धि दीजिए ताकि मैं सन्मार्ग पर अडिग रह सकूँ।
हे गुरुदेव! अज्ञान और अन्धकार से उठाकर प्रकाश की ओर ले चलो
क्योंकि मैं आपकी शरण में हूँ।

**सत्गुरु–धुन**

सत्गुरु साक्षी सर्वाधार, अलख निरंजन अपरंपार।
सत्गुरु साक्षी सर्वाधार, अलख निरंजन अपरंपार।

ऊँ शिव–धुन

ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव ऊँ शिव।
ऊँ शिव ऊँ शिव टेरेजा।
मन का मणिया–श्वास की डोरी।
ध्यान लगा कर फेरेजा।।

श्रीनाथजी महाराज सबको सद्बुद्धि दें।
भूल–चूक माफ करें,
सदा आनन्द मंगल रखें।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

# श्री अमृत–चालीसा

जय जय अमृतनाथजी दयाला।
गांव पिलानी प्रकटि कृपाला।।
चैत्र सुदी एकम् अवतारा।
ब्रह्म म्हुरत हुआ उजियारा।।
मुख दन्तावली गौर शरीरा।
बाल रूप धरि गुरु गम्भिरा।।
दिव्य पुरुष जोशी बतलाया।
जन्म पत्रि पढ़ अति हरसाया।।
गीत सुमंगल घर घर गाया।
नाम शिशू "यशराम" धराया।।
पंच दिवश दुध नहीं पीया।
ब्रह्म ज्ञान चेतन कु दीया।।
बरस तीन कोस तेविस गये।
सुलीला देख सब चकित भये।।
बाल चरित बहु जनहित कीन्हे।
रह निर्भय निर्द्वन्द्व हिये में।।
रहे अखंड बाल ब्रह्मचारी।
काम क्रोध षड्रिपु संहारी।।
चम्पानाथ शरण गुरु पासा।
वर्ष छतीस लीया सन्यासा।।
अमृतनाथजी नाम धराया।
नाथ पंथ ह्रदय मन भाया।।
चीरा आपहि हाथ चढ़ाया।
प्रबल विराग अजब दर्शाया।।
नाथ हीरा को बल दिखाया।
हिंगुलु सिंगी मुहरा खाया।।
शूरसिंह का कुष्ठ मिटाया।

मृत सुत तेज सिंह कु बचाया।।
संखिया चूरु मांहि चबाया।
काचा पारा सहज पचाया।।
बलवंत को स्वरुप दिखाया।
फंसा लोभ मे तबं दुःख पाया।।
जल शिवनाथ खेत बरसाया।
भक्त पंजाबी भव सु बचाया।।
बंशी भया नेत्र इक हीना।
अग्नि सु ताहि दृष्टि दीन्हा।।
पांगलनाथ कु दिये पग हाथा।
खारि कूप जल मीठा नाथा।।
दंड मनुज पीछे दौड़ाया।
जमालगटु शतवटी पचाया।।
नारायण गिरि साधु इक संगी।
माई दर्शन आज्ञा मंगी।।
हिंगलाज सिंह चढ़कर आई।
आप कृपा सु दर्शन पाई।।
अमृत तुम अवधूत विलक्षण।
भक्तन हित करि युग दो भ्रमण।।
भीषण प्रतिज्ञा आप सुनाई।
शयन करेंगे रमणा नाहीं।।
अक्षय कोष खुलेगा भाई।
जो मांगेगा सोही पाई।।
आश्रम बना फतेहपुर मांही।
हर्षित भक्तन अति सुख पाही।।
गोरखराम कोटिपति कीन्हा।
अति दुःख माधुसिंह का लीन्हा।।
ठाकरसी को सर्प डसा जब
छिन महि छूकर पीर हरि तब।।

श्री कान्त को तत्व दिखाया।
रहणी कहणी सुपथ बताया।।
सुख दुखियन, सुत बांझन दीन्हे।
लाखों रोगी स्वस्थ कीन्हे।।
नाथ ज्योति सिर तुमि हस्त धरा।
जीवन–मुक्त कृपा करि करा।।
शरद् पूर्णिमा तिथि बुधवारा।
अमृत अमृत मिले अपारा।।
अमृताश्रम सजग समाधी।
शीश नवावत विनशत व्याधी।।
नाथ तव लीला वरणि न जावे।
बुद्धि वाणी पार नहिं पावे।।
श्रद्धा भक्ति प्रेम प्रदायक।
सुख शान्ति सद्बुद्धि दायक।।
गुरुवर तव चरणन् बलिहारी।
सुनो कृपालु विनय हमारी।।
राग द्वेष हट जाय हमारे।
कर्म वचन मन शरण तुम्हारे।।
ज्ञान प्रकाशे अविद्या नाशे।
सदा रहो तुम आसे पासे।।
नाथ तुम्ही मेरे सत् स्वामी।
अगम अगोचर अन्तर यामी।।
जो नित पढ़ै अमृत चालीसा।
हुवै भव पार नहीं कछु संशा।।
आप विलक्षण ओलिया, पूर्ण पार ब्रह्म।
भक्तन कारण देह धरि, कौ दाता तुम सम।।
दुःखहरण सुखकरण तुम्ही, मेटन भव सन्ताप।
ममहृदय निवास करो, खुद शिव गोरक्ष आप।।
बाबा अमृतनाथ जी, सतगुरु दीनदयाल।

नित निजानन्द दीजिये, शरणागत प्रतिपाल।।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!

## अमृतनाथाष्टक

विलक्षण महा अन्धकारं विनाशी,
गुणा–तीत रूपं सुषूम्ना विलासी।
सदा सर्वदा भक्त मण्डल सुसेवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।
दयालु महा दीन के दुःख हारी
निरालम्ब हे निर्विकारी।
सदा सत्य शिक्षा हटाती कुटेवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।२।।
महा ब्रह्मचारी बड़े तत्व ज्ञाता,
अनुपम बली हो अभय दान दाता।
अनोखे सती हो, अपारं अभेवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।३।।
अचल समाधि नहीं को उपाधि,
सुधारे प्रमादी, हरो भक्त व्याधि।
महा शून्य बासी सगुण हो तथैवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।४।।
प्रभो गौर–वर्ण मनो व्याधि हरणं,
महा तेज धारी गहे भक्त शरणं।
न्यानाभिरामं दयालु सदैवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।५।।
प्रभो पूर्ण योगी सकल भाव ज्ञाता,
सदा भक्त त्राता सुभक्ति प्रदाता।
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ निष्पृह सदैवं,
नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।६।।
काषाय वस्त्र लसे कर्ण मुद्रा,
हते काम क्रोधा लियी जीत निद्रा।
किये मुक्त पापी उदासीन एवं,

नमो योगि राजं "अमृत नाथ" देवं।।७।।

कई भक्त तारे सदा कष्ट टारे,

दियी सत्य शिक्षा हरे दोष भारे।

भयंकर हरो पीर 'शंकर' सुसेवं,

नमो योगि राजं "अमृत नाथ जी" देवं।।८।।

## ऊँ अलख निरंज स्तुति

ऊँ अलख निरंजन अविनाशाी पूर्ण परामात्मा तू।
ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश शेष शारद नारायण तूं।।
नाथ निराकार शुद्ध चेतन व्यापक ब्रह्म साक्षी तूं।
सुरनर मुनि जनगुरु देव योगी सिद्ध महात्मा तूं।।
राम कृष्ण तओ रहीम ईसा गोड ईयवर अद्वैत तूं।
जल वायु आकाश पृथ्वी तत्व तेज शशि भानू तूं।।
विश्व जीव जगत सत्य शक्ति शिव श्वांस आत्मा तूं।
कर विश्वास है प्रेम का प्रकाश श्रद्धानाथ रमते राम तूं।।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!
ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय!
ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय! ऊँ नमः शिवाय

## भजन

(1)

पहली मैं देव गणेश मनाऊँ, सुमरूँ मात ज्वाला।
बाणी बोल अणभै का उपजै, हिरदै में होय उजियाला।।
गुरुजी म्हारा मतवाला.....जी.....
मतवाला गुरु मतवाला,
बै सत् अमरापुर वाला।
म्हारा मतवाला.....जी
इन्द्र घटा ले म्हारा सत्गुरु आया,
बरसत आया गुरु घनघोरा.....2
झिणी झिणी बुन्दा गुरां झड़ी लगादी,
भे दिया तन सारा।। गुरुजी
मतवाला.....जी.....
गुरां रे घट में ज्ञान बादली,
बरस रही चहुँ दिश धारा.....2
वचन–वचन इन्द्र ज्यों गरजै,
आठ पहर दिन सारा।। गुरुजी
म्हारा मतवाला.....जी
गुरां री महिमा अमी की सी बूंदां,
बोल गंगा का है धारा.....2
सुणियां रा पाप कटै भव–भव का
काया कंचन तन सारा। गुरुजी
म्हारा मतवाल.....जी.....
सोहंपुरी सुथान वासा,
श्वेत वर्ण रंग है बांरा.....2
शिखर किले पर ध्वजा फरूखे,
वहाँ रम रया गुरु म्हारा। गुरुजी
म्हारा मतवाला.....जी.....
अमृतनाथ जी मिल्या गुरु पूरा,
खोल्या भ्रम का अब ताला.....2

मगो महिमा गुरां सारी गावै,

गांव गुमानेवाला। गुरुजी

म्हारा मतवाला.....जी.....

..

**भजन** (2)

म्हानै गुरुसा मिलणै रो ठाडो चाव,

उम्मेदी म्हाने लाग रही।।....2

म्हारे उम्मेदी यों लगी ज्यों, निर्धनिया धन होय।.....2

बांझ पुत्र नै बिसरे जी,.....2,

मैं नहीं बिसरूँ तोय।। उम्मेदी

गुरु हमारा समद है रै, हम नदियन का नीर.....2

उल्टा नीर मिले समदरां.....2

कंचन भयो शरीर।। उम्मेदी

भव सागर के बीच में गुरुजी, नाव पड़ी मझधार.....1

गुरु हमारा खेवटिया है.....2

पल में उतारै परलै पार।। उम्मेदी.....

गुरु गूंगा गुरु बावला रै, गुरु देवन का देव.....2

गुरां सैं चेला मारका रै.....2

करैं गुरां सा री सेव।। उम्मेदी.....

हरि रूठै तो रूठण दयो, म्हारा सत्गुरु रूठो नायं.....2

सत्गुरु म्हारा समरथी है रै.....2

पकड़ मिलावे हरि सैं बांह।। उम्मेदी.....

धन धन हो गुरुदेव नै, म्हानै दीन्हा आत्म ज्ञान.....2

बनानाथ की बीनती है.....2

संत चढ़्या निवार्ण।। उम्मेदी.....

**भजन** (3)

हे नाथ दयालु दया करके,
एक बार पावणां आ जाना।...2
मैं सेवक करुणा करता हूँ,
इक बार दर्श प्रभु दे जाना।।टेर।।
मैं मूर्ख खल कामी ही सही, पर नाम आपका जानता हूँ।
मोहे सेवा भक्ति आये ना सही, पर आन आपकी मानता हूँ।।
एक बार चरण जो छुलूँ मैं, मेरा पाप भरम सब कट जावे।
इक बार नजर से देख लूँ मैं, मेरा माया तम सब हट जावै।।
मैं उजड़ गया हूँ बुगिया से, तेरे चरणों में गिरना चाहूँ।
ये झोंका हवा का तेज घणा, तेरा नाम उच्चार बचना चाहूँ।।
हे करुणामय श्री श्रद्धानाथजी, भक्त एक यों तड़फत है।
मोहे हाथ पकड़ कर राह दिखाओ, रामचन्द्र यों गावत है।

**भजन** (4)

म्हारे गुरुदेव घर आया ये, आनन्द भयो अपार।
आनन्द भयो अपार म्हारे आनन्द भयो अपार।।टेर।।
म्हारे गुरुदेव घर आया, म्हारे हिरदै में आनन्द छाया।
म्हारा कर्म भरम सब भाग्या ये, ऐसी लगी उभार।।१।।
म्हारै घर बादल गरनाया ये, बिजली की आंकस सवाया।
म्हारे दूधाँ मेहा बरसै ये, बरसै अमृत धार।।२।।
म्हारे आंगण मोती बरसै, म्हारो देख देख मन हरषै।
म्हारै होग्या मन का चाया ये, होग्या बेड़ा पार।।३।।
ये जीवाराम यों गावै, म्हारे गुरुदेव मन भावै।
खेवटिया बनकर आया ये, भव से कर दिया पार।।४।।

**भजन** (5)

हेली हँस हँस हरख मनाय, गुरुजी थांरे आया पावणा।।टेर।।

मैं देख्या सा मैं बताऊँ, बाकी मैं अनजान।

भगवां चादर सोवणी सी, मनरा रै पलकै जाणूँ चान।।१।।

आगै आगै चालैं नाथजी, सारा सेवक लार।

हल्की हल्की बून्द पड़ै रै, इन्द्र करे गुंजार।।२।।

गुरु जी थारै.....

कर उतावल बावली ये, शीतल जल ले हाथ।

दर्शन सागै चरण धोय जै, राजी घणां ही थारा नाथ।।३।।

काया महल गुरु आ पुग्या हेली, प्रेम दिवो ले जाय।

भक्ति खीर ले घाल कचोलै, अमर गुरु नै दे जिमाय।।१।।

गुरुजी थारै.....

सत्गुरु 'श्रद्धानाथजी' के चरणां में चित लगाय।

रामचन्द्र गुरु दया बड़ी है, बैठ आरती सागै गाय।।५।।

**भजन** (6)

भगवां चादर में नाथजी लागै सोवणां।

लागै सोवणां। नाथजी लागै सोवणां।।टेर।।

दूधां धोई दंत बतीसी, यों चमके ज्यों मोती जी।

कानन कुण्डल यों झलके ज्यों, चान्द सूरज की ज्योती जी।

बां का मन्द मन्द मुस्कावणां, म्हाने लागै सोवणां।।

भगवां.....

आसन लगाकर आप विराजो, सुन्दर शिव सा लागो जी।

गुरवां की थे गावो आरती, भक्तां नै कहो जागो जी।

बां का शिव शिव गांवणां, म्हाने लागै सोवणां।

प्रेम प्रसाद पतासा थांरा, मुट्ठी भर भर देना जी।

दुःख सुख की थे सुणता जाओ, बोलो मीठे बैणा जी।

थां का प्रेम निभावणां, म्हाने लागै सोवणां।

भगवां चादर.....

भोले प्रेमी भक्त  पुकारे, आप दौड़कर आओ जी।
पकवान छतीसों छोड़, बांकी, रूखी सूखी खाओ जी।
थांरा प्रेम निभावणां, म्हाने लागै सोवणां।
भगवां चादर.....
श्याम छबि श्री श्रद्धानाथजी की, मन में रही लुभाय जी।
बर्णत रामचन्द्र चरणों में, दर्शन दीज्यो आय जी।
भक्तां कै मन भावणां, म्हाने लागै सोवणां।
भगवां चादर.....

**भजन** (7)

लीन्हा भगवां भेष, बण्या जांका चेला रै,
लीन्हा भगवां भेष।।टेर।।
मेरे दाता चालै उभाणां,
लूखा सूखा ठण्डा खाणां।
भगवां चादर ओढ़ रमैं अल बेला रै।।
लीन्हा भगवां.....
गुरु प्रेम का पीया प्याला,
तन मन से बणग्या मतवाला।
शिव शिव जपतां जाप मिलया गुरु गेला रै।
लीन्हा भगवां.....
कामनी कांचन जन्म हि त्यागा,
लीछमी दौड़े गेल, छुया कोनी धेला रै।।
लीन्हा भगवां.....
'श्रद्धानाथजी' फकीर अनुरागी,
रामचन्द्र जां के चरणां में लागी।
श्री नाथ जी महाराज दिना जां नै हेला रै।।
लीन्हा भगवां.....

**भजन** (8)

सुआ क्यों बैठ्यो सूखी डाल, हरियाली नाथ कुंज में घणी।।

डाल पात सब सूख सीं रे।,

कोई न रहे तेरे साथ।.....2

तपै तावड़ो सिर पर तेरे.....2

बाज तकै रै दिन रात।।१।। हरियाली.....

उड़ चल सुआ सोच जे मत,

गेलो देऊँ बताय।.....2

ऊँचे टीले पर सुन्दर शिवाला,.....2

भगवां ध्वजा री फहराय।।२।। हरियाली.....

झर झर झरना प्रेम का रै,

हरदम झरता जायं।.....2

तूँ तेरो आलो बठे बणा जे.....2

मनड़ै में हरख मनाय।।३।। हरियाली.....

शीतल स्वभावी 'श्री श्रद्धानाथ जी',

परम दयालु नाथ।.....2

रामचन्द्र तेरो सुओ पल़ लो,.....2

सिर पर गुरवां रो हाथ।।४।। हरियाली.....

**भजन** (9)

कजली बन के मायं, तपै एक योगी रै

कजली बन के मायं।।टेर।।

अंग विभूति लगाये नाथा।

कानन कुण्डल भगवां कंथा।

मुख मण्डल चमके तेज,

रोशनी होगी रै।।१।। कजली.....

शिव गोरक्ष जां का नाम बताया,

जन्म मरण जां का कोई न पाया।

शिवजी रा अवतार, बड़ा हठ–योगी रै।। कजली.....

गोपी चन्द भरतरी सा चेला,
कजली बन का पाया गेला।
गोरक्ष–गुफा के मांय,
रोशनी होगी रै।।३।। कजली .....
श्रद्धानाथ जी सन्त सुजाना,
गुरु गोरक्ष जी का लीन्हा बाना।
रामचन्द्र तेरा नाथ,
अमर महा योगी रै।।४।। कजली.....

**भजन** (10)

श्रद्धा–प्रेम विश्वास भावना, आप जगाई गुरु कण कण में।
पकट हुए गुरुदेव दयानिधि, दिव्य धरा के आंगन मे।।टैर।।
जन समाज को प्रेम बढ़ायो, सद् शिक्षा सब नै दीन्ही।
लोगां में सदभाव जगायो, भेद मिटा कृपा कीन्ही।
आत्मज्ञानी निर अभिमानी, बा रह्या सब के तन मन में।।१।।
श्रद्धा–प्रेम.....
सत् पुरुषां की बांता कहता, इमरत सो गुरु बरसाता।
हर प्रश्न कोऊत्तर देता, मन की उलझण सुलझाता।
भुल्यां न गुरु राह बताता, सार बात है समझण में।।२।।
श्रद्धा–प्रेम.....
मन की बात लख्या करता, गुरु सब की अर्ज सुणा करता।
अन्तरयामी परम दयालु, याद करयां संकट हरता।
आज आप नै याद करैं गुरु, गांव गांव और घर–घर में।।
श्रद्धा–प्रेम.....
जगत बिलोकर सार काढ़ग्या, गुरवां को अनुभव सांचो।
बिन गुरु रहसी घ0ि अंधेरा, चाहे कितना ही पोथा बांचो।
बरसाती नदियां रो पाणी, कदे मिले न समदर में।
श्रद्धा–प्रेम.....
ऊँ शिव ऊँ शिव टेर लगाता, शिव–गोरक्ष धुन नित गाता।

जिज्ञासु नैं सरल भव सैं, योग साधना समझाता।
संसारी का उल्टा मार्ग, मत पड़ज्यो कोई उलझण में।
श्रद्धा–प्रेम.....
भगवां भेष थांरे अंग विराजै, कानन में कुण्डल सोवै।
सुख आसन में बैठ्या सतगुरु, ध्यान कर्‌यां दर्शन होवै।
भक्तां का सुख धाम शिव, प्रेरक हैं दिल दर्पण में।
श्रद्धा–प्रेम.....
लक्ष्मणगढ़ में नींव लगाई, अठै आप रो चित्त लाग्यो।
श्री नाथजी को आश्रम बणायो, तेजस्वी को तप जाग्यो।
नेम–धर्म को बाग लगायो, करी सुगंधी सुवर्ण में।।
श्रद्धा–प्रेम.....
'श्री श्रद्धानाथ जी' गुरु सुन्य में रमग्या, घट–घट में शिव वास।
सांवर सैन चरणां को चाकर, नित थानै अरदास करे।
शक्ति दो हिम्मत ना हारूँ, जीत चलूँ मन कै रण में।।
श्रद्धा–प्रेम.....

**भजन** (11)

सत्‌गुरु घट घट रा उजियारा, धन गुरु घट घट रा उजियारा।।
अमर बूंद सागर में मिलगी, जन्म मरण से न्यारा।।टेर।।
प्रगट हुए शिव रूप जगत में, सतगुरुदेव हमारा।
ज्ञान भक्ति सद्‌शिक्षा दीन्ही, कर कर प्रेम इशारा।।१।।
मात–पिता गुरु आप निरंजन, अलख–अखण्ड अपारा।
जन्म लियो भक्तां के कारण, बरस रह्‌या चहुँधारा।
जो कोई थांरै शरणै आयो, दीन्हा शब्द पियारा।
मन इच्छा गुरु पूर्ण कीन्ही, भव–दुःख मेटनहारा।।
जीव–शिव की कटी ऐकता, मार्‌या मन अहंकारा।
कोटि कोटि प्रणाम नाथ थानै, सत् अमरापुर वाला।।
जन्म जन्म की नाव पुराणी, पड़ी समद मझधारा।
अबकी बेर गुरु पार उतारो, हो रह्‌या दुखियारा।।

'श्री श्रद्धानाथजी' मिल्या गुरु पूरा, भवसागर तारणहारा।
सांवर सैन गुरांजी कै शरणै, अर्ज सुणो करतारा।।

**भजन** (12)

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी चरणों से, लगा लेना।।टेर।।
करुणानीधि नाम तेरा, करुणा दिखला जाओ।
सोये अभागों को हे नाथ जगा जाओ।
मेरी नाव भंवर डोले भव–पार लगा देना।।
गुरु देव.....
तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
मेरे तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माल जपूँ तेरी, नहीं नाथ भूला देना।।
गुरु देव.....
पापी हूँ या कपटी, जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
घरबार छोड़कर मैं, चरणों का चेरा हूँ।।
दुःख का मारा हूँ मैं, मेरे कष्ट मिटा देना।।
गुरु देव.....
मैं सबका सेवक हूँ, नहीं नाथ भुलाना मुझे।
तेरा भक्त पुजारी हूँ, तेरी शरण में लेना मुझे।
तेरे दर का भिखारी हूँ, भीख भक्ति की दे देना।।
गुरु देव.....

**भजन** (13)

मैं तो वांही संता को हूँ दास, जिन्होंने मन मार लिया।।टेर।।
मन मार्‌या तन वश कर्‌या जी, भई भरमना दूर।
बाहर तो कुछ दीखत नाहीं, अन्दर झलकत नूर।।
जिन्होने मन.....
आपा मार जगत में बैठ्या, नहीं किसी से काम।

उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं, संत कहो जी चाहे राम।।

जिन्होने मन.....

प्याला पीया प्रेम का जी, छोड़्या जग का मोह।

म्हानै सत्गुरु ऐसा मिल्या जी, सहजां ही मुक्ति होय।।

जिन्होने मन.....

नरसीला का सामर्थ स्वामी, दिया अमी रस पाय।

एक बुन्द सागर में मिलगी, कांई करै जी जमराय।

जिन्होने मन.....

**भजन** (14)

गुरवां को शरणों ले लो, थांरो जन्म मरण छुट जासी रै।।टेर।।

गुरु बिन कैसा ज्ञान, समझ गुरां स्यों आती रै।

छोड़ जगत की मोह माया, भजन करो दिन राती रै।।

गुरवां को शरणों.....

दिल दीपक तन का तेल, भाव–रूई री घाली बाती रै।

चित्त–चेतन जोया, श्वास सूरत जल रही बाती रै।।

गुरवां को शरणों.....

ब्रह्म जोत की हुई रोशनी, अलख पुरुष दरस्या बे जाती रै।

परमानन्द हुआ घट भीतर, जगमग ज्योत जगाती रै।।

गुरवां को शरणों.....

भोग छोड़ जोग में लागे, धन धन बांकी छाती रै।

'श्रद्धानाथजी' चलो गुरां के देश, अठे और नहीं कोई साथी रै।

गुरवां को शरणों.....

**भजन** (15)

भरोसै थांरे चालै जी, सतगुरु म्हारी नाव।।टेर।।

काम न आवे कुटुम्ब कबीलो, नहीं आवै परिवार।

आप बिन दूजा नहीं दीखै, जग में तारणहार।।

भरोसै थांरे.....

भवसागर ऊँडा घणा जी, तिरूँ न पाऊँ पार।
निगाह करूँ तो नजर आवे, भवसागर की धार।।
भरोसै थांरे.....
टूटी जहाज समद में गेरी, किन बिध उतरूँ पार।
काम–क्रोध मगरमच्छ डोले, खाबा न खड़्या तैयार।।
भरोसै थांरे.....
सत्संग रूपी नाव बणाल्यो, इस विध उतरो पार।
सुरत चाटड़ी ज्ञान बांसड़ा, खेवट सिरजन हार।।
भरोसै थांरे.....
कहत कबीर सुणो भाई साधो, मैं तो था मझधार।
रामानन्द मिल्यां गुरु पूरा, कर दिया बेड़ा पार।।

**भजन** (16)

मैं अर्ज करूँ थांनै, चरणा में राखज्यो म्हानै।
मैं प्रकट कहूँ या छाने, मेरी लाज शरम गुरु थानै।।टेर।।
मैं अर्ज करूँ.....
भवसागर भरिया भारा, मुझे सूझै नांही किनारा।
मैं डूब रह्यो मझधार, मोहे बांह पकड़ उबारा।।१।।
मैं अर्ज करूँ.....
मात–पिता सुत भ्राता, संग चले न साथा।
मेरा उनसे छुड़ायो नाता, आप चरण–शरण सुखदाता।।२।।
मैं अर्ज करूँ.....
जग में सन्त बड़े उपकारी, सब जीवों के हितकारी।।
मैं अर्ज करूँ.....
तन मन धन अर्पण सारा, चाहे शीश काट लो म्हारा।
जां ने दरिया कहे पुकारा, चरणां चाकर थारा।।
मैं अर्ज करूँ.....

स्मरणीयः–

जे साधक उपरोक्त श्री नाथजी महाराज की सुबह शाम की प्रार्थना तथा इष्टदेव का ध्यान और चिन्तन करते हैं, उनको आत्मानन्द और शान्ति मिलती है। जो प्रेमी भक्त–जन नित्य नियम से धूप, दीप, प्रार्थना और 'ऊँ शिव–गोरक्ष' नाम स्मरण करते हैं, उनके घर में आनन्द–मंगल रहता है।

सुबह–शाम की प्रार्थना का कार्यक्रम सम्पूर्ण।

ऊँ शान्ति! प्रेम!! आनन्द!!!